एक समुद्री कछुए की कथा

ताज़िमा शिंजी

Gaudi's Ocean

Tajima Shinji

Hindi Translation

Anshumala Gupta

मछलीघर (एक्वेरियम) प्यारा घर

गौडी, विशाल समुद्री कछुआ, जो मछलीघर के मुख्य ताल में रहता था, अपने बड़े से कवच में कांपा और निराशा से कराहने लगा। यद्यपि गौडी एक भीमकाय कछुआ था, फिर भी मछलीघर में उसकी कराहट किसी को सुनाई नहीं दी। गौडी की कराहट केवल उसके कवच के नीचे घर्घराई, और कुछ सफेद बुलबुलों के रूप में ताल की सतह पर फूटने लगी।

गौडी का शरीर देखने लायक था। उसके कवच पर समुद्री जीवों के नुकीले तंतुओं के कई निशान थे। भिन्न-भिन्न किस्मों के समुद्री खरपतवार उसके शरीर और कवच से लिपटे थे। कुछ देर तक गौडी शांति से तैरता रहा, फिर उसने अपनी गर्दन सीधी की और कराहते हुए पानी की गहराईओं में डूबने लगा। उसके मुंह से लगातार सफेद झाग के बुलबुले निकलते रहे।

ओह, जिस समुद्र में मैं पहले रहता था, वहाँ वापस कब जाऊंगा? खुले समुद्र में आज़ाद होकर तैरने को मैं कितना बेताब हूँ! काश, सूरज की झिलमिल किरणों के नीचे मैं केवल अपने पैर मार पाता, सिर्फ एक दिन के लिए...

यह मछलीघर यूं भी क्या बला है? यहां आने वाले सभी लोग हमें ताकते हैं और हंसते हैं - कितनी चिढ़ मचती है! यहां मेरे सारे मित्र तैरते हुए अपने सिर बार-बार कांच की दीवारों से टकराते हैं। उन्हें भी इंसानों का बर्ताव बिल्कुल पसंद नहीं। इस तरह का कुछ भी मेरे उस महान सागर में नहीं था, कभी भी नहीं! ओह, चाहे कैसे भी हो, मुझे वापस वहाँ पहुंचना ही है, किसी भी तरह.

फिर गौडी ने अपने आप को एक पत्थर पर खींचा। वह वहीं लेट कर कराहने लगा। उसकी आंखों में असहाय निराशा के आंसू भर आए।

यह मछलीघर एक गगनचुम्बी इमारत की सौवीं मंजिल पर स्थित था। उसके बाहर नियॉन का एक झिलमिलाता बोर्ड लगा था, जिस पर लिखा था 'मदर नेचर एक्वेरियम'। उसकी शान में कहा जाता, 'यह वह एकमात्र जगह है जहां समुद्री गहराईयों के करिश्मे आसमान की बुलंदियों पर चढ़ाए गए हैं'। हर रोज एक बड़ी भीड़ तेज स्पीड वाली लिफ्ट के जरिए सौ मंजिलें चढ़कर इस मछलीघर को देखने के लिए आते थे।

लोगों को सौंवी मंजिल पर - इन अजीबो-गरीब समुद्री जीवों को रहते देख वाकई बहुत रोमांच होता था। इस का आकर्ज़ण इतना अधिक था कि एक अन्य गगनचुंबी इमारत की डेढ़-सौंवी मंजिल पर अब एक बड़ा चिड़ियाघर बनाने की योजना चल रही थी। इस योजना के बारे में लोगों के अलग-अलग मत थे। एक कर्मचारी को ऊंचाईयों से डर लगता था। उसने मछलीघर के मैनेजर से पूछा, 'अगर जानवरों को जमीन से इतनी अधिक ऊंचाई पर रखा गया तो क्या यहां जिराफों का सिर भी नहीं चकराने लगेगा?'

'बकवास!' मैनेजर उस पर हंसा। 'जिराफों की गर्दन इसी लिए लंबी होती है जिससे कि वे दूर तक देख सकें। डेढ़-सौ मंजिलों की ऊंचाई से तो वे सीधे अफ्रीका तक देख कर खुश हो जाएंगे' उसने कर्मचारी-गण की ओर उंगली हिलाते हुए कहा।

'तुम्हें मालूम है कि हमारा धंधा जानवरों के सुख-दुख से ताल्लुक रखना नहीं है। हमारा काम जानवरों का उपयोग कर इंसानों को खुश करने का है। चिड़ियाघर इस लक्ष्य को पूरा करता है।'

सौवीं मंजिल पर ताल में तैरता विष्ठाल कछुआ इतनी ऊंचाई से रात को पूरा ष्टाहर निहार सकता था। काली स्याह रात में अनगिनत टिमटिमाती रोष्ठानियां बहुत अकेली और उदास लगती थीं। इंसान वाकई एक अजीबो-गरीब दुनिया में रहते हैंख़ एक तरह का समुद्र हीख़. जबकि हम कछुओं का समुद्रख़. गौडी के दिमाग में तरह तरह के विचारों का ऐसा सैलाब उमड़ रहा था कि उसके सिर का पिछला हिस्सा सूजने लगा था। उसके मुंह से सफेद बुलबुले और झाग लगातार निकलते रहे, और उसका विष्ठाल बदन लगातार गहरी उसांसों से थरथराता रहा।

मछलीघर के जिस ताल में गौडी रहता था वहां दक्षिण समुद्रों से लाई गयी कई प्रकार की अन्य मछलियां भी रहती थीं। उनमें विष्ठोज़ तौर पर येलोटेल और मेकेरल प्रजातियों की मछलियां थीं। हर रोज इन मछलियों के समूह अलग-अलग तरह के सुंदर नाच पेष्ठा करते। परंतु इस मनोरंजन के बावजूद भी विष्ठाल कछुए का ठंडी सांसें भरना और कराहना बंद नहीं होता।

गौडी के मुंह से निकलने वाले बुलबुले और झाग बदबूदार होते। ताल की अन्य मछलियां ष्ठुरू में तो उसका मजाक उड़ातीं। परंतु जैसे-जैसे दिन बीतते गए, वैसे-वैसे ताल का पानी सफेद नमकीन फेन से बदबूदार और प्रदूज़ित होता चला गया। एक दिन ताल की सबसे बड़ी और सुंदर मछली - येलोटेल ने बाकी मछलियों से ष्ठिकायत करते हुए कहा:

"कितने दुख की बात है, है न? ताल के सभी निवासी, हम सब एक-दूसरे के मित्र हैं, पर हममें से एक, विष्ठाल कछुआ गौडी, किसी परेष्ठानी से ग्रस्त लगता है। अगर आपमें से किसी को इस बारे और अधिक जानकारी हो तो जरूर बताएं।"

मेकेरल मछली ने झट से जवाब दिया: "वो केवल अपने आप मुंह फुलाता रहता है, परंतु अगर वो इसी तरह से अपने आंसू, बुलबुले, थूक इस छोटे ताल में बहाता रहा तो प्रदूज़ण के कारण चंद दिनों में हम यहां सांस भी नहीं ले पायेंगे। आखिर इस ताल का पानी केवल कछुए के लिए नहीं है।"

येलोटेल ने यह सब ष्ठांति से सुना और फिर उसने बाकी मछलियों की ओर देखा।

"तुमने ठीक ही फरमाया, परंतु क्या तुममें से किसी को विष्ठाल कछुए की हालत बिगड़ने का कारण पता है? अगर हमने जल्दी ही कुछ नहीं किया तो कछुए के आंसुओं, बुलबुलों और झाग से हमारा नुकसान ही होगा। जाहिर है कि हममें से कोई भी बीमार पड़ना नहीं चाहेगा - गड़, गड़प।" यह कह कर बड़ी येलोटेल ने अपना मुंह बंद किया। उसका बड़ा सा पंख उसकी पीठ पर खड़ा हो गया। इस संकेत के मिलते ही बड़ी मछली के चारों ओर तैरती मछलियों ने तैरना बंद किया और सभी अपने मुंह खोलकर एक-साथ बोलने लगीं। हां, वो जोर-जोर से अपनी बातें कहने लगीं। परंतु ताल के आसपास खड़े लोगों को यह बात बिल्कुल अटपटी नहीं लगी। मछलियां हमेष्ठा ही अपना मुंह खोलती और बंद करती हैं, तो इसमें बड़े आष्ठचर्य की क्या बात है? वो कभी इतना भी नहीं कहते, 'देखो मछलियां कैसे अपना मुंह खुल-बंद कर रही हैं।' यूं भी लोग मछलियों की भाज़ा के बारे में बिल्कुल भी नहीं जानते।

एक नौजवान, उत्साही येलोटेल मछली झट से बोली, 'क्यों न कछुए से ही पूछें? कोई जाकर गौडी से उसके आंसुओं का कारण पूछे। ष्टायद हम उसका दुख दूर करने में कुछ मदद कर पायें।'

बड़ी येलोटेल मछली ने अपनी आंखों को गोल-गोल घुमाते हुए कहा, 'तुम ठीक ही कहती हो। मैंने तुम में से कुछ को उसे रोअंटा और मोटे दिमाग वाला लालची कहते सुना है। परंतु ध्यान से देखने पर तुम्हें कछुआ एक मजबूत और अपार धीरज रखने वाला जीव नजर आयेगा।'

एक और कम उम्र की येलोटेल ने खीसें निपोरते हुए कहा, 'देखो वो कैसे अपनी गर्दन को कभी खींचकर बाहर निकालता है और कभी अपने कवच के अंदर छुपाता है! मेरे ख्याल से पूरे ताल में उस जैसा चतुर और कोई नहीं है। कौन सी मछली उससे जाकर पूछेगी, यह निष्ठचय करना भी आसान नहीं होगा।'

बाकी मछलियां हंसीं और पानी में एक-दूसरे के साथ खेलती और टकराती रहीं।

इस तरह कई घंटे बीत गए। ऐसा लगता है, पानी के अंदर समय, जमीन की अपेक्षा, अलग तरह से गुजरता है। मछलीघर में आए सारे दर्ष्ठाक खुष्ठी-खुष्ठी वापस लौट गए थे। मछलीघर का वातावरण एकदम ष्ठांत हो गया था जैसे वो रात के आगमन का इंतजार कर रहा हो। ऊंची इमारत के ऊपर ठंडी हवा चलने लगी थी। आसमान में हवा के संग बहते बादलों के झरोखों के बीच से चांद चमकने लगा था। व्यस्त राजधानी के ऊपर फैले अन्तहीन आसमान में सात बत्तखों का एक झुरमुट उड़ रहा था। रात्रि अपने दैनिक आगमन की तैयारी करने लगी।

कौन जाकर कछुए से उसकी व्यथा का कारण जानेगा, यह तय करते करते रात हो आई। यह निर्णय कोई आसान काम

नहीं था।

अगर बड़ी येलोटेल - जो मछलियों की नेता थी, कछुए से पूछने जाती तो ष्टायद वो सोचता कि इस मामले को ज्यादा ही तूल दिया जा रहा है, और गुस्से में आकर कोई जवाब नहीं देता। बड़े मेकेरल के जाने से भी कोई खास फायदा नहीं होता। सब मछलियां जानती थीं कि कछुए को मेकेरल मछली के बोलने के तरीके से सबसे ज्यादा चिढ़ थी।

'फिर हम क्यों न एक प्यारी सी बच्ची मछली को अपने प्रतिनिधि के रूप में भेजें?' किसी ने सुझाव दिया।

यह सुनकर छोटी मछलियों के मां-बाप ने तुरंत आपत्ति जताई और वे तेजी से इधर से उधर तैरने लगे।

'तुम क्या कह रही हो? अगर हमारे छोटे बच्चे उस खौफनाक कछुए के पास जाएंगे तो उनका क्या हश्र होगा? हमारे गौडी का जब पेट भरा होता है तब वो आराम से मुस्कुराता है और हरेक के साथ अच्छे ढंग से पेष्ठा आता है। परंतु जब उसे भूख लगती है तब उसकी आंखों और मुंह का अंदाज बिल्कुल बदल जाता है। उसके आंसू असली हैं या नकली, यह किसे पता?'

तभी एक अधेड़ उम्र की मेकेरल ने कहा, 'देखने में वह कछुआ चाहे धीमा और सरल नजर आये, परंतु उसका गुस्सा बहुत भयंकर है।'

फिर गौडी के पास किसे जाना चाहिए? इस सवाल से सभी मछलियां जूझ रही थीं।

"हम लोग यह बकवास बंद करें!" एक नौजवान मेकेरल मछली ने अपनी पूंछ को अधीरता से हिलाते हुए कहा, ''कछुए से उसकी समस्याओं के बारे में पूछने से क्या लाभ होगा? एक कछुआ ही दूसरे कछुए का दर्द समझ सकता है। कछुओं की समस्याएं मछलियों से अलग होंगी। देखो न, हमारा ष्टारीर उससे कितना भिन्न है।''

"जरा सुनो," एक बूढ़ी और कमजोर येलोटेल ने कहा, "क्योंकि हम सभी इसी ताल में जियेंगे और मरेंगे, इसलिए हमारे अनुभव और दिमाग भी किसी रूप में जुड़े होंगे! हम सभी जीवित प्राणी हैं और एक-दूसरे का जीवन सुखी बनाने में मदद कर सकते हैं। कल की ही बात है, मैंने एक सीप (क्लैम) को अपनी समस्यायों का बयान करते हुए सुनाख़.' कहते-कहते उसकी लड़खड़ाती जुबान धीमी होने लगी और मुंह से बुलबुलों की लड़ी के साथ बंद हो गई।

धच्च! अचानक एक मध्यम आकार का येलोटेल तेजी से बाकी मछलियों के समूह के सामने आया। "चलो, मैं जाऊंगा। अपने मुसीबत में फंसे साथी की सहायता करने का मैं भरसक प्रयास करूंगा। अगर हम संवेदना से देखें, तो हमें बिना ज्यादा प्रष्ठन पूछे ही ष्टायद उसकी तकलीफ का पता चल जाये। जैसा कि हमारे माननीय नेता ने कहा है, हरेक को अपनी व्यथा सुनाने के लिए कोई चाहिए होता है। मेरी राय में कछुआ बेचारा बहुत अकेला है।"

यह सुनकर सारी मछलियां अपनी आंखें अचरज से गोल-गोल घुमाने लगीं। जिस येलोटेल ने कछुए के पास जाने की इच्छा जाहिर की थी वो खुद काफी अकेला जीवन गुजारता था। जब बाकी मछलियां एक-दूसरे के साथ नाचती-थिरकती होतीं, तो वह एक पत्थर पीछे छिपकर अकेले ध्यानमग्न हो जाता। उसका नाम पुलु था, यह बाकी सभी मछलियों को मालूम था। परंतु किसी भी मछली ने उससे 'हलो' के आगे कभी बातचीत नहीं की थी। मछलियों के समाज में सदस्यों के बीच गहरे रिष्ठते होतें हैं। उस लिहाज से यह मत्स्य सामान्य से अलग था। सारी मछलियां इस असाधारण येलोटेल की बात को सुनकर बेहद खुष्ठा हुईं। मेकेरल और येलोटेल, सभी मछलियां खुष्ठी से उछलीं और उन्होंने अपनी पूंछ से तालियां बजायीं।

'हम गौडी कछुए के पास जाने वाले अपने प्रतिनिधि को सफलता और लंबी उम्र का आष्ठीर्वाद देते हैं!' सभी मछलियां बहुत थक गयीं थीं, इसलिए अब उन्होंने सोने की सोची। सभी के दिल खुष्ठा थे।

पुलु को लगा कि ष्टायद कछुआ सभी मछलियों के सामने बातचीत करने से हिचकिचाए। इसलिए उसने ताल में बाकी सभी जीवों के सोने का इंतजार किया। उसके बाद वो तैरता हुआ गौडी के पास गया। ताल एक सिरे से दूसरे सिरे तक केवल 10 मीटर लंबा था। इसलिए पुलु को तैरकर जाने में कोई खास वक्त नहीं लगा।

यद्यपि यह आधी रात का समय था, फिर भी पुलु को गौडी की सूजी और लाल आंखें साफ नजर आ रही थीं। गौडी कभी अपनी गर्दन को खींच कर सिर आगे ला रहा था और कभी पीछे की ओर कवच में ले जा रहा था। विष्ठाल कछुए को अच्छा लगे और संभवत: उसका मन ठीक हो जाए इसलिए पुलु ने उसके ठीक सामने तीन तेज कलाबाजियां खाई। गौडी ने पुलु

की ओर देखा। रोते-रोते वो बहुत पस्त हो गया था, ष्टायद इसीलिए उसके चेहरे से गुस्सा झलक रहा था।

"अरे नौजवान येलोटेल! आधी रात को तुम यहां क्या मटरगष्ठती कर रहे हो? अगर तुम मुझे बस रोते हुए देखना चाहते हो तो दिन के समय आओ। मुझे लगता था कि सिर्फ इंसान ही मेरा मजाक बनाकर खुष्ठा होते हैं। पर तुम भी बिल्कुल इंसानों जैसा सलूक कर रहे हो। चुपचाप, जल्दी से चले जाओ, मैं कहता हूं।" गौडी की आंखों से आंसू ढुलक कर उसके मुंह में चले गये और वो हकलाने लगा।

"ओह, लेकिन नहीं, आप बिल्कुल गलत समझ रहे हैं," पुलु ने कहा। "मैं यहां इसलिए आया हूं क्योंकि मैं दिल की गहराइयों से आपके लिये चिंतित हूं, महान समुद्री कछुए गौडी। हम सबने आपस में मिलकर चर्चा की है और अंत में मुझे सब मछलियों के प्रतिनिधि के रूप में आपसे मिलने भेजा गया है।"

"इसका क्या मतलब है? तुम यहां क्या करने आये हो?"

"मान्यवर गौडी, आप इतना रोते क्यों हैं? सभी मछलियां आपके रोने से चिंतित हैं। मेरा एक सहजीव इस तरह रोये, यह मुझसे बिल्कुल सहन नहीं होता।"

विष्ठाल गौडी चुप रहा। पुलु को उसकी लाल आंखों में अविष्ठवास की झलक नजर आयी और फिर गौडी के मुंह से उसका दुख फूट पड़ा।

"आह, सागर, मेरा सागर! मुझे निष्ठिचत ही समुद्र में लौटना है और वो भी अभी! ओह! मैं किसी हालत में अब इस ताल में नहीं रह सकता। काष्ठा, कोई मुझे इस तालाब की जेल से रिहा कर देता..." यह कहते-कहते गौडी की आवाज रुक गयी और आंसुओं की धारा बहने लगी। गौडी ने थूक निगला और फिर ष्ठुरू किया, "इंसान के हाथों बनी कंक्रीट दीवारों के बीच भला कोई कैसे रह सकता है? हमारी आंखों के सामने बस यह पारदर्ष्ठी कांच है, जो एक ठंडे, सख्त पर्दे से ज्यादा कुछ नहीं। कितनी बार मैंने बिना सोचे समुद्र की ओर वापस जाने का प्रयास किया और हर बार मेरा सिर इसी कांच की दीवार से टकराया!'

"लोग क्यों हम जैसे निरीह जीवों को मछलीघरों और चिड़ियाघरों में कैद करना चाहते हैं? उन्हें दूर से हमें ताकने में किस प्रकार का आनंद मिलता है? अगर कहीं स्थिति उलटी होती तो? अगर इंसानों की चमड़ी से बेसुरी आवाज वाले ढोल-तबले बनाये जायें? या फिर इंसानों के सिर के बालों को काट कर उनसे रस्सी बटी जाए तो? ऐसा होता, तो हम मनुज़्यों के बच्चों का नरम मांस मजे में खाते और व्यस्कों के सख्त मांस से सूप बनाते। नर और मादा मनुज़्यों को अलग-अलग करके उन्हें तोलते और फिर उनके मांस को बाजार में बेचते। इंसानों ने अपने लंबे इतिहास के दौरान अनेक जीवों के साथ ऐसे अत्याचार किए हैं।''

"मुझे लगता है कि इंसानों के साथ सबसे सख्त अत्याचार उन्हें किसी चिड़ियाघर के कटघरे में कैद करना होगा, जिससे कि बाकी जानवर आइस-क्रीम खाते-खाते, मजे से टहलते, उन्हें घुटे हुए पिंजरों में हांफते हुए देख सकें, उनकी ओर उंगली दिखाकर हंस सकें। तब ष्टायद मनुज़्य मछलीघरों और चिड़ियाघरों में कैद जीवों की व्यथा को समझ पायेंगे। नहीं! वो फिर भी नहीं समझेंगे क्योंकि वे आखिर मनुज़्य ठहरे!"

"मेरे दिमाग में अभी भी उस प्रिय समुद्र की चमकती नीली आभा और उसकी अंतहीन गहराई अंकित है! मैं एक बार, सिर्फ एक बार, बिना दीवारों वाले समुद्र में तैरना चाहता हूं। उसके लिए मैं अपनी जान तक न्यौछावर करने को तैयार हूं।"

पुलु हल्के से अपना सिर हिला रहा था। गौडी की बातें उसके दिल को छू रही थीं। "आप समुद्र में वापस जाना चाहते हैं इस बात की हम कैसे कल्पना करते? हम मछलियों ने हमेष्ठा ही अपने बुजुर्गों से एक ही बात सुनी है कि मछलीघर का ताल ही मछलियों के लिए दुनिया का सर्वश्रेज़्ठ स्थान है। प्रिय गौडी, हम सबको आपकी फिक्र है। अगर हम आपकी कुछ मदद कर पाए तो हमें बहुत खुष्ठी होगी। मछलियों की संगठित ताकत ष्टायद आपकी कुछ सहायता कर पाए। क्योंकि हमारे ताल में आप एक बिल्कुल अलग जीव हैंख्र." यह कहते कहते पुलु रुक गया। उसे लगा जैसे वो ज्यादा बोल गया हो।

"अलग, तुम कहते हो? तुम्हारा मतलब अलग, अजीब जीव? ज्यादा बोलना और निर्दय बातें करना तुम मछलियों की पुरानी आदत है। तुम, एक छोटे से मत्स्य, मुझे इस ताल से बाहर निकालने का आष्ठवासन दे रहे हो - कितनी बेतुकी बात है! मछलियों का इस ताल के प्रति कितना वाहियात नजरिया है - यहां की आरामदेह जिंदगी, स्वर्ग जैसी, उसके बारे में मुझे सब पता है। मैं तुम्हें बस इतना बताना चाहता हूं कि महान समुद्र की तुलना में यह ताल एक गंदे पानी का कुल्हड़ भर है!"

येलोटेल यह सुनकर सन्न रह गया। "यह सुंदर मछलीघर और हमारा बड़ा ताल - एकदम बेकार, बदबूदार है? अब कौन फालतू बोल रहा है? अब मुझे समझ आता है कि ताल में हरेक कोई तुम्हारा मजाक क्यों उड़ाता है गौडी। क्या तुम्हें पता है? हम मछलियों ने अपने सुंदर ताल की प्रष्ठांसा में एक गीत तक रचा है, क्योंकि हमारा जीवन यहां से सुंदर और कहीं नहीं हो सकता। हाँ! सुनो, गाने के बोल इस प्रकार हैं:

जगमग विद्युत प्रकाष्ठा तले
जन्म लिया, जन्म लिया
सदा सर्वदा, रहता यह ऐसा
उल्लसित सदा, न झेलें क्षुधा,
रहते ष्ठांत सदा, हम, हिल-मिल
न कज़्ट यहां, सर्व मंगल यहां,
मछलीघर हमारा, सुंदर घर प्यारा।

"रुको! बहुत हो गया! क्या ऐसे गीत से तुम मुझे सांत्वना देने की आष्ठा करते हो? क्या तुम वाकई सोचते हो कि मेरी कुछ मदद कर पाओगे? मुझे इंसान द्वारा कंक्रीट और कांच के बनाये इस कटघरे में बसे एक अजीबोगरीब प्राणी के जीवन से मुक्ति चाहिए। मुझे असली प्रकृति की गोद में वापस लौटना है, तुम्हें दिखता नहीं?"

"असली प्रकृति?"

"हां, हां! असली प्रकृति इस तरह का सड़ा-गला गड्ढा नहीं है। तुम छोटी मछलियों को लगता है कि तुम रोजाना इस ताल में आजादी से तैरती हो। ओह, इस संकुचित ताल और विष्ठाल समुद्र के बारे में एक वाक्य में बोल पाना संभव नहीं है। तुम्हारे जैसी मछलियों के विचार . . . "

कछुआ अपनी बात कहने में इतना व्यस्त था, ष्ठायद इसीलिए वो रोना भूल गया था।

"देखो इस पत्थर को देखो। यह असली पत्थर नहीं है - यह प्लास्टिक का बना है। यहां वो इतने सालों से पड़ा है फिर भी उसमें न तो कोई दरार पड़ी है, न ही उसका कोई हिस्सा टूटा है। उस पर समुद्र का कोई खरपतवार तक नहीं उगता। अब जरा इस नकली खरपतवार को देखो। साल-दर-साल यह न बढ़ती है, न घटती है। क्या तुम मेरी बात समझ रहे हो, दोस्त? तुम मछलियों ने इंसान द्वारा बनाई इस दुनिया में जन्म लिया, इसलिए तुम्हें सच्चाई का क्या पता? सच्ची प्रकृति जीवित होती है। वो उगती है, बढ़ती है, और बदलती है। मुझ पर यकीन करो, छोटे येलोटेल, यदि तुम खुद समुद्र में प्रकृति की सुंदरता को देख पाते तो तुम्हारा दिल सचमुच आनन्द से भर जाता। अगर कोई प्रकृति की गोद में नहीं पला, तो क्या वो असल में जिंदा है? तुम कुछ भी नहीं जानते समझते, फिर भी फालतू बातें बोलने की हिम्मत करते हो।"

"आदरणीय समुद्री कछुए, क्या आप इस ताल से मुक्ति पाकर, समुद्र में वापस जाकर, वाकई में खुष्ठा होंगे? क्या उसके बाद आपके बड़े-बड़े आंसू बहना बंद हो जायेंगे?"

''हां, बिल्कुल। तुम यह सवाल क्यों पूछ रहे हो? इस ताल में मुझे चालीस बरस पहले लाया गया था। ष्ठुरू में मुझे भी यह जगह जन्नत जैसी लगी। तुम्हारे गीत के समान ही मुझे हर रोज, समय पर, पर्याप्त मात्रा में झींगा या अन्य छोटी मछली मिलती थी। पानी का तापमान पूरे वर्ज़ एक-समान रहता और जब कभी मैं बीमार पड़ता, मेरे खाने में दवाई मिलाई जाती। हाँ, मैं सोचता जैसे मैं स्वर्ग में हूँ।

''पर जल्द ही मुझे यह अहसास हो गया कि जिंदगी का उद्देष्ठय खाना खाकर मोटा होना ही नहीं है। जीवन का आनंद तभी है जब आप मुक्त होकर प्राकृतिक जीवन जियें। यहां पर एक-एक क्षण बिताना नरक के समान है!

''जब इतने लोग मेरी ओर उंगली उठाते हैं और मुझे घूरते हैं तो मैं लगभग पगला जाता हूं। कब, ओह, कब मुझे अपना प्यारा समुद्र फिर दुबारा देखने को मिलेगा? मुक्त होकर सूर्य के नीचे, महासागर के झिलमिल करते पानी में अपने पैर मारते, जहाँ मर्जी घूमना - मैं कुछ भी देने को तैयार हूँ, कुछ भी करने को - मुझे वापस जाना ही है। क्या कोई मेरी मद्द नहीं कर सकता?"

यह कहते हुए भीमकाय गौडी ने अपने आगे के पैरों से कांच को जोर से मारा। थोड़ी देर बाद वो पस्त होकर लेट गया और उसकी आंखों से दुबारा आंसू बहने लगे।

ताल में गंभीर चर्चा

क्योंकि अब पुलु को गौडी के आंसुओं का राज़ मालूम पड़ गया था इसलिए वो अब जल्दी से तैर कर ताल के दूसरे छोर पर गया। सुबह-सुबह एक ताज़गी का माहौल था और मछलीघर सूर्य के प्रकाष्ठा में चमक रहा था। गगनचुंबी इमारत भी सूर्य की रोष्ठानी में दमक रही थी।

"मुझे अब सारी बात पता चल गई है! तुम लोग आंखें खोलो और विष्ठाल कछुए के रोने का कारण सुनो!"

येलोटेल और मेकेरल मछलियां पत्थरों की छांव में, ताल के कोनों में सोई थीं। पुलु की उत्तेजित पुकार सुनकर उन्होंने आंखें खोलीं। आधी नींद में, ष्ठुरू में तो उन्हें यह भी समझ न आया कि आमतौर पर ष्ठांत रहने वाला यह येलोटेल इतना उत्तेजित क्यों है। बड़ी येलोटेल मछली ने तुरंत सबको इकट्ठा किया और इस तरह सुबह की सभा ष्ठुरू हुई।

"ष्ठाबाष्ठा पुलु! अगर हम किसी तरह गौडी का रोना बंद कर पाये तो उससे हम सबकी जिंदगी बेहतर होगी। अब बताओ कछुए की व्यथा की क्या वजह है?"

"हां, मुझे कारण पता चल गया है लेकिनख़. ऐसा लगता है कि विष्ठाल गौडी अपने ताल को छोड़कर जाना चाहता है। वो जिस समुद्र से आया था, उसी प्राकृतिक जगत के बारे में सोचता रहता है। समुद्र में वापस जाने के लिए वो अपने प्राण तक न्यौछावर करने को तैयार है।"

यह सुन बड़ी मेकेरल मछली बार-बार अपना मुंह खोल कर, बंद कर, पानी में गोल-गोल तैरने लगी। उसने पुलु को जोर से, बीच में ही टोका।

"क्या? यह बड़ा कछुआ न केवल देखने में ही बेडौल है पर उसके विचार भी एकदम अजीबो-गरीब हैं। वो भला इतनी ऊँचाई पर बने इस ताल से कैसे निकल कर भागेगा? मुझे आगे की चर्चा में कोई रुचि नहीं है। जिस समुद्र का जिक्र वो कर रहा है, मुझे भी वो याद है, परंतु मात्र उसकी सोच से मुझे कंपकंपी छूटती है।" यह कहते हुए बड़ी मेकेरल का ष्ठारीर पानी में कांपने लगा।

"हां मैंने भी कुछ साल समुद्र की तलहटी में बिताए। इसीलिए मुझे उसके बारे में सब कुछ पता है। समुद्र दुनिया की सबसे खौफनाक जगह है। समुद्र में जहरीले समुद्री सांप रहते हैं और वहां ष्ठार्क मछलियां अपने पैने दांतों से पीछा करती पूंछ पर वार करती हैं। समुद्र डर और मौत का बसेरा है! वहां पर पत्थरों के पीछे से ईल वार करती हैं। उनके सींग समुद्री सांपों से भी अधिक घातक होते हैं।" कहते हुए बड़ी मेकेरल की कांपती आवाज धीमी पड़ गई।

"परंतु बड़े मेकेरल, गौडी कछुए ने तो इन सब बातों का बिल्कुल जिक्र तक नहीं किया। उसके अनुसार तो समुद्र की गहराईयों में ही जीव आजादी और ऊर्जा से रह सकते हैं। वहां पर तो आपकी आंखों के सामने सामने बड़े पत्थर उग आते हैं।"

"ऐसी मनगढ़ंत कहानियां सिर्फ बड़ा कछुआ ही रच सकता है!" बड़े मेकेरल की बीबी ने चीखते हुए कहा। "मुझे बताओ कि जो प्राणी इस ताल में हैं क्या उनमें ऊर्जा और जीवन नहीं है? देखो, मैं भी अन्य जीवों की तरह ही जिंदा हूं।" यह कहकर उसने जोरों से हंसते हुए अपने सारे फिन तेजी से हिलाए। बड़ी मेकेरल के चारों ओर एकत्रित येलोटेल और मेकेरल मछलियों ने सहमति में अपने सिर हिलाए। फिर सभी गौडी और उसके मूर्खतापूर्ण सपनों पर हंसने लगीं।

बड़ा येलोटेल पहले तो उनके हंसी-मजाक को सुनता रहा, फिर उसने उन्हें ष्ठालीनता से परन्तु मजबूती से चुप कराया।

"जरा एक मिनट सुनो। ष्ठोर बंद करो। यहां आने से पहले मैंने भी समुद्र में काफी समय बिताया था। मैं बड़े कछुए की भावनाओं को और उसकी बातों को समझ सकता हूं। मैं जैसे जैसे बूढ़ा हो रहा हूं मुझे इस कंक्रीट और कांच के जंगल, और प्लास्टिक की वनस्पति से उतनी ही नफरत होती जा रही है। जैसा कि बड़े कछुए ने कहा है, खुला समुद्र एक बहुत ही कमाल की जगह है। आह, हाँ, जितनी दूर इच्छा हो, तैरो। जितनी भी दूर, हाँ, कहीं भी ख़."

छोटी मछलियां यह सब हैरत से चमकती आंखों से सुन रही थीं।

"समुद्र आजादी का स्थान है। वहां इतनी प्रकार के जीव रहते हैं कि पेट भरने के लिए प्राणियों को तैरते हुए सिर्फ अपना

मुंह खोलकर रखना पड़ता है।"

एक नन्ही मछली पतली सी आवाज में बोली, "मैं भी! बड़े कछुए और बड़े मेकेरल की तरह मैं भी समुद्र में जाना चाहती हूँ, जल्दी ही।"

"जरा रुको। प्रकृति की मुक्त दुनिया का एक और पक्ष भी है। उस दुनिया में केवल शक्तिशाली ही जिंदा रह पाते हैं। यह जानना भी आसान नहीं है कि कौन वास्तव में ताकतवर है, और कौन आखिर तक जिन्दा बचेगा। वहां नन्हीं मछलियां छोटे प्लैंकटन खाती हैं, बड़ी मछलियां छोटी मछलियों को खाती हैं, और अंत में शार्क बड़ी मछलियों को खाती हैं।"

"यह बिल्कुल ठीक है," भीड़ में से एक मछली चिल्लाई, "और ताकतवर एवं भयावह शार्क को मनुज्य मारते हैं और खाते हैं।"

"हमारी चर्चा कुछ भटक गई है," बड़े येलोटेल ने कहा, "पर श्रीमती मेकेरल, यदि आप पहले सिर्फ एक बार भी असली समुद्र में मुक्ति से तैरने का आनंद ले चुकी हों तो आपको इस कंक्रीट के ताल में बिल्कुल संतोज़ नहीं मिलेगा। निश्चय ही दिन भर खाना खाने और पड़े रहकर जिंदा रहने को गौडी अब असली जीवन नहीं मानता। प्लास्टिक के खरपतवार, नकली पत्थर, बिजली के बल्ब-प्रकृति की असली सुंदरता, समुद्र के असली स्वाद, सूर्य की रोशनी और हवा के सामने क्या हैं? ठीक है कि ऐसी दुनिया जहां केवल शक्तिशाली ही जीवित रह पाते हैं, कुछ भयावह हो सकती है, परंतु ऐसी स्थिति में हमले से बचने के लिए हमारे मित्र कछुए को अपने सिर को केवल कवच के अंदर छिपाने की जरूरत पड़ेगी। कछुआ भला समुद्र में वापस जाना क्यों नहीं चाहेगा? कहना पड़ेगा कि कभी-कभी मेरा भी वहां जाने का बहुत मन करता है।"

बड़ा येलोटेल समुद्र में अपने पुराने दिनों की याद इतनी भावना से व्यक्त कर रहा था कि बड़े मेकेरल ने चुप ही रहना ठीक समझा। पानी एकदम शांत और स्थिर रहा जब तक पुलु अपनी अधीरता को रोक नहीं पाया।

"भगवान के लिए यह बताओ कि हम गौडी के लिए भला क्या करें? क्या हमने आपस में मिलजुल कर उसका दुख कम करने की नहीं ठानी थी? तो चलो, हम सब यहां से पीछा छुड़ाकर समुद्र की ओर जाने में उसकी मदद करें।"

यह सुनकर बड़े येलोटेल का पंख धीरे से हिला। इस बार उसकी आवाज में कम उत्साह था।

"तुमने ठीक कहा, गौडी के दोस्त, पर हम यह भला कैसे करें? अगर हम खुद भी चाहें तो इस मछलीघर की कैद से बाहर नहीं निकल सकते। यह ठीक है कि बड़े कछुए के पैर हैं। परंतु उसके भारी-भरकम कवच के साथ इस गगनचुंबी इमारत से सौ मंजिल नीचे उतरकर भागने के लिये कोई चमत्कार ही चाहिये।"

"ओह, क्या इसका मतलब हमें यहां हमेशा के लिए बूढ़े कछुए के आंसुओं के साथ जीना पड़ेगा? जो इतने हृदय विदारक आंसू बहाये उसके साथ रहना ख़्र."

"जरा अपने-अपने मत्स्य दिमाग का उपयोग करो!" बड़े मेकेरल की चाची ने डांटते हुए कहा, "कछुए के आंसू और हमारे आंसुओं में बहुत अंतर है। हमें कछुए के आंसुओं को अनदेखा करना चाहिए। और संभव हो तो उसे रोने से रोकना चाहिए।"

तभी पुलु ने बीच में टोकते हुए कहा, "मेरे ख्याल से मछलीघर में रहने वाले सभी प्राणी एक-दूसरे के मित्र हैं। मुझे लगा कि हम सब मिलकर इस समस्या का कुछ हल खोज पायेंगे, ओह पर क्या फायदाख़्र."

पुलु की आंखों में निराशा का भाव था और उसकी आवाज भी भर्रा गई थी। उसके पास तैरती एक छोटी मेकेरल ने तेजी से अपना सिर ऊपर नीचे हिलाया।

"क्या यह संभव है? अगर बड़ा मेकेरल या येलोटेल जिन्हें समुद्र का ज्ञान है, जाकर समुद्र संबंधी अपनी पुरानी यादें कछुए को सुनायेंगी, तो उसे अवश्य खुशी मिलेगी। क्यों, है न?"

"यह करना शायद ठीक न हो," बड़े येलोटेल ने कहा, "हो सकता है इससे कछुआ और ज्यादा दुखी हो जाए। भविज़्य के सपने हमें नई ऊर्जा देते हैं, परंतु अतीत के सपने हमें निराशा ही करते हैं।"

"इसके अलावा भला हम और क्या कर सकते हैं?"

सुबह के प्रकाश से चमकते मछलीघर में सारी मछलियां ताल की गहराई में सोच में डूबी थीं। उन्होंने अभी तक सुबह का नाश्ता तक नहीं किया था।

तभी नीचे की रेत थोड़ी सरकी और उसमें से बड़े कवच वाला एक केंकड़ा बाहर निकला। उसका कवच गौडी से कहीं

छोटा था। वो मछलियों के सामने अपने चिमटे हिला रहा था।

"सुबह-सुबह इस सब ष्टोर का क्या मतलब है? मैंने अक्सर मछलियों को मुंह खोलते और बंद करते हुए देखा है। मैंने सोचा आप खाने के ख्याल से केवल अपने होंठ चटकार रहे हैं। परंतु आपके मुंह चलाने से मैं आपके दिमाग में क्या चल रहा है वो नहीं समझ सकता न? खैर, अगर आप किसी समस्या में उलझे हों तो ष्टायद मैं आपको कुछ सलाह दे पाऊं? इस ताल में हम सभी लोग एक-दूसरे की मदद करते हैं, क्यों है न? नहीं तो हम सब लोग कब के थक-हार चुके होते।"

यह कहकर केंकड़े ने मुंह से बहुत से सफेद बुलबुले फूंके, जो पानी की सतह तक नाचते हुए फूट गए।

"मैं एक बात जानना चाहता हूं, महाष्ठाय," बड़े येलोटेल ने पूछा, "इस ताल से बाहर किस प्रकार निकला जा सकता है?"

यह सुनकर केंकड़े ने अपने चिमटे नीचे किए और उन्हें रेत पर टिकाया। "क्या तुम्हारा मतलब तुम सब येलोटेल मछलियां भी ताल छोड़कर भागना चाहती हैं?"

"नहीं, हम नहीं जाना चाहतीं। हम यहां मछलीघर में काफी खुष्ठा हैं। विष्ठाल कछुआ गौडी ताल छोड़कर जाना चाहता है, जो उधर रो रहा है। वो यहां पर बहुत दुखी है और वो प्रकृति की गोद में वापस जाना चाहता है। उसकी मदद कैसे करें यह हम मछलियों को नहीं पता। पर इतना बड़ा प्राणी इतने लोगों से बचकर कैसे बाहर निकलेगा। और कैसे 300 मीटर नीचे धरती तक जाएगा? उस जैसे भारी-भरकम प्राणी को उठाकर उड़ा ले जाने के लिए कम-से-कम दस हजार समुद्री चीलों की फौज लगेगी। और यह तो संभव नहीं लगता, है न, हे हे हेख़।"

यह सुनकर सभी मछलियां ठहाके लगाकर हंसने लगीं। परंतु केंकड़ा ध्यानमग्न होकर गंभीरता से कुछ सोचने लगा।

"ए, यह तो काफी सरल काम है। एकदम सरल," केंकड़े ने आत्मविष्ठवास के साथ अपने एक चिमटे को पानी के बाहर हिलाया। उसने प्लास्टिक की एक खरपतवार लेकर उसे दो टुकड़ों में तोड़ा।

"बड़े कछुए के लिए यह कोई बड़ा काम नहीं है। मैं भले ही बहुत महत्वहीन सा दिखूं परंतु मैं दुनिया-जहां की बातों को अच्छी तरह समझता हूं। इंसानों के अनुसार हम यहां सोचते-विचारते नहीं हैं - मात्र जिंदा भर हैं। परंतु मैं इस ताल के पेंदे से सारी दुनिया पर नजर रखता हूं।"

"परंतु केंकड़े महाष्ठाय," पुलु ने टोकते हुए कहा, "हम गौडी के बारे में क्या करें?"

"बस उसे बहुत बीमार होने की एक्टिंग करनी चाहिए। मेरे कुछ अन्य केकड़े साथियों ने ऐसा ही किया और वो यहां से निकलने में सफल हो पाए। आपको मालूम है कि किसी बीमार सदस्य के होने से ताल का पानी दूज़ित हो जाएगा। मनुज़्यों को हमारे बीमार जीवों से सख्त नफरत होती है। हालांकि मुझे यह भी पता है कि यहां से भागने वाले मेरे दो मित्र अंत में मनुज़्यों का भोजन बने। अच्छा नाटक न कर पाने पर लोगों को लगता है कि उनके साथ छल हुआ है और फिर उन्हें बेहद गुस्सा आता है। तो इसलिए जरूरी है कि अगर लोगों के सामने नाटक किया जाए तो वो ऊंचे दर्जे का हो।"

"तुम में से कुछ मछलियां रंग-बिरंगी हैं और कुछ का आकार पत्थरों और खरपतवार से मिलता-जुलता है। कुछ मछलियां अपनी मर्जी के अनुसार अपना रंग बदलने की क्षमता रखती हैं। परंतु दुर्भाग्य से, मानवों को इस सबके बारे में अच्छी तरह पता है। हो सकता है कि बूढ़ा कछुआ अच्छा अभिनय कर पाये। जो भी हो, चाहे उनका प्रदर्ष्ठान खराब भी हो, कछुए जैसे बड़े प्राणी हमेष्ठा ही सबके ध्यान का केंद्र होते हैं।"

केंकड़ा इधर-उधर कुछ कदम रखने के बाद फिर से बोलने लगा। उसके चेहरे का भाव दर्ष्ठा रहा था कि वह अपने विचारों को कितना अहम मानता था।

"पर आजकल मनुज़्यों की दुनिया धीरे-धीरे बदल रही है। मुझे याद है जब मुझे पकड़कर इस ताल में लाया गया था, लोग हमारी ओर किस नजर से देखते थे। बहुत ही गलत! वो सोचते थे कि मनुज़्य पूरी दुनिया के प्राणियों पर राज्य करने के लिए ही पैदा हुए हैं। कैसी बकवास, छिः!"

क्षण भर के लिए केंकड़े का चेहरा घष्टणा से विकृत हो गया। उसने कई बार अपना सिर हिलाया।

"अब धीरे-धीरे कुछ लोगों को समझ में आने लगा है कि वे पष्टथ्वी के सबसे महत्वपूर्ण प्राणी नहीं हैं। असल में जब उनका खुद का जीवन खतरे में पड़ने लगा, तभी उन्होंने दूसरे जीवों में अपनी रुचि और चिंता दर्ष्ठाई। झूठे, सबके सब झूठे! मैं

उनकी किसी बात पर विश्ठवास नहीं करूंगा। पर श्टायद कोई . . . .।"

पुलु ने बड़े उत्साह से कहा, "मैं तो आपको एक मंद और भ्रमित रेंगनेवाले प्राणी समझता था, परंतु आपके विचार काफी विवेकश्ठील हैं।"

केंकड़े ने अपनी तारीफ को विचलित हुए बगैर सुना, जैसे वो उसकी अपेक्षा ही कर रहा था।

"क्या तुमने मुझे मंदबुद्धि कहा? यह बताओ कि तुमने मेरी तुलना किस जीव से की? तुम्हारे सोच के अनुसार तो जेलीफिश्ठा की स्पीड की तुलना आक्रमण करती श्टार्क से की जा सकती है। मैं अपनी ही गति के अनुसार चलता हूं और इस बड़ी प्रकृति में मुझे जहां भी कुछ सीखने को मिलता है, मैं अवश्टय सीखता हूं। नहीं तो . . ."

अब केंकड़े की आंखें कहीं दूर खोई थीं - जैसे वो अपने पुराने अतीत के बारे में सोच रहा हो।

"वो पहले अरुचि दिखाते हैं या मश्टत होने का अभिनय करते हैं, परंतु फिर वो झट से उछल कर दबोचते हैं। परंतु जब उनका पेट भरा होता है तब सबसे स्वादिज़्ट छोटी मछलियां भी उनके मुंह के पास सुरक्षित घूम सकती हैं - जैसे उनमें गहरी मित्रता हो। परंतु जीवन का यह सत्य सभी को पता ही है। हां, हूं, हूं"

उसके बाद केंकड़े की मुद्रा और गंभीर हो गई और वो अपने चिमटे से पानी काटता हुआ तैरने लगा।

गौडी एक्टिंग श्टुरू करता है

मछलियों ने फिर पुलु को कछुए के पास जाकर सारी चर्चा के बारे में बताने के लिए नियुक्त किया। अब तक श्टाम हो चुकी थी और मछलीघर से सभी लोग जा चुके थे।

पुलु गौडी के पास तैर कर गया और उसके कानों में फुसफुसाने लगा। पता नहीं क्यों, उसे डर था कि उसकी धीमी-से-धीमी बोली भी मनुज़्य सुन लेंगे। कहीं मछलियों की बातों पर निगरानी रखने के लिए मछलीघर वालों ने कोई माईक्रोफोन छिपा रखा हो।

बड़ा कछुआ तैर रहा था और पहले जैसे उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे। पहले उसने कुछ अनमने भाव से सुना। परंतु जब पुलु ने केंकड़े की सलाह बताई तो गौडी की आंखों में चमक आने लगी। पूरी बात सुनकर गौडी का दिल खुश्ठी से उछलने लगा। वो इतनी जोर से अपने पैर और सिर हिलाने लगा कि उसका भारी श्टारीर पानी में ऊपर-नीचे हिचकोले खाने लगा।

"क्या बात है!" गौडी इतना उत्साहित था कि लगता था जैसे वो झट से कूद कर अपने भारी कवच से बाहर ही आ जाएगा। पुलु भी गौडी की खुश्ठी में श्टामिल हो गया।

अगली सुबह से गौडी बीमार पड़ गया, उतना बीमार जितना कोई कछुआ पड़ सकता है। उसकी जीभ मुंह से लटकने लगी। जो कोई उसे देखता वो उसकी सेहत के प्रति सहानभूति जताता। जैसे-जैसे उसका मुंह खुलता-बंद होता, वैसे-वैसे उसमें से सफेद झाग और बुलबुले निकलते। थोड़ी-थोड़ी देर बाद उसका बड़ा कवच ताल की कांच की दीवार से धम्म! करके टकराता। उसकी आंखे चांद जैसी गोल-गोल दिखतीं, ऊपर देखते, जैसे वो लोगों से दया की भीख मांग रहा हो।

'ओह, आहह!' गौडी को अपने सुंदर अभिनय पर खुद ताज्जुब हो रहा था। रातों-रात उसकी अभिनय प्रतिभा में चार चांद लग गए थे। गौडी की खराब हालत पर सबसे पहले ध्यान देने वाली एक छोटी लड़की थी। उसने अपनी नाक ताल की कांच की दीवार के साथ चिपका रखी थी। जैसी ही गौडी ने उसे अपनी ओर ताकते हुए देखा, वो तुरंत पानी में जोर से उछलने-कूदने लगा और आंखों को गोल-गोल मटकाने लगा जैसे दर्द असहनीय हो रहा हो।

"देखो, जरा देखो! ओह, ओह; इस बेचारे कछुए की तबियत कितनी खराब है। ओह, मां, इसकी कुछ मदद करो! कितनी दुख भरी बात है - उसे देख कर खुद मेरी तबियत बिगड़ गई है।"

लड़की की मां ने पहले अपनी बेटी को देखा और फिर बीमार कछुए को। फिर वो दौड़कर मछलीघर के किसी कर्मचारी को बुलाने को दौड़ी। कर्मचारी अपने आप से बड़बड़ाता हुआ आया कि ये जानवर और लोग कितने बड़े सिरदर्द हैं, परंतु गौडी की खराब हालत देखकर उसने तुरंत प्राणियों के डाक्टर को फोन किया। यह डाक्टर मछलीघर के प्राणियों के स्वास्थ्य की देखभाल करता था।

जब यह सब हो रहा था उसी बीच कई लोग कांच के सामने इकट्ठे हो गए थे और सभी कछुए की दयनीय हालत

को देखकर दुखित हो रहे थे। कई की आंखों में आंसू डबडबा उठे थे। इस बार गौडी को लोगों का ताकना बुरा नहीं लगा। उसे अपने दिल में काँच के पार खड़े इन अजनबियों द्वारा दिखाई गई सहानुभूति के बदले खुष्ठी व आभार उमड़ता महसूस हुआ। गौडी ने अपनी जीभ लटका दी। उसे दिल में लगा कि अगर उसका अभिनय सही रहा तो उसको मछलीघर से मुक्ति पाने में अवष्ठय सफलता मिलेगी।

मछलीघर का डाक्टर अपनी छुट्टी को अधूरा छोड़कर दौड़ा हुआ वापस आया। उसने कुछ मिनटों तक गौडी का मुआयना किया फिर एक बड़े कागज पर उसने ये ष्टाब्द लिखे, 'बड़ा कछुआ गौडी सख्त बीमार है।' यह नोटिस गौडी के पास कांच पर चिपका दिया गया। उसके बाद डाक्टर मछलीघर के मैनेजर को अपनी जांच रिपोर्ट सौंपने गया।

"हम चाहे जैसे देखें, लगता है अब बड़े कछुए का अंत करीब है। नहीं तो भला उसके पेट में से इतने सफेद झाग क्यों निकलते? प्राणियों के जिस मेडिकल कालेज में मैंने पढ़ाई की, वहां इस प्रकार के लक्षणों के बारे में मुझे बिल्कुल नहीं पढ़ाया गया।"

"अगर वो कछुए की बजाए आदमी होता तो पेट से निकले द्रव का कारण ष्टायद 'न्यूरोसिस' होता। 'न्यूरोसिस' आजकल काफी आम मर्ज है। सामान्यत: लोगों में यह बीमारी सामाजिक बंधनों के कारण होती है। घरों और आफिस में लोग अनेकों पारिवारिक समस्याओं से घिरे रहते हैं। उनकी अपार इच्छायें कभी पूरी नहीं होती हैं और इससे वो असंतुज्ट रहते हैं। इसका एक ही इलाज है - लोग इन दबावों से मुक्त हों। परंतु कछुए का इलाज कैसे हो, यह मेरी समझ से बाहर है।"

प्राणियों के डाक्टर ने इतनी जटिल व्याख्या इसलिए दी जिससे कि गौडी के प्रति उसकी जिम्मेदारी खत्म हो।

"मुझे अपने कानों पर विष्ठवास नहीं हो रहा है," मछलीघर के मैनेजर ने अपनी टाई को ठीक करते हुए कहा। "कछुए को 'न्यूरोसिस' की बीमारी होगी, यह किसे पता था? अक्सर यह मर्ज उच्च श्रेणी के प्राणियों, हम मनुज़्यों में होता है, जिनमें बोलने और सोचने जैसी अद्भुत क्षमताएं होती हैं। वैसे यह कछुआ काफी लंबे अर्से से हमारे मछलीघर की ष्टान रहा है। हमें टैक्सीडर्मिस्ट को तुरंत बुलाकर कछुए में भूसा भरवाना चाहिए। नहीं तो कछुए की चमड़ी का रंग फीका पड़ जाएगा। फिर हम कछुए के मॉडल को 'डिसप्ले' पर रखेंगे।"

"ष्ठष्ठष्ठ, मैनेजर साहब," उसके पीछे से आवाज़ आई। "जरा ध्यान देकर बोलें, सर। क्या होगा अगर उन अखबारों या टेलीविजन रिर्पोटरों ने आपको सुन लिया, या फिर उस छोटी लड़की ने, जिसने गौडी की हालत देखी थी?"

"कैसे अभद्र और टांग अड़ाने वाले होते हैं ये प्रकृति प्रेमी", मैनेजर बड़बड़ाया, विष्ठाल कछुए को झुंझलाकर देखते हुए, ''इसके जैसे मछलीघर और चिड़ियाघर लोगों द्वारा और लोगों के लिये ही तो बनाए जाते हैं। अगर ये दखलअन्दाजी करने वाले पागल सोचते हैं कि पष्ठु इतने ज्यादा महत्वपूर्ण हैं, तो हर रोज भोजन में जानवरों, पक्षियों और मछलियों का मांस खाना बंद कर दें। भाड़ में जाएं, जब देखो तो उन मामलों में टांग अड़ाते हैं जिनका उनसे कोई लेना देना नहीं। जब मौका मिले, हमारे लिये मुसीबत खड़ी करते रहते हैं। मेरी मानो, आज से इस मछलीघर में उन लोगों का अन्दर आना बंद कर दिया जाए जो इन तथाकथित प्रकृति संरक्षण समूहों के सदस्य हैं। प्रवेष्ठा द्वार पर ही एक नोटिस लगा दो।"

मैनेजर को बोलते देख गौडी के ष्टारीर में सिहरन दौड़ गई। यही आदमी चालीस साल पहले जब युवा था-इस मछलीघर में काम पर लगाया गया था, ठीक उसी समय जब गौडी को पकड़ कर यहां लाया गया था, और गौडी को उसका स्वभाव अच्छी तरह से पता था।

कुछ ही दिन में, गगनचुम्बी इमारत के मछलीघर के विष्ठाल कछुए की बुरी दष्ठा की खबर पूरे ष्टाहर में फैल गई। इससे पहले कि प्रवेष्ठा पर कोई पाबन्दी लगाई जाए, गौडी के फोटो, जिसमें वह अपने सर्वोत्तम अभिनय पर था, अखबारों में और टी वी स्क्रीन पर रोज दिखने लगे। जैसे-जैसे चिन्तित आवाजें और जनमत बढ़ने और फैलने लगा, घबराए हुए मछलीघर के मैनेजर को अपने निदेष्ठाक मंडल की एक गुप्त आपातकालीन बैठक बुलानी पड़ी। मैनेजर मछलीघर के सभी निदेष्ठाकों के सामने थका हुआ अपने सिर और कंधे झुकाए खड़ा था।

"विष्ठाल कछुए गौडी का यह मसला प्रैस और मीडिया के ध्यान में अब आ ही गया है। इसे अपने पास छुपा कर रखने के लिये बहुत देर हो चुकी है। हम सबको पता है कि ये रिपोर्टर सफेद को काला और लाल को पीला बना सकते हैं। वे अपनी सहूलियत से वही व्यक्त करते हैं जो उन्हें लगता है कि उस समय की जरूरत है। वे इस बात को भी अनदेखा

कर देते हैं कि रंग या स्थिति समय के साथ बदलेगी और वे अपनी देखने समझने की क्षमता में झूठा आत्मविष्ठवास रख कर वक्तव्य देते हैं। उनकी दखलअंदाजी के कारण हम अपनी मूल्यवान संपदा, इस विष्ठाल कछुए को, भूसा भरवाकर बिक्री के लिये प्रदर्ष्ठित भी नहीं कर सकते।"

फिर मैनेजर गौडी को मछलीघर से भेजने की अपनी योजना के लिए निदेष्ठाकों की स्वीकृति लेने की कोष्ठिाष्ठा करने लगा। जब बैठक खत्म हुई, उसने मछलीघर के टैक्सीडरमिस्ट को दफ्तर बुलाया।

"देखो, ऐसे मामलों में अपने दिमाग का इस्तेमाल करना पड़ता है। जब कभी तुम्हें यहां के किसी जानवर में कुछ भी समस्या नज़र आए, तुम्हें सुनिष्ठिचत करना चाहिये कि उसे हमारे मछलीघर का कोई दर्ष्ठाक नहीं देख पाए। उस जन्तु के सामने वाले कांच को ढक दो, उसे ताल से बाहर निकाल दो या कुछ और करो। अगर तुम अपने काम पर ध्यान नहीं दोगे तो किसी दिन मुझे तुम्हारे अंदर भुस भरवाना पड़ेगा और किसी ऐसे ष्टाख्स को बुलाना पड़ेगा जो इस काम को अच्छी तरह कर सके।"

टैक्सीडरमिस्ट ने अपने हाथ के पीछे से अपना मुंह पोंछा। "लेकिन मैनेजर साहब, मैंने क्या गलत किया है? मैं, एक टैक्सीडरमिस्ट, उस कछुए के साथ क्या कर सकता हूं जो अभी मरा नहीं है?"

"बेवकूफ, यह तुम्हारी वजह से है कि हम सब आज इस मुसीबत में फंसे हैं। कोई भी काबिल टैक्सीडरमिस्ट यह जानता है कि उसे जानवरों पर उस समय निगाह रखनी चाहिए जब वे स्वस्थ हों, ताकि उसे पता लग जाए कि किसमें भूसा भरने की जरूरत है।"

अब तक मैनेजर पूरी तेज आवाज में चिल्लाने लगा था। उसे गुस्सा आ रहा था कि विष्ठाल कछुए को वापस समुद्र में फेंकना पड़ेगा। उसने अपना चष्ठमा उतार दिया था-जिसका फ्रेम कछुए के खोल का बना था, और वह एक पागल आरकेस्ट्रा के संचालक की तरह अपनी बाहें हवा में हिला रहा था।

उधर मछलीघर के मुख्य ताल में गौडी बैठा हुआ हाँफते-कराहते हुए, मंडल के बैठक के कार्य-कलाप से बेखबर, अपना मुंह खुल-बंद कर रहा था। जैसे ही ताल के आसपास इकट्ठे लोगों की उसमें रुचि खत्म होती और वे जाने के लिये मुड़ते, गौडी फिर से अपने पुराने स्वस्थ रूप में आ जाता और दर्ष्ठाकों के पीठ पीछे से जीभ चिढ़ाता।

पुलु खुष्ठी खुष्ठी तैरता हुआ गौडी के पास आया।

"ओह, मेरे दोस्त, मछलीघर के बाहर लोग बहुत हल्ला मचा रहे हैं। कुछ तो ऐसे भी हैं जो चिल्ला रहे हैं कि तुम्हें ठीक करके बाहर छोड़ दिया जाय। अगर तुम अपना कान काँच के साथ गड़ाओ तो तुम्हें सब कुछ सुनाई देगा। ऐसा लगता है कि तुम्हें ष्टायद अगले हफ्ते तक ही आज़ादी मिल जाए।" इस आष्ठाभरी खबर को गौडी को सुनाते समय पुलु की आवाज में जरा सा ईर्ज्या का पुट भी था।

"हा, हा हा!" गौडी की हंसी उसके दिल की गहराइयों से निकली थी। "वाह, वाह, तो बात यहां तक पहुंच गई? पता है, अगर जरा सा ठहर कर सोचो, तो तुम्हें दिखेगा कि ये इन्सानी जीव चीज़ों को केवल ऊपर ऊपर से ही देखते हैं। अगर मुझे यह पहले पता होता, तो मैंने बहुत पहले बीमारी का नाटक चालू कर दिया होता, हा, हा हा!"

गौडी हंसता रहा, उसकी आवाज़ खुष्ठी के सपनों से भरी थी। "वहां चमकते सूर्य तले, खूबसूरत नीला समुद्र, सजीव लहरें बलखाती हुई, जो सारी सीप मछलियों और समुद्री घास को पालती-पोसती हैं-आहहह, वह प्रकृति है। ओह, मैं सचमुच बहुत खुष्ठा हूं। प्रकृति मेरा घर है और मुझे वहीं होना चाहिए था।"

"ओह, दोस्त, यह सुनने में कितना कमाल का लगता है।" पुलु ने कहा, "बिल्कुल वैसा, जैसा तुमने मुझे बताया है। रंगबिरंगे समुद्री ऐनीमोनों और ष्टोख लाल मूंगों के बीच तैरना, जहां इच्छा हो वहां तक जाने के लिये मुक्त। यह एक सपना सा लगता है, गौडी, एक अद्‌भुत सपना।"

"पुलु, तुम्हारा क्या? क्या तुम भी इस मछलीघर को छोड़ना चाहोगे? क्या तुम भी प्राकृतिक संसार में जिन्दगी आजमाना चाहोगे?" विष्ठाल कछुए के चेहरे से लग रहा था कि वह गम्भीरता से कुछ सोच रहा था।

"ओह, बेष्ठाक! चाहे मैं इस मछलीघर में ही पैदा हुआ हूं, लेकिन फिर भी मैं बाहर, वहां के जीवन का अनुभव

लेना बहुत पसंद करूंगा। यहां, ये सारे जीव बहुत संतुज़्ट लगते हैं, पर वह केवल इसलिए है क्योंकि वो अपना सारा जीवन मानवों की बनाई बिजली की बत्तियों के नीचे बिताते हैं। जैसा तुम कहते ही हो, गौडी, कि बड़ा सा नियौन का बोर्ड कहता है- 'प्रकृति माता का मछलीघर', लेकिन यह केवल लोगों को आकर्ज़ित करने के लिए ही है। मैं तो असली चीज देखना चाहता हूँ-कुदरत के अजूबों से घिरा हुआ जीवन।"

"हूं, समझा। मैं तुम्हारी भावना अच्छी तरह समझता हूँ। लेकिन तुम्हें यह पता होना चाहिये, पुलु दोस्त, कि किसी मछलीघर में पले जीव के लिए बाहरी दुनिया कठिनाइयों से भरी हुई हो सकती है।"

"ओह, लेकिन वह तो बिना बताए ही जाहिर है" पुलु ने कहा, "प्रकृति की गोद में जीनाख़ यदि वह एक खूबसूरत सपने जैसा लगता है, तो फिर कौन से दुख हैं जो मुझे झेलने पड़ सकते हैं? कोई भी यह बात मानेगा, है न गौडी?"

"हूं, हूं, तुम ठीक कह रहे हो", गौडी ने अपना सिर हिलाया और उसका दिल पुलु के साथ भाईचारे के एक सुखद अहसास में एक हो गया।

"यह सच है, लेकिनख़ख़" विष्ठाल कछुआ गहरी सोच में डूब गया। पुलु ने गौडी के लिये संदेष्ठावाहक बनने में, और उसकी मुक्ति के लिये योजना बनाने में, काफी जहमत उठाई थी, और गौडी उस युवा येलोटेल मछली का आभारी और ऋणी था। उधर पुलु अपने आप से बड़बड़ाता तैर रहा था, जैसे कोई सपना देख रहा हो, और इधर विष्ठाल कछुए का हृदय एक अव्यक्त उदासी से भर आया था।

"मैं भी जाना चाहता हूं, अपने दोस्त गौडी की तरह। ओह, किसी तरह उस महान प्रकृति को छू पाऊँ जिसे खुद देखने का अवसर मैंने कभी नहीं पाया।"

गौडी की आंखें अचानक एक प्रेरणा से कौंध उठीं, और उसके मुंह से ष्टाब्द फूट पड़े।

"पुलु, मेरे दोस्त, मुझे भरोसा होने लगा है कि तुम सचमुच यहां से बाहर जाना चाहते हो। तुम मजाक नहीं कर रहे, तुम इस बारे में सचमुच गम्भीर हो न?"

"बिल्कुल" पुलु बोला, "क्या मैं झूठ या अनर्गल बोलने वाला दिखता हूँ?"

"आह, तो बढ़िया है, चलो हम दोनों एक साथ छुटकारा पा लें। अगर तुम अपने दिल में यह करने के लिए इतनी गहरी इच्छा रखते हो, तो तुम वहां सागर के चुनौतीपूर्ण संसार में अवष्ठय ही बहुत सफल रहोगे। केवल संकल्प रखने से ही सफलता तो नहीं मिलती, पर बिना संकल्प के तो कुछ करना ष्ठुरू भी नहीं किया जा सकता।"

गौडी एक क्षण रुका। "हूं, मुझे बहुत साल पहले की एक बात याद आई। जब मैं इस मछलीघरमें लाया गया था।" उसने सोचते हुए अपनी गर्दन एक ओर टेढ़ी की, "जितना मुझे याद आता है, मुझे समुद्रतट से यहां तक एक टंकी वाले ट्रक में लाया गया था। हां, तुम्हें अपने एक पैर के नीचे, ठीक मेरे खोल के अंदर, छुपाना काफी आसान होगा। तुम्हें बिना सांस के केवल 10 सकेंड तक काम चलाना होगा, क्योंकि हमें इस ताल से ट्रक की टंकी में बहुत जल्दी से ही हस्तांतरित किया जाएगा।"

पुलु को अतीव प्रसन्नता का ज्वार महसूस हुआ, और इससे पहले कि उसे खुद पता चले कि वो क्या कर रहा है, उसने अपनी खुष्ठी से पुलकित ष्टारीर को पानी में सात विस्मयकारी कलाबाजियां दे दीं।

"वाख़ह, मैं स्वतंत्र घूमूंगा, बिल्कुल गौडी की तरह। असली प्रकृति, वही मुझे चाहिये!" पुलु झटके से मुड़ा और ताल में तेजी से लपका, क्योंकि अपने दूसरे येलोटेल ओर मैकरल दोस्तों को बताने से वह अपने आप को रोक नहीं पा रहा था।

खुष्ठी से उद्वेग में लगभग पागल होते हुए पुलु ने सबको, जो गौडी ने उसको कहा था, बताया। उसने सोचा था कि वे इस योजना को सुनकर बहुत खुष्ठा होंगे, पर जैसे जैसे वह बोलता जा रहा था, उसने देखा कि कई चेहरों पर नाखुष्ठी के रंग आ गए थे। फिर मत्सय वाणियों के एक अस्पज़्ट ष्ठोर ने उसे घेर लिया। जो उसकी बात से सहमत थे, और जो खिलाफ, उनमें उत्तेजित बहस छिड़ गई थी। बेष्ठाक, ताल के बाहर खड़े किसी व्यक्ति को बस ऐसा प्रतीत होता था जैसे वे मछलियां आमतौर से कहीं ज्यादा जल्दी जल्दी अपने मुंह खुल-बंद कर रही थीं।

बड़े मैकेरल की आवाज दूसरों से कहीं ऊपर गूंजी, जब उसने जोर से पुलु के मछलीघर छोड़ने की योजना की भर्त्सना

की। सारी मछलियां बोलना छोड़ उसे सुनने को मुड़ गईं। क्योंकि आखिर वह कभी समुद्र में भी रहता था। "यह जगह, जिसे तुम प्राकृतिक संसार कहते हो, ऐसे किसी जीव के लिये जो उसका आदी न हो, काफी खतरनाक जगह है। गौडी वहां के जीवन का अनुभव ले चुका है, पर पुलु यहीं मछलीघर में ही पैदा हुआ है और कुदरत के नियमों के बारे में तनिक भी नहीं जानता। जब तुम ष्टांति से समुद्री घास को पानी में तिरते देख रहे हो, भलाई इसी में है कि तुम्हें याद हो कि उसमें कोई मोरे ईल छिपी हुई हो सकती है, जो पास घूमती किसी मछली पर झपट पड़े। मुझे तो याद नहीं आता कि मैं कभी एक बार भी, चिंतामुक्त होकर, समुद्र में सोया हूंगा। और यहां यह मछलीघर, वाह! तुम यहां सावधानी के बारे में लेष्ठामात्र भी सोचे बिना, आराम से इतना सो सकते हो कि तुम्हारा ष्टारीर पानी में घुल ही न जाए।"

बड़ा येलोटेल, जो केवल दूसरा एक और मत्स्य था जो सागर में रह चुका था, बोल पड़ा।

"हाँ और यही कारण है कि हम यहां पेटुओं की तरह खाते रहते हैं तथा मोटे और मोटे, कमजोर और कमजोर, होते जाते हैं। जब मैं सागर में था, मेरी पूंछ, पंख और मेरा पूरा ष्टारीर बहुत खुबसूरत चमकते हुए रंग का थाख़।"

उसके बगल में तैरती हुई कई मछलियां ठठाकर हंस पड़ीं। "पर उस समय तुम कहीं ज्यादा जवान थे। आखिरकार बड़ा येलोटेल होना भी तुम्हें बूढ़ा होने से नहीं बचा पाया, है न?"

"बेतुकी बातें मत करो। वहाँ सागर में सभी जन्तु सच्चे प्राणवान जीवों की सजीवता से विचरते हैं और उनके विचरण में बाधा पहुंचाने वाली कोई पारदर्ष्ाी कांच की दीवार नहीं होती। तुम तो पानी के अंदर चमकती हुई धूप के सौन्दर्य की कल्पना तक नहीं कर सकते, और यह सौन्दर्य सारे सागर वासियों को प्राणवान बनाता है। लोगों द्वारा बनाई ये बिजली की रोष्ठानियां अब ख़ख़ खैर, जो भी हो, स्वतंत्रता सुंदर होती है। हम मत्स्य सहस्रों सालों से आज़ाद पैदा होते रहे हैं। जब आज़ादी छिन जाती है तो कुदरती बात है कि जीव थोड़ा पागल जैसा हो जाता है, जैसे हमारे मित्र विष्ठाल कछुए के साथ हुआ है।"

"जो तुम कह रहे हो, उसके चलते," बड़े मैकेरल ने बात काटी, ''मुझे संष्ठाय होता है कि तुम्हें समुद्र के आतंक के बारे में सचमुच कुछ पता भी है या नहीं। क्या तुम सोचते हो कि पुलु एक जहरीले समुद्री सांप के हमले से अपने को बचा पाएगा, या किसी ष्टार्क या डॉल्फिन द्वारा उसकी पूंछ पर मुंह मारने पर, उनसे तेज तैर कर बच पाएगा?"

"ओह, पर वह जल्दी ही समुद्र के जीवन के अनुसार अपने को ढाल लेगा। वह वहाँ बहुत से दोस्त भी बनाएगा, जैसे यहाँ ताल में हैं, और उन मित्रों की सहायता से बचेगा भी और फलेगा-फूलेगा भी।"

"यह किस प्रकार का तर्क है? कौन यह मानेगा कि जो तुम हमारे छोटे से ताल के बारे में कहते हो, वही प्रकृति के विष्ठाल संसार के बारे में भी सच होगा? एक कथा है, जिसे इंसानी दुनिया में कई जानते हैं, जिसमें एक कुएं में रहने वाले मेढक ने अपने कुएं को ही सागर समझकर अपने आपको मूर्ख सिद्ध किया। इसी तरह पुलु इस छोटे से ताल में पैदा हो कर और पल-बढ़ कर समुद्र में पहुंचने पर अपने आप को हंसी का पात्र बना लेगा।"

खैर, यह बहस कई दिनों तक चलती रही, जिसमें सारी मछलियां अपनी अपनी राय देने के लिये ष्टामिल हो गई। इधर वे अभी भी इस प्रष्ठन पर आपस में सिर मार रही थीं 'क्या पुलु को जाना चाहिए?' उधर विष्ठाल कछुए को समुद्र में ले जाने की तारीख का नोटिस भी जारी हो गया। यदि वे एक दो दिन में फैसला नहीं करती हैं, तो पुलु के जीवन का इकलौता अवसर उस ट्रक की टंकी के साथ हमेष्ठा के लिये चला जाएगा।

किसी भी मछली को मूल्यवान समय खोने के बारे में कोई चिन्ता न दिखती थी, और ऐसा लगता था जैसे वे पुलु की किस्मत को लेकर अपनी बाकी की सारी जिंदगी भी झगड़ती रहेंगी।

बेचारे पुलु की भावनाएं कभी उल्लास, तो कभी निराष्ठा के बीच झूलती रहीं, और धीरे धीरे प्रकृति के जटिल सागर में जोखिम उठाने का विचार भी उसके दिमाग में एक गर्म और भारी पत्थर जैसा महसूस होने लगा। जल्दी ही कई मछलियां गुस्से में आपे से बाहर होने लगीं, और सभी लोग बिना हल की बहस कर कर के थक गए, और ताल की हवा, यानी पानी, में एक चिड़चिड़ेपन का मिज़ाज भर गया। बहुत सा समय बरबाद करने के बाद, अचानक पुलु की आंखें गोल गोल नाचने लगीं, जैसे ही उसके थके हुए दिमाग में कुछ कौंधा।

"अरे हां! ऐ, सब लोग सुनो। हम लोग विवेकष्शील श्रीमान केकड़े को फिर से क्यों न बुलाएं और सुनें कि वो इसके बारे में क्या कहते हैं? इधर हम अन्तहीन विवाद में जुटे हैं, पर क्योंकि हम सब मत्सय हैं, हमारे ष्टारीर और दिमाग एक से हैं, और हम हमेष्शा उन्हीं पुराने निज़्कज़ों पर पहुँचते हैं। ष्शायद किसी अन्य की सलाह लेकर, जो हमसे अलग दिखता हो, तैरता और सोचता होख़."

बड़ा मैकरल सहमत होने वाला पहला जीव था। "अच्छा ख्याल है। वो केकड़ा दूसरों के बारे में अपनी निरंकुष्शा राय देने से नहीं हिचकता, पर ऐसा लगता है कि जो भी वह कहता है, पूरे मन से कहता है।"

"मैं इस मछलीघर से बाहर जाने में इतना खुष्शा होऊंगा कि उसके लिये मौत भी कोई बड़ी कीमत नहीं होगी," पुलु ने विचारमग्न होते हुए कहा, "पर मैं यह भी जानता हूं कि यदि मैं इस जगह को सहमति और प्रोत्साहन के बिना छोड़ दूंगा, तो मैं वहां सागर में भी कभी पूरी तरह खुष्शा नहीं रह पाऊंगा।"

इस समय तक सभी मछलियाँ कई दिनों के वाद-विवाद से इतना थक चुकीं थीं कि उन्होंने पुलु के स्वयं निर्णय लेने को ही ठीक समझा।

"आखिरकार, तुम्हारी अपनी नियति का मामला है, तो यह सबसे महत्वपूर्ण है कि तुम खुद अपने निर्णय से संतुज़्ट हो। दूसरों की सम्मति लेने की कोष्शिष्शा तुम्हें केवल थकाएगी ही। खैर, चलो सुनते हैं कि श्रीमान केकड़ा इसके बारे में क्या कहते हैं।"

केकड़ा प्लास्टिक की खरपतवार की एक डाल की छाया में बैठा हुआ अपने बड़े-बड़े पंजों से एक झींगे के टुकड़े-टुकड़े कर रहा था, जिसे भोजन के समय ताल में डाला गया था। जैसे ही पुलु ने उसे बताया कि उसकी सलाह की फिर से आवष्शयकता थी, वह खिसकता हुआ वहां आया जहां सारी मछलियां तैर रही थीं। अपने भाज़ण की ष्शुरुआत को ज्यादा प्रभावष्शाली बनाने के लिये उसने बुलबुलों की एक लम्बी लड़ी मुंह से निकाली।

"यह तो कुदरती बात है कि पुलु इस तालाब को छोड़ना चाहता है। वह युवा है, आष्शा से भरा हुआ है, और साथ ही संवेदनष्शील भी है। ये सब विष्शोज़ताएं उसे किसी भी कठिनाई का सामना करने के लिये ष्शक्ति देने को काफी हैं।"

अपनी आँखें पुलु की ओर सिकोड़ कर, उत्साहवर्द्धक तरीके से सिर हिलाते हुए वह फिर बड़े मैकेरल के चारों ओर इकट्ठी मछलियों के समूह से बोला, "और हां, यह भी वाजिब है कि जो उम्र में बड़े हैं वो पुलु को जाने देने के लिये अनिच्छुक हैं। यह प्रकृति का और सभी जीवित प्राणियों का एक आष्शचर्यजनक गुण है, चाहे इसे समझना अक्सर कठिन हो। जब आप बड़े हो जाते हैं, आप ज्यादा आसान रास्ता चुनते हैं और कठिनाइयों व जोखिमों से बचना चाहते हैं और मैं स्वयं भी उसी उम्र का हो गया हूँ। युवाओं के और बुजुर्गो के अनुभव बहुत अलग होते हैं। मैं कहता हूं, उसे जाने दो। बेमतलब की बहस से क्या फायदा? मुक्ति की आकांक्षा किसी कलह का कारण नहीं होनी चाहिए। मेरा ख्याल है तुम इससे सहमत होगे पुलु, क्यों?"

ये ष्शब्द पुलु के हृदय में खुष्शी के सोते के समान थे। सबको उल्लसित करते हुए-ताल में जीवों को और कांच के बाहर लोगों को-वह पानी में तेजी से ऊपर की ओर लपका और सतह से बाहर निकल कर उसने हवा में सात बार कलाबाजियां खाईं।

ख़.

गौडी के पास सूचना पहुंची कि एक ट्रक, जिसमें पानी की एक छोटी टंकी थी, गगनचुम्बी इमारत के प्रवेष्शा द्वार पर पहुंच गई थी। इस ट्रक को एक ठेले पर लादकर लिफ्ट के माध्यम से सौवीं मंजिल पर पहुंचाया गया। बहुत से उत्तेजित लोगों की भीड़ ट्रक को सड़क पर घेरे हुई थी और अन्य लोग मछलीघर की लॉबी में भर गए थे। विष्शाल कछुआ ताल में तैर रहा था, और पुलु उसके आगे के बाएं पैर के नीचे, नजरों से दूर छुपा हुआ था। मछलीघर का मैनेजर लॉबी में बाहर चिल्ला रहा था। तभी गौडी ने कुछ सुना जिससे उसकी सांस ऊपर की ऊपर, नीचे की नीचे रुक गई, और वह वास्तव में बीमार महसूस करने लगा।

"तुम लोग ये क्या कर रहे हो? इस टंकी में इतने सारे पानी का क्या काम है? तुम तो केवल उस विष्शाल कछुए

को ही तो ले जाओगे। यह सारा पानी निकालो।"

गौडी को झटका लगा। इससे उसे तो कोई समस्या नहीं थी, पर उसका दोस्त, युवा येलोटेल तब तक सांस कैसे लेगा जब तक वो टंकी में सफर करेंगे?

कछुए ने अपनी गर्दन झुकाकर पुलु की ओर एक नजर डाली। येलोटेल के चेहरे से ही दिख रहा था कि यह नई समस्या कितनी गम्भीर थी और गौडी ने सोचा श्टायद पुलु यह जल्दी ही स्वीकार कर ले कि उसका छूट पाना असम्भव है। विश्टाल कछुए को याद आया, किस प्रकार उसने ऐसा एहसास दिलाया था जैसे वह सर्वश्टाक्तिमान हो, और पुलु को आज़ादी दिलवाने का दिलासा दिया था, और अब उसके स्वयं के चेहरे से ही वह असहायता टपक रही थी, जो वह अन्दर से महसूस कर रहा था।

अभी भी उस क्षण की प्रत्याश्टा से अभिभूत, जब वह अपने आपको प्रकृति के बीच मुक्त पाएगा, पुलु ने गौडी के चेहरे को नम आंखों से देखा।

"ओह, प्यारे दोस्त, ऐसा लगता है कि उस टंकी में कोई पानी नहीं होगा और मुझे अपने को ले जाने के लिये तुम्हें परेश्टान नहीं करना चाहिए। हां, लेकिन मैंने पहले ही निर्णय ले लिया है। मैं जाऊंगा, चाहे मेरा कुछ भी हो। बस, अगर तुम मुझे पैर के नीचे छिपा लो, मैं कम से कम बड़े सागर तक पहुंचने में सफल हो जाऊंगा, चाहे मैं तब तक एक छुहारे की तरह पिचक ही क्यों न जाऊँ।"

"हूं, ठीक वही, जो मैंने सोचा था। तुम सचमुच एक मत्सय हो जिसमें बहुत पक्का इरादा है। लेकिन तुम जानते ही हो, कि बिना आक्सीजन के कोई बचने की आश्टा नहीं कर सकता, और तुम्हें सांस लेने के लिये पानी चाहिये।" गौडी आश्ठवस्त होना चाहता था कि पुलु सच में समझता था कि वह क्या करने जा रहा है।

"यही ठीक है। मैं वहां सूर्य के नीचे तैरने के लिये इतना उत्सुक हूं कि उसके लिये कोई भी खतरा बहुत बड़ा नहीं है, मौत भी नहीं।"

जब वे बात कर रहे थे, तो दूसरों को ऐसा प्रतीत होता था कि विश्टाल कछुआ अपने बाजू से बात कर रहा है। टंकी को पहियों पर, लोगों के श्टोर श्टाराबे और तालियों के बीच, ठीक ताल के सामने लाया गया। जब चारों ओर कैमरों के फ्लैश्टा चमकने लगे, तब मछलीघर का मैनेजर टंकी के सामने आया और उसने अपना गला साफ किया।

"अम्, हां, हां, श्टुक्रिया। आज हम इस विश्टाल कछुए को समुद्र में लौटा रहे हैं। ये एक छोटी बच्ची के आंसू थे जिन्होंने हमें द्रवित करके यह निर्णय लेने को बाध्य किया। ये आंसू उसके गालों से बहकर जब मीडिया और आम जनता तक पहुंचे, वे एक श्टाक्तिश्टाली तरंग बन चुके थे।"

मैनेजर ने टंकी में हाथ डाल कर अपने रुमाल से गौडी की पीठ पर कसे हुए धातु के नाम पट्ट को चमकाया। उसने फिर अपना गला साफ किया, इतनी जोर से कि किसी की बोलने की हिम्मत न हुई। "हम, निदेश्टाक मंडल के सदस्यों ने, एक स्वर में वोट दिया है कि इस कज़्ट झेलते कछुए को मुक्ति दी जाय, बजाय इसमें भूसा भरवाने के। मोटे हिसाब के अनुसार, इस तरह का और इस आकार का भूसा भरा कछुआ कम से कम दो हजारख़.'' उसके पास खड़े टैक्सीडरमिस्ट ने उसे इतनी जोर से घूरा कि वह अपने वाक्य के बीच में ही रुक गया। सारी रस्म अचानक खत्म हो गई और विश्टाल कछुए को एक मोटे रस्से से बांधकर झूलते हुए ताल के ऊपर उठा लिया गया। ओह, उसे कितनी तकलीफ हो रही थी। उसका इकलौता ख्याल पुलु की चिन्ता थी, और उसने अपना मुंह पानी से भर रखा था, जिससे सागर की ओर जाते समय येलोटेल को पानी से भिगोया जा सके। ताल के चारों ओर खड़े लोग सांस रोके और आंखें फाड़े देख रहे थे, क्योंकि उन्हें उम्मीद थी कि गौडी श्टायद कछुआ वाणी में कुछ बोल कर उन्हें सम्मानित करे। पर ऐसा तो होने नहीं वाला था, क्योंकि गौडी ने अपनी आंखें कस के बंद कर रखी थीं और उसका चेहरा तकलीफ दिखाने वाले बहुत ही विश्ठवसनीय भावों में जड़ था।

मछलीघर का मैनेजर भाज़ण देने के एक और मौके का लोभ न छोड़ सका। "समुद्र का एक जीव आज अपने घर लौट रहा है। वह यहां थल पर रहने वाले मानवों के बीच रहने लाया गया था और हमने अपने मनोरंजन के लिये उसको

उलट-पलट कर, और इस्तेमाल करके बहुत आनन्द लिया है। अब, इसके लिये आप तालियां बजा रहे हैं। सबको इस बात का एहसास है कि आपकी तालियां मेरे लिये नहीं है, या फिर गौडी के लिये भी नहीं हैं। यह लोगों की सक्रियता और काम की प्रष्ठांसा है।"

गौडी के लिये आगे एक और आष्ठचर्य था। जब उसे टंकी में नीचे उतारा जाने लगा, उसने पाया कि मैनेजर के आदेष्ठा के विपरीत वह पानी से भरी हुई थी। अगर आप सोच रहे हैं कि गौडी कितना खुष्ठा हुआ होगा, जरा कल्पना करें कि पुलु ने कैसा महसूस किया होगा। गौडी ने वह पानी थूक दिया जो वह मुंह में भरे बचा रहा था।

"यह कैसा रहा, पुलु! अब तुम महान सागर की ओर मेरे साथ जाओगे ही, इसमें अब कोई संष्ठाय नहीं बचा है। मैं अपने पूरे जीवन में इससे ज्यादा खुष्ठा नहीं हुआ हूँ।"

मारे उत्तेजना के पुलु के मुंह से तो आवाज ही नहीं निकल रही थी, पर उसने पीठ का पंख उल्लास में कम से कम तीस बार लहराया।

ज्यादा समय भी न लगा, जब इन दो दोस्तों को ले जाने वाली टंकी समुद्र के किनारे पहुंच गई। ऊपर आकाष्ठा बहुत स्वच्छ नीला था, और सागर के ऊपर ग्रीज़्मकालीन बादलों के विष्ठालकाय स्तंभ धीरे-धीरे तैर रहे थे। ष्टीतल, नमकीन समुद्री बयार ने गौडी की स्मृति को छेड़ा और उसका हृदय पुरानी यादों व संतोज़ से प्रफुल्ल हो गया।

यहाँ समुद्र तट पर लोगों की एक और भीड़ थी। वे सब उस विष्ठाल कछुए का इंतजार कर रहे थे जिसे आज़ाद किया जाना था, और आखिरी रस्म अदायगी चालू होने को थी। इस अवसर के लिये एक तम्बू गाड़ा गया था और कंध ों पर पट्टियों द्वारा बड़े बड़े साइन बोर्ड लगाए लोग बिखरे हुए थे।

'प्रकृति संरक्षण संघ - प्रकृति व ईष्ठवर के जीवित प्राणियों के विनाष्ठा विरोधी समिति।'

भीड़ में और भी साइन बोर्ड थे, लेकिन गौडी नहीं देख पाया कि उन पर क्या लिखा था। अब फिर भाज़णों का समय था, और उन विष्ठोज़ चीख चिल्लाहट और भंगिमाओं का, जो केवल इंसान ही पसन्द करते हैं। हालांकि इस बार की वक्ता एक मध्यम वय की दयालु महिला थी। "इस विष्ठाल समुद्री कछुए गौडी के लिए अपने प्यार को व्यक्त करने के लिये हम यहां आज एकत्र हुए हैं। हमारे ष्टाहर के लोगों की इतनी लम्बी सेवा करने के लिये तुम्हारा बहुत धन्यवाद, गौडी। हम तुम्हारे आकर्ज़ण के बारे में क्या कह सकते हैं, जिससे तुमने पिछले चालीस वर्ज़ों में अनगिनत बच्चों को बेहद खुष्ठी प्रदान की है? ओह, क्या सिर्फ इस ख्याल से ही तुम्हारा हृदय इस जीव के प्रति प्रेम से नहीं भर उठताख़."

वह बेचारी महिला सचमुच ही भाव विभोर हो उठी और उसकी आवाज़ आसुओं में फंसकर खत्म होती गई। कई हाथों ने उसे सहारा देकर मंच से नीचे उतारा।

टंकी को सावधानी से धकेलते हुए पानी के किनारे पहुंचाया गया। 'अब क्या?' गौडी ने सोचा, जैसे ही एक प्यारी सी दिखने वाली, गोल गोल चष्ठमें पहने, एक बूढ़ी औरत उसके पास आई। उसके एक हाथ में एक चमचा था और दूसरे में बोतल। उसने चमचे से बड़े कछुए का मुंह खोल दिया और-अरे यह क्या? और फिर, अरे दैया! अपने हाथ की बोतल से उसने गौडी के मुंह में चावल की ष्टाराब उड़ेल दी।

जाहिर है कि गौडी ने अपनी जिन्दगी में ऐसा कुछ, कभी चखा न था। लोग, गौडी की परेष्ठानी की ओर ध्यान दिये बगैर, इस चीज़ को पीने लगे, गिलास पर गिलास, बार बार बोलते हुए-"गजब, बहुत बढ़िया!" और इसी तरह के दूसरे ष्टाब्द भी। गौडी, जिसका सिर ष्टाराब से इस अप्रत्याष्ठित परिचय के बाद घूम रहा था, समझ नहीं पाया कि वे 'गजब!' किस चीज़ के लिये कह रहे थे। वह तो बस पूरी पूरी कोष्ठिाष्ठा में लगा था कि पुलु सावधानी से उसके पैर के नीचे छुपा रहे।

आखिरकार गौडी को टंकी के ऊपर उठाकर पानी में रख दिया गया। जैसे ही एक लहर उसकी पीठ के ऊपर बह कर आई, वह समुद्र की ओर आनन्द से तैर कर बढ़ गया।

ऊपर खूबसूरत नीले आकाष्ठा में, गर्मी का देदीप्यमान सूरज, इतनी ष्टाक्ति से चमक रहा था जितना गौडी ने कभी न देखा था। बादलों की वे फूली-फूली मीनारें धीरे-धीरे बड़ी होती गईं और उस अन्तहीन सागर के ऊपर तैरती चली गईं; महासागर में दूर तक।

"आहह, यही ज़िन्दगी है।"

जैसे ही पहली लहर उसके ऊपर टकराकर लौटी, गौडी पानी में उमंग से नाचने लगा। उसका हृदय पुन: प्राप्त आनन्द के अवर्णित आभास से सराबोर हो उठा। अपने रोमांच में, गौडी अपने खोल और पैर के बीच फंसे पुलु के बारे में तो भूल ही गया था, पर जैसे ही उसने जीत के उद्घोज़ में अपने चारों पैर ऊपर उठाये, युवा येलोटेल तेजी से समुद्र के पानी में लपका। पुलु की भी प्रसन्नता का पारावर न था; इतना, कि उसने गौडी के सामने पानी में सात बार कलाबाजियां लगाईं। विष्ठाल कछुए का मुंह एक चौड़ी मुस्कान में खिल गया, और वह पुलु से इतने नवीन उत्साह व कोमलता से परिपूर्ण वाणी में बोला, जो कभी एक कछुए की आवाज में सुनी न गई होगी।

"यह है वो, असली महासागर। देखो, कैसे प्रकृति तुम्हारी आँखों के सामने अनन्त विस्तार में फैली हुई है?" येलोटेल भी जोष्ठा से भरा गोल गोल चक्करों व टेढ़ी मेढ़ी लकीरों में तैरता रहा।

"अरे भाई, पुलु, अपने तैरने में इतने मस्त न हो जाओ कि आसपास के नज़ारे का आनन्द लेना ही भूल जाओ।" गौडी ने कहा, और फिर पानी में कुछ गहरे उतर गया। "हमने कर दिखाया, आखिरकार, हमने कर दिखाया। उस मछलीघर से हम छुटकारा पाने में सफल हो गए, जहाँ लोग हमें हमारी इच्छा के विरुद्ध ले गए थे। लोग कितने बेवकूफ जानवर होते हैं। यदि वे मेरे साधारण से नाटक से इतनी आसानी से बेवकूफ बन जाते हैं, तो हम पष्ठुओं और वनस्पतियों को उन्हें दिखाने के लिए ज्यादा कुछ करना चाहिये। मैं कहता हूं, उन्हें कोई सबक सीखने की जरूरत है। खैर, हम यहाँ पहुंच गए। हमने कर दिखाया। याहू!"

बड़ा कछुआ अपार हर्ज़ के साथ तैरता रहा और कई बार उसने अपने खोल को अजीबोगरीब तरह से हिलाया। पुलु भी पानी में तैरता रहा, कुदरत के इस असली सागर में चारों ओर देखता हुआ, जब तक कि उसे खुष्ठी से चक्कर न आने लगा।

"हां, यही जीवन है। पुलु, मेरे दोस्त, क्या तुम जानते हो कि मैं असल में कितना खुष्ठा हूँ? इस आनन्द के मौके पर मेरी वह करने की अतीव इच्छा हो रही है जो मैंने पहले कभी किसी के सामने नहीं किया-कछुआ स्नान। वहाँ मछलीघर में, जब इतने लोग मेरी तरफ ताकते रहते थे, मुझे हमेष्ठा बहुत ष्टार्म महसूस होती थी, पर यहाँख़ विष्ठवास मानो, खुष्ठा हूँ मैं!"

विष्ठाल कछुआ इधर उधर देखता रहा जब तक कि उसे पानी के नीचे एक चट्टान की दीवार की छाया में एक रेत का टुकड़ा नज़र न आया। वह धीरे धीरे तैरता हुआ सागर के तल पर पहुंच गया।

पुलु तैरकर पास गया "गौडी, तुम अब क्या करने जा रहे हो?"

"अभी तो मैं अपने ष्टारीर को ष्टुद्ध करना चाह रहा हूँ," गौडी ने कहा, "और लोगों की दुनिया में रहने से इकट्ठी हुई सारी गंदगी धोने के लिये मैं यह रेत में करने वाला हूं।"

गौडी बार-बार पलटता रहा, और अपने ष्टारीर को रेत में रगड़ता रहा। बेष्ठाक पुलु यह देख बहुत हैरान था, पर जब उसने देखा कि गौडी रेत स्नान करते समय कितना प्रसन्न और संन्तुज़्ट महसूस कर रहा है, पुलु स्वयं भी खुष्ठा हुए बिना न रह सका।

"बेहतर है कि मैं अब सतर्क हो जाऊँ। यदि कोई ष्टार्क घूमती हुई इधर कहीं आ गई तो फिर मैं गया ही समझो। आह, पर इससे कितनी ताज़गी आई!"

वापस ऊपर आकर गौडी एक बार फिर तैरने लग गया, और येलोटेल उसके बगल में तैरता रहा। कुछ घंटे बाद वे एक खाड़ी में पहुंचे, और जैसे जैसे वे तट के करीब आते गए, लहरें कहीं ज्यादा ष्टाक्तिष्ठाली हो गईं। लहरों में समुद्री पौध तैर रहे थे, पर इस वनस्पति के साथ अन्य चीज़ें भी थीं।

"गौडी यहां हम प्रकृति से घिरे हैं-यही कुदरत है, है न? अह, तो यही वह महासागर है जिसके बारे में तुमने मुझे अक्सर बताया है, ठीक है न?"

"हां, ठीक है," "गौडी ने विष्ठवास के साथ कहा।"

“कुछ समय से मुझे कोई चीज़ परेशान कर रही है,” पुलु ने कहा, “जब मैं सांस अंदर या बाहर करता हूं, यहां मेरे गलफड़ों में दर्द होता है। हां, जब भी यह पानी मेरे गलफड़ों से होकर गुजरता है, तब! और इसका अजीब सा स्वाद भी है। गौडी, मैं हैरान हूँ कि रेत से रिसती हुई यह चिपचिपी, बदबूदार चीज़ क्या हो सकती है? ओह, वह गंदी बदबू – छि:! क्या सागर के पानी का स्वाद हर जगह ऐसा ही होता है, गौडी?”

पुलु ने अपनी आँखें मोहक ढंग से नचाईं जब उसने अपने दोस्त विशाल कछुए को अपनी परेशानी व्यक्त की। गौडी ने अपनी आवाज में थोड़े से आश्चर्य के पुट के साथ जवाब दिया।

“अब जब तुम कह रहे हो, हाँ, सचमुच ही कुछ अजीब सा होता प्रतीत होता है। वास्तव में, यहाँ पर यह चिपचिपा कीचड़ जैसा क्या है?” कछुए ने खुद ही उलझन में अपना सिर कई बार हिलाया। “पुलु, मेरे दोस्त, जब मैं मछलीघर में चालीस साल पहले गया था, तो सागर में इस तरह का कुछ भी न था। मैं तुम्हें बता नहीं सकता कि यह क्या है, पर मुझे भी साँस लेने में दिक्कत हो रही है। इससे ठीक यहां पर दर्द होता है।” गौडी ने अपने पेट को अपने आगे के पैरों से रगड़ा। दोनों दोस्त मुड़कर उस खाड़ी से बाहर की ओर तैरने लगे। “यह तो बहुत घिनौना है!” गौडी भन्नाया। “हर कहीं, जहां नजर जाती है? और उस चटख हरे वनस्पति के जंगल का क्या हुआ जिसमें मैं खेला करता था? यहां तो वह ज़रा भी नहीं दिखती!” वे धीरे धीरे आगे बढ़ते रहे, और अपने चारों ओर देखते रहे।

समुद्र का तल मृत क्लैम की सीपियों से पटा पड़ा था, जो हाँफते हुए मुखों की तरह खुली पड़ी थीं। उस घिनौने चिकने रिसाव के कारण गौडी और पुलु छींकने और पलकें झपकाने लगे। पानी में सूर्य की तिरछी पड़ती किरणों ने उन्हें मलिन रंगों वाली, रेत के ऊपर तिरछी पड़ी, खरपतवार दिखाई और जब वे उसे छूने के लिए तैरे, वह चिपचिपी और निर्जीव सी महसूस हुई।

विशाल कछुआ जैसे जैसे इन चीज़ों को एक के बाद एक देखता गया, उसे अपना दिल बैठता हुआ महसूस हुआ। उसने पुलु को उस अद्‌भुत सागर के बारे में बताने की हर संभव कोशिश की थी, और अब उसके पास इस समुद्र की, जिसमें वे अपने आप को पा रहे थे, व्याख्या का कोई तरीका नहीं था।

“पुलु, मैं खुद इसे नहीं समझ पा रहा हूँ” गौडी की आवाज थरथरा रही थी जब वह बोल रहा था, “पहली बात, यहां कोई भी जीवित प्राणी नज़र नहीं आता, है न? सागर का तल केवल मरी हुई चीज़ों से भरा पड़ा है और उस गिलगिली, तैलीय वनस्पति से मेरे पेट में मिचलाहट जैसी लगती है। लगता है जैसे मुझे उल्टी ही आ जाएगी।”

पुलु ने जब गौडी के आत्मविश्वास को गिरते देखा तो वह भी आशंका से घिर गया, पर उसके पास, और कोई भरोसा करने के लिये नहीं था। इसके अलावा, वह जानता था कि विशाल कछुआ उसे असली प्रकृति का सर्वोत्तम रूप दिखाने की भरसक कोशिश कर रहा था। इसलिये येलोटेल ने उसे उत्साहित करने का प्रयास किया। अपने पंखों को कुछ बार झटक कर, उसने अपनी सर्वाधिक प्रसन्नचित्त आवाज में कहना शुरू किया “दोस्त गौडी, इतना ज्यादा निराश न हो। महासागर निश्चय ही बहुत विस्तृत जगह होगी, जो सदा फैली चली जाती है। अगर हम और दूर जाएं, वहां, जहां सागर का पानी अधिक गहरा है, अवश्य ही हमें वह समुद्र मिलेगा जिसके बारे में तुमने मुझे बताया है। मुझे याद है कि तुम उस आज़ादी के बारे में बताते थे जिसमें कोई, जहां मर्जी वहां तक, तैर कर जा सकता था। तो अगर यह जगह रहने के काबिल नहीं है, तो हम आगे जा सकते हैं।”

पुलु को थोड़ी सी मछलीघर की याद सताने लगी थी, जब उसने उन घंटों के बारे में सोचा जब गौडी और वह महासागर के बारे में बात किया करते थे।

“हाँ, अरे हाँ, पुलु, जैसा तुम कहते हो वैसा ही है। मेरे दिमाग से यह महत्वपूर्ण बात निकल ही गई थी।” कछुए के चेहरे पर मुस्कान लौट आई और वह फिर से अपनी चिर परिचित, आत्मविश्वास युक्त आवाज में बोलने लगा।

“जितना ज्यादा तट से दूर कोई जाता है, उतनी ही दूर वह लोगों की दुनिया से होता जाता है। और महासागर सचमुच विराट है, जैसा कि मैंने मछलीघर में कहा था। शान्त, नीला सागर, सूर्य की सुहानी गर्म किरणों में नहाया हुआ; स्वस्थ, चमकती, वनस्पति, पानी में तिरती हुई–मछलियां स्वर्गिक सागर तल के ऊपर उमंग से तैरती हुई।”

"तैरो, तैरो, सागर में दूर, और दूर तक, मनुज़्य के हाथों और उसके क्रिया कलापों की पहुँच के परे! हम मछलीघर से जितनी ज्यादा दूर जाएं, हमारे लिये उतना ही अच्छा होगा। प्रकृति हमारा इन्तजार कर रही है। चलो तैरें, तैरें और तैरें!"

अब तक गौडी वापस अपने बेहतर रूप में आ गया था, और वह एक गम्भीर, पर आष्ठावान, चेहरे के साथ तैरने लगा, जैसे कि एक सेनापति घर लौटने के वक्त अपनी टुकड़ी का नेतष्टत्व करता है। पुलु भी, फिर से इस बात से उत्साहित हो गया कि वे जितना मर्जी दूर दूर तक तैर सकते थे-ओह, उस छोटे से घुटन भरे मछलीघर ताल से कितना भिन्न! और वह विष्ठाल कछुए के पीछे पीछे चाव से तैरने लगा।

कई घंटे बीत गए जब तक ये दोनों तैरते रहे। अब तक ये जमीन से बहुत दूर आ चुके थे, पर अभी भी आसपास चीजें जरा भी बेहतर न हुई थीं। अभी भी उनके नीचे गंदगी भरा समुद्र तल फैला था, और जब वे ऊपर सतह तक आते, तो वहां उन्हें पानी के ऊपर किसी तरह का काला तेल, एक रबड़ की चादर के समान, फैला नजर आता। नीचे समुद्र तल पर अनगिनत क्लैम और बड़ी ष्टोलफिष्ठा पड़ी थीं, जिनके खोल मृत्यु में चौड़े खुले पड़े थे, और पानी के बिरले ही कोई मछली तैरती मिलती थी। प्लास्टिक के चिथड़े पानी में यहां वहां तैर रहे थे। गौडी ने एक पारदर्ष्ाी प्लास्टिक बैग को जैलीफिष्ठा समझा और झपट कर मुंह में डाल लिया।

"आक थू!" उसने उलटी की और व्यथापूर्वक हाँफने लगा। "यह तो बिल्कुल भोजन जैसा न था। मुझे लग रहा था कि इसका बहुत अजीब सा स्वाद है, पर तब तक मैं उसे निगल चुका था। तब भी मेरा पेट अभी तक खाली है।"

खुले समुद्र में अपनी इस पहल पर विष्ठाल कछुए को इतनी सारी समस्याओं से जूझते देख, पुलु ज्यादा, और ज्यादा व्यथित होता गया। उसके चेहरे से दिख रहा था कि वह कितना थका और चिंतित था, और जब वह बोला, वह कमजोरी से हांफ रहा था।

"गौडी, ओह गौडी, जब से हमने तट छोड़ा है, जैसा तुमने कहा, हम लगातार तैरते रहे हैं। पर क्या हो रहा है? हमें अभी कितनी दूर जाना होगा, इससे पहले कि हम उस अद्भुत सागर तक पहुंच पाएंगे, जिसकी तुम बातें बताते हो? मेरा पेट तट पर पड़ी गेंद जैसा खाली हो चुका है। जानते हो, जब से हमें मछलीघर से ऊपर उठाया गया, मैंने कुछ भी नहीं खाया है। प्रकृति के इस सागर में कहीं कोई भोजन नहीं है। मुझे बताओ, वास्तविकता में प्रकृति क्या है?"

पुलु ष्ठिकायत करता रहा, जब तक कि अचानक गौडी गुस्से से फट न पड़ा। उसने अपना विष्ठाल खोल ऐसे हिलाया जैसे कि उस छोटे येलोटेल को डरा रहा हो, फिर मुंह से गुस्से भरे बुलबुलों की फुहार छोड़ी।

"बंद करो अपना मुंह, पुलु - तुम बड़बड़ाने वाली मुसीबत से ज्यादा कुछ नहीं हो! मैंने उस वक्त तुमसे वायदा किया था कि मैं तुम्हें एक खूबसूरत स्थान पर ले जाऊँगा, ठीक? क्या तुम्हें मेरे वायदे पर संदेह है? तुमने कहा था कि यदि केवल तुम सागर में जा पाओ, तो उसके लिये तुम कैसे भी कज़्ट झेलने को तैयार हो। क्या वह सब तुम अभी से भूल गए?"

गौडी का चेहरा गुस्से से विकृत था और क्रोध अभी भी उसके पेट में कांटे सा चुभ रहा था। "यह क्या है? मैं कहता हूं, तुमसे मैं केवल ष्ठिकायत और रोना-धोना सुनता आया हूं। मुझे तुम्हें अपने साथ लाने की जहमत कतई नहीं उठानी चाहिए थी।"

विष्ठाल कछुए के इस क्रोध भरे उद्गार से सहम कर, पुलु ने जल्दी से जवाब दिया, "कृपया मुझे माफ कर दो गौडी। मेरा पेट खाली और खाली महसूस होता जा रहा था, और फिर मैंने तुम्हें वह प्लास्टिक बैग खाते देखा। तुम उस समय सचमुच तकलीफ में दिख रहे थे, और उससे मुझे भी बहुत बुरा लगने लगा।"

गौडी ने सुना, पर जवाब नहीं दिया। वह केवल तैरता रहा, समुद्र में और अधिक दूरी तक, क्योंकि उसका इकलौता ख्याल था उस प्रकृति तक पहुंचना जो उसकी स्मष्टति में बसती थी। पुलु ने उसके साथ साथ तैरने का भरसक प्रयत्न किया, यद्यपि वह इतना भूखा था कि उसकी आँखें चक्कर खा रही थीं। और अधिक भूखे और थके होने पर उसके सामने मछलीघर के सुखी दिनों के दष्टष्टय घूमने लगे।

'मछलीघर का ताल-कितनी सुखद जगह थी।' पुलु का ष्टारीर जैसे उसके मन से कह रहा था। 'ठीक समयानुसार, भोजन डाल दिया जाता था-इतना ज्यादा कि एक बार में खाया न जा सके, और पानी भी, ओह, वह भी यहाँ की तरह

कभी ठंडा, कभी गर्म न था। वह हमेष्ठा बहुत आरामदेह तापमान पर रहता था। और सब लोग खुष्ठी खुष्ठी, साथ साथ खाते थेख़।'

'आह, मैं अपने मछलीघर वापस जाना चाहता हूँ,' पुलु अपने आप से फुसफुसाया, 'मैं इस प्रकार की कुदरत से थक चुका हूं।' उसी वक्त, गौडी भी अपने आप से बोल रहा था। वह धीमी भुनभुनाहट जैसा भले ही सुनाई देता हो, पर वह असल मे गम्भीरता से सोच रहा था। यहाँ तक कि वह पुलु के बारे में भी पूरी तरह भूल गया था। उसने अपने सिर को जोर से कुछ बार हिलाया, जैसे कि अपने दिमाग को साफ करने की कोष्ठिाष्ठा कर रहा हो।

'हूं, यह क्या है, क्या हो गया है? समुद्र तल कब से इतनी दु:स्सह गंदगी में बदल गया है? जब मैं चालीस साल पहले मछलीघर में गया था, हां, अवष्ठय ही तब ऐसा कुछ नहीं था। मेरे सागर में इस तरह की तब्दीली किसने ला दी? किसने, कैसे, क्यों?'

गौडी का सिर अचम्भे से घूमा जब उसने अपनी आँख के कोने से कोई विष्ठाल वस्तु देखी।

वह एक जैलीफिष्ठा थी, असल में उनका एक बड़ा सा समूह था, पर ये ऐसी जैलीफिष्ठा थीं जैसी उसने कभी भी न देखीं थीं। उनकी आकृति तो असामान्य नहीं थी, पर वे उसकी याददाष्ठत से सौ गुनी बड़ी थीं, और लाल लाल चकत्तों से ढकी थीं। जब गौडी ने उन्हें विष्ठालकाय छातों के समूह की तरह बहते देखा, तो उसके दिमाग में बहुत ही अजीब ष्टाब्द कौंधे-सागर का कब्रगाहख़ख़

'अहहह, मेरा पेट पूरी तरह से खाली है। मेरा भोजन-समुद्री वनस्पति और छोटी मछलियां, कहीं नहीं है, कुछ भी नहीं है। और मुझे इस भारी भरकम खोल को उठाए उठाए घूमना है। यदि मैंने जल्दी ही कुछ नहीं खाया, मैं केवल नीचे डूब कर समुद्र तल पर उल्टा पड़ जाऊंगा।'

नीचे दिखते समुद्र तल से ऐसा कोई संकेत न मिला कि जैसे उसने गौडी की दुर्दष्ठा के बारे में सुना हो या परवाह की हो। वह केवल वहां खामोष्ठी से फैला रहा, मरी मछलियों के कंकालों से पटा हुआ।

'ओह मेरे भगवान, स्थिति अगर यहां तक पहुंच चुकी है, तो मुझे मछलीघर में ही होना चाहिए था। अगर मैंने इतनी जल्दबाजी न की होती, यह नाटक करने में कि मैं बीमार हूं ताकि यहां भेजा जाऊं, तो मैं अपना जीवन आराम से बिता सकता था। मुझे किसने यह सब करने को उकसाया? वह मछलीघर-आह, वो लोग मेरे प्रति सचमुच दयावान थे। खाने के लिये इतना भोजन और पानी कभी भी इतना ठंडा नहींख़'

अपनी आखिरी बची हुई ष्टाक्ति के साथ, विष्ठाल कछुआ दक्षिणी द्वीपों की ओर बढ़ने लगा। वह और पुलु धीरे-ध ीरे चुपचाप अंग हिलाते बढ़ते रहे, जब तक कि वे एक विष्ठाल द्वीप के कोने के नज़दीक नहीं पहुंच गए। जैसे वे तैर कर उसके पार जाने लगे, उन्हें पानी में से कुछ बाहर ऊपर उठा नज़र आया, जो एक भीमकाय चिमनी जैसा दिखता था, और वे उसके जितना नजदीक जाते गए, पानी उतना ही ज्यादा गर्म होता गया।

''यहाँ क्या हो रहा है? सागर यहाँ गर्म स्नान टब जैसा बन गया है क्या?''

पानी में मरी मछलियां धीरे-धीरे हिल रही थीं, लहरों के साथ और समुद्र तल के ऊपर बहती हुई, और उनसे बहुत ही सड़ी दुर्गन्ध आ रही थी। मरी मछलियों के बीच में सैकड़ों बैंगनी जैलीफिष्ठा तैर रही थीं।

'मैं इतना भूखा हूं कि मैं सोच भी नहीं पा रहा कि क्या करना चाहिये। क्या यही मेरी नियति है, कि भूख से तड़प कर मर जाऊँ?' गौडी का सिर उलझन में आगे पीछे हिला, और जब उसने पीछे देखा, उसकी आंख को पुलु नजर आया, उसके पीछे, जितनी बहादुरी से वह तैर सकता था, उतने से तैरता हुआ, और उसका चेहरा एक मासूम, लगभग प्रसन्नचिन्त भाव से ढका हुआ था। कछुआ धीमे हो गया और पुलु को ताकते हुए उसके सामने के पैर धीरे चलने लगे।

'हूंऽऽ, यह येलोटेल कितना स्वादिज़्ट मालूम होता है। वास्तव में, बेहद मजेदारख़ हैं? अरे, ठहरो-ओह, यह मैं क्या सोच रहा हूँ? उस मछली का मैं बड़ा ऋणी हूं। जब मैं मछलीघर में इतना दुखी था, उसने जो कुछ मेरे लिये किया, मैं कैसे भूल सकता हूं। मैं पागल हूं, अगर ऐसा ख्याल भी मेरे मन में आए तो। ओह, पर दूसरी ओर मैं कहूंगा कि मैंने उसका कर्ज अच्छी तरह चुका दिया है। क्या मैंने उसे टंकी से बाहर निकाल कर यहां असली सागर तक नहीं पहुंचाया? उसके लिये

मैंने जरूरत से ज्यादा भी किया है, तो फिर मैं उसका इतना ऋणी क्यों महसूस करूं? मैं क्यों संकोच कर रहा हूँ-आखिरकार, प्रकृति की दुनिया मेंख्र'

गौडी तैरता रहा, अपने आप से बड़बड़ाता हुआ और उसका चेहरा गहरे ध्यान के भाव में जड़ था। 'जंगल का नियम ही सागर का नियम है। शक्तिशाली कमजोर का शिकार करते हैं और स्वयं को जीवित रखने के संघर्ज़ में कुछ भी चलता है। मुझे रोकने वाला क्या है? जिन्दा रहने के लिये तो जीव को अपने दिये हुए अंडे भी खाने पड़ सकते हैं। और फिर उस ऑक्टोपस की चिट्ठी मुझे मिली थी, जिसने लिखा था कि जिस समय वह भूख से आकुल था, उसे अपनी खुद की कई भुजाएं खानी पड़ी थीं। योग्यतम का ही जिन्दा रहना, केवल शक्ति सम्पन्न का ही बचना जहां आधार हो, वहां जीव को जिन्दा रहने के लिये वो सब करना चाहिये जो करना पड़े। बेशक, यही सही है। यही प्रकृति का नियम है।'

गौडी के मुख से लार की एक धारा बहने लगी, और उसकी आँखें एक पागल दु:साहस से चमकने लगीं। पुलु, जिसे कोई अहसास न था कि विशाल कछुए के दिमाग में क्या गुजर रहा है, उसके बगल में खामोशी से तैर रहा था। येलोटेल, भोजन के एक कौर के भी बिना, आगे से आगे तैरते हुए थक गया था।

"ओह गौडी, विशाल कछुए गौडी, मेरे लिए बहुत हो गया। मैं आगे जाने के लिये बहुत ज्यादा थक चुका हूँ। मुझे माफ करो, पर मुझे यहां थोड़ा सा आराम करना पड़ेगा-यह पानी भी मुझे नहीं सुहाता है-यह बहुत गर्म है और इसका तीखा स्वाद और ज्यादा तीखा होता जा रहा है।"

इस पर गौडी फिर से सोचने लगा। 'अह, अह, इस पानी के साथ कुछ गड़बड़ है। पुराने दिनों में, जितना मुझे याद आता है, सागर का पानी स्वाद में एक प्रकार से मृदुल और मीठा था। इसके विपरीत यह पानी शीशे सा कठोर और तीखा सा प्रतीत होता है और मेरी जीभ को एक अजीब स्वाद से झनझनाता है।'

"बस थोड़ी दूर और, जल्दी ही, जल्दी ही," पुलु की आवाज पीछे से आई। वह अपनी आवाज़ गौडी के कानों तक पहुंचाने की कोशिश में हाँफ रहा था। "इसी आशा और इसी दिलासे पर मैं अभी तक चलता रहा, गौडी। पर अब यह इतनी बार दोहराया जा चुका है कि अर्थहीन हो चुका है। इस 'विस्मयकारी प्रकृति' से मैं आजिज आ चुका हूं-इसे तुम्हीं रखो। मैं कितना बड़ा मूर्ख था कि मैंने मछलीघर के ताल में हर किसी की सलाह पर ध्यान नहीं दिया।"

गौडी ने अपना सिर जोर से घुमा कर पुलु को घूरा, "तुम कृतघ्न छोटे से जीव, तुम क्या कह रहे हो, और किससे? चाहे कुछ हो जाए, तुम मेरे साथ रहोगे-तुमने गंभीरता से यह शपथ ली थी, कि नहीं? अब तुम अपने वचन का क्या करने वाले हो, बोलो? मैंने अपने वचन को निभाया, और जितना मेरी शक्ति में था, उतना, तुम्हें प्रकृति के संसार को प्रत्यक्ष दिखाने का प्रयत्न किया। ठीक है, जो चाहे करो - पर पुलु, तुम्हें अपना वचन तोड़ने की जिम्मेवारी लेनी पड़ेगी, और उसका परिणाम भुगतना पड़ेगा।"

पुलु का शरीर गुस्से से कांपने लगा, और उसने शब्दों की एक तेज झड़ी वापस फेंकी। "जिम्मेवारी? जिम्मेवारी, यह कहता है! हे ईश्वर, यह किस चीज़ की बात कर रहा है? ओह, अवश्य ही मैंने वहाँ मछलीघर में वायदा किया था, गौडी, पर तुम्हारे वायदे का क्या हुआ? एक वायदा दूसरे वायदे की सत्यता पर ही टिक सकता है। क्यों, इस तथाकथित प्रकृति को देखो जिसमें तुम मुझे ले आए हो-यह एक मृत्यु के सागर से बढ़कर कुछ नहीं है! इतनी घिनौनी सड़ी वनस्पति को देखकर मुझे मछलीघर की उस प्लास्टिक वनस्पति की ही आकांक्षा होती है। और वो बिजली की बत्तियां, जिनका तुम उपहास करते थे-कम से कम मुझे गर्म रखती थीं।"

"हाँ, और भोजन के बारे में क्या? तुमने कहा था कि मुझे केवल अपना मुंह भर खोलना पड़ेगा और वह प्लैकंटन से भर जाएगा, पर यहां तो मरी हुई मछलियों के टुकड़ों के अलावा स्वाद लेने के लिये कुछ भी नहीं है। मैंने सोचा था कि मैं इस समुद्र में बहुत से मित्र बना पाऊंगा, पर मैं अभी तक भीमकाय विकृत जैलीफिश ही देख पाया हूं। मैं कहता हूं, कौन आतंक के बीच रहना चाहता है? अगर आजाद होने का अर्थ भूख और भुखमरी है, तो फिर मैं नियमित भोजन और यह ज्ञान कि क्या मिलने वाला है, का ही चुनाव करूंगा- तब भी, जब मेरे चारों ओर काँच की दीवारें हों।"

गौडी के चेहरे पर एक रहस्यमयी मुस्कान उभर आई। फिर उसने अपना सिर झुकाया और अति कोमल आवाज में

बोला।

"ओह, बिल्कुल, हमने वास्तव में एक दूसरे से वायदे किये थे। दोस्त येलोटेल, मेरा वायदा अभी तक सच्चा साबित नहीं हो पाया है, पर तुम अपने रास्ते पर जाना चाहते हो क्योंकि तुम भूख से त्रस्त हो। ठीक है, जैसा चाहो, वैसा करो। मुझे सचमुच खेद है कि तुम्हें मेरे शब्दों से चोट पहुंची। शब्द केवल मुंह से नहीं, बल्कि हृदय से आने चाहिये।"

गौडी अब बिल्कुल आगे ताक रहा था और पुलु को देखने के लिये एक बार भी पीछे नहीं मुड़ा।

"वैसे पुलु, क्या मैं एक क्षण के लिये तुमसे यहाँ आने को कह सकता हूँ? अगर हमें अलग ही होना है, तो कुछ ऐसा है जो मैं तुम्हें बताना चाहता हूं। आह, मुझे याद आता है कि वहां मछलीघर ताल में तुम, किस प्रकार मेरे सिर के पास नाचते थेख़."

"लेकिन गौडी, यह सागर मछलीघर की तरह नहीं है। अब यहां कोई तुम्हें सुनकर मुसीबत पैदा करने वाला नहीं है, तो अपनी बात जोर से कहो।"

"ओ मेरे प्रभु, मैं बिल्कुल थक गया हूँ, और जोर से बोलने की मुझ में शक्ति नहीं है, और फिर यह मेरी उम्र का तकाज़ा भी हो सकता है। जानते हो, मैं यूं भी ऊँचा सुनता हूं।"

खैर, यह बात पुलु को आसानी से समझ में आ गई। "मुझे माफ करो गौडी। असल में तुमने अभी हाल में जो चीज़ें कही हैं उनसे मैं कुछ डर गया हूं, पर आखिरकार हम दोनों ही बहुत तनाव से गुजर रहे हैं। ओह, और मुझे लगता है कि यह तुम्हारे लिये तो और भी कठिन होगा क्योंकि तुम्हें इस बड़े से, भारी खोल को उठाए उठाए फिरना होता है।"

"ठीक है, मैं तुम्हारे नजदीक आ जाता हूं, ताकि तुम्हारी बात सुन सकूं और तुम्हें अपना नृत्य एक बार फिर दिखाता हूं। मैंने कहीं सुना है कि केवल विपदा में ही मित्रता और विश्वास की परीक्षा होती है।"

यह कहकर पुलु शांति से तैरता हुआ पास आया जब तक कि वह ठीक गौडी के चेहरे के सामने न आ गया, और वहाँ उसने अपना सात पलटियों वाला कलाबाजी नृत्य चालू किया।

इससे पहले कि येलोटेल अपना नृत्य आधा भी पूरा कर पाता, गौडी ने अपना मुंह हमेशा से बड़ा खोला और गप्प! उसने पुलु की पीठ में दांत गड़ा दिये थे।

"आ आ ई ई!" पुलु ने दर्द की एक मर्मभेदी चीख निकाली और उसकी पीठ का पंख जल्दी जल्दी सिकुड़ने-खुलने लगा, और वह छूटने के लिये बुरी तरह तड़पने लगा। बड़ा कछुआ बिना पलक झपकाए ठीक सीधे ताकता रहा, और उसके जबड़े बेचारी असहाय मछली को जकड़े रहे।

पुलु को अपने प्राण छीजते महसूस हुए। एक बहुत दूर से आती जैसी वाणी में, जो उसके खुद के कानों के लिए अजनबी थी, उसकी आखिरी बची शक्ति एक दर्द भरे रुदन में बाहर निकली, जैसे जैसे उसका रक्त सागर के नमकीन पानी में घुलने लगा।

"ओह गौडी, मैंने विश्वास किया, मैं इतनी दूर तुम्हारे साथ आया। क्या यह वह आज़ादी है जिसका वायदा तुमने किया था? जिस सागर की बातें तुमने की थीं, मैंने उसके कितने सपने देखे थेख़ आहहहख़."

यह पुलु का आखिरी खयाल था, आखिरी शब्द, उसकी आखिरी सांस। उसका शरीर गौडी के मुंह में शिथिल पड़ गया।

विशाल कछुए को जैसे एक शब्द भी सुनाई न दिया। उसने अपना मुंह खोला, अपने जबड़े जल्दी जल्दी हिलाए, और फिर येलोटेल को बड़े से ग्रास में एक बार में निगल लिया। उसकी जीभ मुंह को चारों ओर से चाटने के लिये बाहर निकली और फिर उसने अपने आप से बात करने के लिये सन्नाटे को तोड़ा।

'जब पेट खाली हो तब किसी भी जीव से काम चल सकता है, और ऊपर से वह स्वादिज़्ट भोजन लगता है। कुछ नहीं किया जा सकता, सब कुछ हमारे नियन्त्रण से परे है। यहां तक कि इंसान भी असहाय है। इस दुनिया में, जहां शक्तिवान शक्तिवान को खाता है और शक्तिशाली शक्तिहीन का नाश करता है, यह सम्भावना ही कहां है कि चीजों के बारे में शांति से बात की जाए?'

'जो भी हो, बहुत समय हो गया था जब से मैंने कुछ भी खाया था, और यह बेष्ठाक एक सुस्वादु दावत थी। हां, और मैं कहता हूं, मैं अब काफी प्रतिभावान अभिनेता बन चुका हूं। वहां मछलीघर के नाटक से ष्शुरू करके, मेरा अभिनय ही है जो मेरी नियति को उस तरह बदलेगा जैसा मैं चाहता हूं। प्रकृति का जो बनना हो, बने। जब तक मेरे पास यह नाटक करने का हथियार है, मैं प्रकृति को दष्ठ्या दूंगा कि मैं कैसी भी स्थिति के सामने बच कर निकल सकता हूं।'

विष्ठाल कछुए ने अपने आप को दो तीन बार हिलाया। फिर उसकी लाल जीभ मुंह को बार बार चाटने के लिए बाहर निकली, और वह इतने लम्बे उपवास के बाद मछली के स्वाद का मजा लेता रहा।

फिर से अकेला

गौडी अब अकेला असली सागर की तलाष्ठा में दक्षिण से आने वाली गर्म समुद्री धाराओं पर तैरता हुआ निकल पड़ा। आगे, और आगे, वह पैर मारता गया, पर वह जितना भी आगे तैरता था, पानी और ज्यादा प्रदूज़ित ही नज़र आता था।

उसने तय किया कि वह डुबकी लगाकर समुद्र तल को देखेगा। पानी सतह के पास हरा था, फिर जब वह नीचे डूबने लगा, पानी नीला होता गया। जब वह लगभग सौ मीटर नीचे पहुंच गया, वह एक ऐसे अंधेरे संसार में पहुंच गया जहाँ जीवन के पोज़ण के लिये सूर्य की रोष्ठानी बिल्कुल नहीं पहुंचती थी। विष्ठाल कछुआ जल्दी से मुड़कर सूर्य की ओर तैरकर वापस आ गया।

दिन पर दिन गौडी स्तब्ध होकर तैरता रहा, उस सजीव प्राणियों युक्त झिलमिलाते नीले सागर और सूर्य से प्रकाष्ठामान समुद्री गहराइयों की खोज में, जो वह मछलीघर में हर दिन और रात सपनों में देखता था। लेकिन जहाँ सूर्य की किरणें कभी नहीं पहुंचती थीं, वहाँ कोई चीज़ जिन्दा प्रतीत होती थी, क्योंकि गौडी के चारों ओर पानी की सतह पर अजीब से अनगिनत बुलबुले आकर फूटते रहते थे। उतनी गहरी सांस लेकर, जितनी वह ले सकता था, डुबकी लगाकर वह यह देखने गया कि ये बुलबुले आखिर कहाँ से आ रहे हैं। नीचे, नीचे और नीचे, जब तक अचानक, उस गंदले पानी में, उसके सामने एक ड्रमों का विष्ठाल पिरामिड नज़र आया। हज़ारों कनस्तरों के वहाँ ढेर लगे हुए थे। बहुत से कनस्तर टूट कर खुले हुए थे, और वह पिरामिड नीचे झुक कर गिरता जा रहा था, जिससे घिनौने, दुर्गन्ध युक्त भूरे बुलबुले, कनस्तरों से भयंकर गड़गड़ाहट के साथ ऊपर नाचते हुए उठ रहे थे। गौडी आष्ठचर्य और भय से पीछे हट गया उस समय, जब पिरामिड के पीछे से अजीबोगरीब जीव तैर कर सामने की ओर आए। ये भीमकाय प्लैंकटन थे, जो किसी अनजाने कारण से डाल्फिन जैसे आकार के हो गए थे।

'हे प्रभु, यह क्या है? मुझे नहीं लगता कि ये कनस्तर इस सागर के निवासी हैं। इनसे अवष्ठय ही पानी गंदा होता जा रहा है।' गौडी सिहर उठा, उसकी आंखें इस भद्दे दष्ष्ठय को देख जलने लगीं, और वह जल्दी से तैरकर दूर हट गया। वह तैर कर ऊपर गया, जहाँ सतह के पास तेजोमय सूर्य ने उसे गर्म किया, और फिर उसने तय किया कि वह और अधिक दक्षिण की ओर चला जाएगा।

ज्यादा गर्माए पानियों में गौडी जीवट से तैरता रहा, पर ऐसा लगता था जैसे वह दूज़ित पानी उसका पीछा करने की ठान चुका था, क्योंकि गंदा जल घूम कर दक्षिण की ओर ही बहता जाता था, जिस दिष्ठा में गौडी जा रहा था। अब गौडी को वह प्रकृति कहाँ पर मिल सकती थी जिसके लिये वह जिया था, और जिसके सपने उसने देखे थे?

अकेला कछुआ काफी ष्ठोक से उस येलोटेल को याद कर रहा था जिसे उसने खा लिया था, क्योंकि अब उसके पास बात करने के लिये कोई न था। यहाँ दक्षिणी पानियों में उसे कुछ कछुए अवष्ठय नजर आए, पर कोई भी उसकी बात न सुनता था, न उससे बोलता ही था। छोटी मछलियां गौडी को देखते ही लपक कर दूर चली जाती थीं।

'जाहिर है', गौडी ने सोचा। 'एक अजनबी कछुआ जो अभी अभी मछलीघर से आया है, उसपर समुद्र वासी क्यों भरोसा करेंगे?'

विष्ठाल कछुआ एक बार फिर अपने मछलीघर के दिनों को याद करने से खुद को न रोक सका, जहाँ पर उसके आंसू देखने पर बहुत सी मछलियां द्रवित हो उठीं थी। कुछ ने उसके लिये उल्लासपूर्वक नष्टत्य भी किये थे। और फिर वहां

पुलु था जो उसके स्वास्थ्य के बारे में सच्ची चिंता के साथ पूछने आया था। यहाँ, इस दूज़ित और मरणासन्न सागर में, कोई ऐसा न था जो उसकी चिंता करता। यहाँ तो केवल भोंडे जीव थे, जैसे वे विकराल प्लैंकटन, जो उसके पीछे तैरते थे और उसका नींद में भी पीछा नहीं छोड़ते थे।

गौडी को अकेलेपन ने घेर लिया था। 'आह, यदि मुझे जरा भी अन्देष्ठा होता कि स्थिति यहां तक पहुंच जाएगी तो मैंने पुलु को कभी न खाया होता। यह मैंने क्या कर डाला? पुलु बातें करने के लिए एक आदर्ष्ठा मित्र था। पहली बात, वह हमेष्ठा ढाढस बंधाता था- वह कितना अच्छा दोस्त था! किस चीज ने मुझसे ऐसा करवा दिया? 'बढ़ते रहो, हिम्मत न हारो' बेचारा भला पुलु कहा करता था। मुझे हैरानी होती है कि मैंने उससे क्यों झूठ बोला, पर आहख़ अगर मुझे जिन्दा रहना था तो और कुछ नहीं किया जा सकता था।'

गौडी का सिर कई बार ऊपर नीचे हुआ। उसके अगले ष्टाब्द जैसे पुलु के लिये थे।

'मैं अपने को रोक न सका, यह जीवित रहने का संघर्ज़ था। मैं भूख से लगभग मरने वाला था। मुझे पता न था कि मैं क्या कर रहा हूँ। मैंने प्लास्टिक के थैले तक खाए। हाँ, मैं कहता हूँ, इस स्थिति में और कुछ नहीं किया जा सकता था। इस भारी खोल को उठाए उठाए मुझे भूख तो लगनी ही थीख़ पर पुलु भी बहुत बुरी तरह भूखा रहा होगाख़ नहीं, नहीं, अवष्ठय ही मैं उससे ज्यादा भूखा था। उससे कहीं ज्यादा प्रबल जीने की इच्छा रखता था, तभी मैंने मछलीघर छोड़ा। पर पुलु भी, वह भी तो मुक्त होकर जीना चाहता था? नहीं तो उसने मेरे संग वह आरामदेह मछलीघर क्यों छोड़ा? मैं ही अकेला नहीं था जिसमें जोखिम उठाने का साहस था। ओह, पर वह सब कहाँ गया, असल प्रकृति, असल सागरख़'

ष्टोक संतप्त और टूटा हुआ दिल लेकर विष्ठाल कछुआ लगातार पैर मारता रहा, हमेष्ठा दक्षिण की ओर। महासागर का ठंडा और मौत जैसा सन्नाटा उसके चारों ओर अनन्त दूरी तक फैला हुआ था।

एक दिन व्हेल मछलियों का समूह गौडी के नज़दीक से गुजरा। उनमें से एक ने मष्टदु वाणी में गौडी को आवाज दी। किसी को अपने से बात करते सुन कर ही गौडी खुष्ठी से भर उठा। व्हेल का विष्ठालकाय जबड़ा धीरे-धीरे हिला जब उसकी गहरी आवाज़ पानी के जरिये गूँजी।

"आहो, बड़े कछुए, तुम इतनी जल्दी में कहाँ जा रहे हो? जल्दबाजी की कोई जरूरत नहीं, क्योंकि हर कहीं ऐसा ही दूज़ित पानी है।" उस भीमकाय जीव ने कहा और फिर हवा में एक ऊँचा फव्वारा छोड़ा।

गौडी थोड़ी सी उलझन में हकलाते हुए बोला "लेकिन, लेकिन, ओह, फिर आप सब कहाँ जा रहे हैं? मुझे अभी भी आष्ठा है क्योंकि यह एक बहुत बड़ा विस्तष्टत महासागर है। हमें चाहे कुछ भी भुगतना पड़े, प्रकृति फिर से आष्ठा भरा पुनर्जन्म लाने में सक्षम है। ष्टायद आपने 'आष्ठा' ष्टाब्द नहीं सुना है जिसे इन्सान इस्तेमाल करते हैं।"

"तुम क्या बात कर रहे हो?" व्हेल ने कहा, "इस तरह की भोली, बेखयाली के साथ तुम अवष्ठय ही मुसीबत की ओर बढ़ रहे हो। दक्षिणी सागर, उत्तरी सागर, सभी दिष्ठाएं, उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पष्ठिचम - सब जगह एक ही स्थिति है। क्यों, नीचे दक्षिणी ध्रुव की पेंगुइनें तक भी, कुछ दिन पहले अपनी हालत पर चर्चा करने के लिए इकट्ठी हुई थीं, और फिर वे सब अपनी मातष्टभूमि अंटार्कटिका को जल्दी जल्दी छोड़कर भाग गईं। वे अत्यन्त मेहनती और ईमानदार कौम है। पर प्रकृति के उस बरबाद हुए संसार में वे कैसे रहें?"

"बहुत सारी पेंगुइनें मुड़ी हुई चोंचों के साथ दक्षिणी ध्रुव का क्षेत्र छोड़कर अभी ही जा चुकी हैं। क्यों, केवल प्रदूज़ित चीजें खाकर उनके ष्टारीर भी विकृत हो चुके हैं, इतने कि एक छोटी सी मछली निगलना भी उनके लिये कठिन है। यहाँ तक कि अब कुछ पेंगुइन ऐसी हालत में हैं कि वे कुछ भी खा नहीं सकतीं। अगर तुम बहुत नज़दीक से देखो तो तुम्हें ष्टायद ऐसा लगे कि मनुज़्यों के मुख भी बिगड़ चुके हैं।"

"अरे नहीं" गौडी बोला, "मानवों के मुख नहीं वक्र हुए हैं, बल्कि मुंह से निकलने वाले ष्टाब्द बिगड़ गए हैं।"

"सर्वत्र पानी एक है, क्योंकि वह सारा का सारा एक साथ बहता है, और आजकल ऐसा महसूस होता है जैसे हम विज़ में तैर रहे हैं। अवष्ठय ही, मित्र कछुए, तुमने भी इस सागर के प्लैंकटन देखे होंगे कि वो कैसे बदल गए हैं। हम आजतक प्लैंकटन को खाकर जिंदा रहते आए हैं, पर हाल में, हमारे सबके गले दर्द से सूज गए हैं और उनमें खून जैसे लाल चकत्ते

बन गए हैं। हां, हम सबके।" उससे अपना पंख हिलाया और सारे व्हेलों ने एक साथ फव्वारा छोड़ा। "तुम पूछते हो कि हम कहाँ जा रहे हैं। हम सब इकट्ठे ऐसी जगह की तलाष्ठा कर रहे हैं जहाँ हम ष्ठांति से मर सकें। इस ग्रह की ष्ठुरुआत के समय से, हमसे बड़ा और सौम्य जीव और कोई नहीं रहा है। यदि व्हेल सभी प्राणियों का सरताज होने योग्य है, तो उसे इस दुनिया को छोड़ने के लिये कोई सुयोग्य स्थान का चुनाव भी करना चाहिये। सारी प्रकृति के पास एक दर्पण होता है जिसमें वह अपने आपको देख सकती है, और उसी से मार्गदर्ष्ठित होती है जैसे कोई दिग्सूचक उसे रास्ता दिखा रहा हो। काष्ठा, मानवों के पास भी कोई इन्सानियत का दर्पण होता, जो उन्हें उनके खुद के दर्ष्ठान करा सकता।"

"इन्सानियत का दर्पण, वह क्या हो सकता है?" गौडी ने पूछा।

"अह, हूंऽऽ, अच्छा हूंऽऽऽख्र"

व्हेल ने अपना सिर नवाया जिससे वह सागर की गहराइयों के उन्मुख हो गया। धीरे से अपनी आंखें बंद कीं और अपनी सबसे गहरी, सबसे कोमल वाणी में गाना ष्ठुरू किया।

'क्यु ग्रु-न, क्यु ग्रु-न, क्यु-ग्रु-न
क्यु ग्रु-न, क्यू-
सागर है धाम हमारा
पिता है रक्त बहाता
सागर है धाम हमारा
भाई है आँसू बहाता।
सागर है धाम हमारा।
बहन हमारी करे याचना
क्यु ग्रु-न, क्यु ग्रु-न, क्यु-ग्रु-न
क्यु ग्रु-न, क्यू-
सागर है धाम हमारा
हम सब हर एक बेचारा।
वापस दो सागर हमारा
कुदरत को दो वापस ला
छोड़ें हम इक और फुहारा
देखें फिर से सब जग न्यारा
क्यु ग्रु-न, क्यु ग्रु-न, क्यु-ग्रु-न
क्यु ग्रु-न, क्यू-'

अच्छा, विष्ठाल कछुए, अपना ध्यान अच्छे से रखना। मैं तुम्हें सलाह दूंगा कि दक्षिणी द्वीपों से दूर ही रहना, क्योंकि वहाँ समुद्र में भयंकर विस्फोट हो रहे हैं, इतने ष्टाक्तिष्ठाली कि वे अंधा कर सकते हैं।''

"ओह, आपको बहुत बहुत धन्यवाद। किसी से बात करना बहुत ही अच्छा लगा," गौडी ने भावविभोर होकर कहा।

फिर, जैसे कि वे गौडी में नए प्राण का संचार कर रहे हों, सारी व्हेलों ने एक साथ हवा में कुहासे के फव्वारे छोड़े। एक क्षण को आकाष्ठा रंगों से भर गया, जब उस कुहासे के जरिये आती धूप ने तैरती व्हेलों के ऊपर एक झिलमिल इन्द्रध नुज़ बना दिया।

व्हेलों की सहृदयता के लिए कृतज्ञता से भरा हुआ गौडी उदास, पीले चेहरे और दिल में एक सर्द भय के साथ, अपनी आगे की यात्रा करता रहा। उसका विष्ठाल खोल बजने लगा जब उसके ष्टारीर से कंपकंपी छूटी।

'आह, मेरे सागर के ऊपर क्या विपदा आ गई है? जो चालीस साल मैंने मछलीघर में बिताए, उस दौरान क्या हुआ है?' जैसे जैसे वह तैरता रहा, उसके सिर में ऐसे ही विचार चक्कर काटते रहे, और फिर उसने अपने आप से गीत गाना शुरू कर दिया, जब उसे याद आया कि किस प्रकार उसकी हौसला अफजाई के लिये व्हेलों ने गीत गाया था। सारे समय, दिल की गहराइयों में, कछुआ अपने आप से सोचता रहा, 'व्हेल इतनी ज्यादा दीर्घकाय जीव होते हैं कि उनका जीवित रहना आसान नहीं होता होगा। लेकिन मैं, अपने कठोर खोल के साथख्र.' नाक हमेशा दक्षिण की दिशा में किये, वह समुद्री धाराओं पर सवारी करता रहा और जोरदार गति से पैर मारता रहा।

दूर एक छोटे द्वीप को देखकर गौडी की आँखों में उम्मीद की चमक आ गई, और वह और तेजी से पैर मारने लगा। तभी, अचानक, उसे अपनी गर्दन में एक तीखा दर्द महसूस हुआ, और एक दैत्यकार मोरे ईल का क्रूर चेहरा उसकी आँखों के ठीक सामने छा गया। गौडी ने जल्दी से एक बड़ी सी चट्टान के नीचे छिपने के लिए डुबकी लगा दी, और अपने सिर, पैरों और पूंछ को खोल के अंदर खींच लिया। 'उफ, बाल-बाल बचा! एक पल और देर हो जाती, तो मेरा नामोनिशान न बचता। एक बार कोई मोरे अपने दाँत आपके अंदर गड़ा दे, फिर तो आप कहीं नहीं जा सकते।'

गौडी के शरीर से भय जनित ठंडा पसीना निकलने लगा। उसने अपने आप को चट्टान के नीचे, जितना संभव था उतना, अंदर घुसाने की कोशिश की। ईल चट्टान का चक्कर काटती रही, और अपनी नाक को चट्टान में और गौडी के खोल में घुसाने की कोशिश करती रही। उसके शरीर पर अजीब से छोटे छोटे पैर थे, और उसकी आँखें चमकते बैंगनी रंगी की थी। 'आईईऽऽ!! यह कैसा भयानक जीव है? क्या इस सागर के सभी जीव दैत्यों में बदल गए हैं?'

गौडी चट्टान के नीचे, और अंदर, घुसने की कोशिश करता रहा। वह अचानक भयातुर हो उठा जब उसकी पीठ पर लगा हुआ धातु का नाम-पट्ट चट्टान की एक दरार में अटक गया। फिर, स्थिति को और विकट बनाते हुए, मोरे ने अपने घृष्टणित छोटे-छोटे पैरों को कछुए के खोल के पिछले पैरों वाले छेदों में घुसा कर उसकी चमड़ी को छुआ। गौडी तड़फड़ाया, हिला डुला, पर दरार में फंसा नामपट्ट बाहर न निकला।

'हे-ए, कोई मुझे बचाओ! मैं यहां मर जाऊँगा, अगर ये नृशंस ईल मुझे नहीं खत्म करती, तो भी मुझे सांस के लिये सतह पर जाना ही होगा, नहीं तो मैं डूब जाऊँगा। ओह, इस व्यर्थ के नामपट्ट का सत्यानाश हो, जो मछलीघर वालों ने मेरे ऊपर लगा दिया है।'

गौडी मदद के लिए चीखता रहा, साथ ही वह मुड़कर अपनी पीठ पर लगे पट्टे को चबाने की कोशिश करने लगा। आखिरकार, वह अपने आप को छुड़ाने में सफल हो गया। फिर उसने अपने सामने के पैरों का इस्तेमाल करके अपने कवच को उन गंदे ईल पंजों से छुड़ाया। ईल ने आखिरकार हार मान ली और वह तैर कर आगे चली गई। गौडी उसे तैर कर नज़र से परे जाते देखता रहा, फिर जल्दी जल्दी पैर मारता पानी की सतह पर पहुंचा और हांफता हुआ बहने लगा। उसकी गर्दन में दर्द से टीस उठ रही थी।

'बहुत हो चुका! मैं तट पर जा रहा हूं। इस सागर से भर पाया! मैं इस तरह लगातार भय में नहीं जी सकता। वहाँ एक छोटा टापू दिख रहा है। आराम करने उधर चलता हूँ। उफफफख्रख्र यह तो बहुत ही डरावना वाकया था।'

अपनी घायल, सूजी हुई गर्दन को मलता हुआ विशाल कछुआ तैर कर टापू पर पहुंचा और एक रेतीले तट पर धीरे-धीरे चढ़ गया।

एक टापू, एक दोस्त

टापू असल में उतना छोटा भी नहीं था, और जितनी दूर तक नज़र जाती थी, सफेद रेत फैली हुई थी। बालू में से यहां वहां नारियल के पेड़ निकले खड़े थे और मुरझाई भूरी पत्तियों के नीचे से नारियल झांक रहे थे। ऐसा लगता था जैसे वो पेड़ चिंता से झांक कर सागर की ओर देख रहे हों, इस बात से आगाह कि सौम्य मृष्टदु प्रकृति किसी कारण से नाराज हो गई है।

गौडी ने रेत को पार किया और एक छोटी पहाड़ी पर चढ़ने लगा। थोड़ी देर में ही उसे कुछ दूर पर एक ताजे पानी

के तालाब जैसा कुछ नजर आया और उसने तय किया कि वह रेत को पार कर पानी तक पहुंचेगा। सूर्य आकाष्ठा में बहुत ऊंचा उठ गया था, और नीचे बिछी बालू पर पूरे जोर से चमक रहा था।

बहुत समय हो गया था जब से विष्ठाल कछुआ भूमि पर नहीं चला था, जहाँ सूर्य की किरणें उसके आसपास गुनगुनी गर्माहट से पड़ रहीं हों। अब, जब सागर की हवाएं नरमी से टापू में बह रही थीं, गौडी को ऐसा महसूस हुआ जैसे सुरक्षा की ष्टांत आभा ने उसे घेर लिया है। तभी-कितना सुखद आष्ठचर्य था! उसकी निगाह रेत पर बने पदचिन्हों पर पड़ी, जो उसके स्वयं के पदचिन्हों जैसे ही थे, और एक पहाड़ी के ऊपर तक जा रहे थे।

'वाह, वाह, ऐसा लगता है कि मेरी नस्ल के कई जीव इस भूमि पर रहते हैं। मैं बस इन रास्तों पर चलकर उन तक पहुंच जाता हूँ। अब मैं जान गया हूं कि अपने पास एक दोस्त के बिना, जोकि मेरे दु:ख दर्द को समझ सके, मेरा यह खोल मुझे इतना भारी महसूस होने लगता है, जैसे कि आखिर में मुझे कुचल ही देगा।'

गौडी ने पहाड़ी पर बहुत जोष्ठो-खरोष्ठा के साथ चढ़ना ष्ठुरू किया। उसका दिल गा रहा था। लेकिन उसके हृदय का आल्हादित राग जल्दी ही घुट कर एक कांपती हुई फुसफुसाहट में बदल गया, क्योंकि ऊपर चढ़ते-चढ़ते उसे रास्ते में जानी पहचानी हड्डियां रेत में आधी दबी हुई नज़र आने लगीं। फिर जैसे-तैसे जब उसने अपने-आप को खींचकर पहाड़ी के ऊपर पहुंचाया, नीचे रेत में उसने क्या बिखरा पड़ा देखा? सैकड़ों कछुए उल्टे पीठ पर पड़े, मरे हुए! कुछ तो अब सूर्य द्वारा रंग उड़ाए ढेरों से ज्यादा नहीं थे। उनकी हड्डियों से हवा ष्ठोकाकुल होकर गूंज रही थी और उनके सूखे हुए खोलों में से लम्बी बेलें रास्ता बनाती जा रही थीं।

लेकिन ठहरो-पहाड़ी के नीचे एक कछुओं का दल भी था, चलता हुआ! गौडी ने उनसे चिल्लाकर कहा। "ओए-होए दोस्तों! मैं गौडी हूँ और अभी-अभी मनुज़्यों के मछलीघर से लौटा हूँ। मैं वापस घर आ गया हूँख़."

'ओह', विष्ठाल कछुए ने सोचा 'लेकिन कुछ गड़बड़ है। वे बारबार रेत के उसी टुकड़े पर आगे-पीछे घूम रहे हैं।'

वह चलकर उनके और नजदीक गया-वे करीब दस से ज्यादा थे-और उसने फिर कछुआ प्रेम से भरी आवाज़ में उन्हें पुकारा, पर उनमें से एक कछुए ने भी मुड़कर उसकी ओर देखा तक नहीं। गौडी अब इतनी पास पहुंच गया था कि वह उन्हें देख सकता था। उसने देखा कि उनकी आँखें ष्टीष्ठो सी थीं और उनपर से चमड़ी उधड़ गयी थी। उनके ष्टारीर सूखे हुए थे और खोल यहां वहां से चिटके थे।

"ओ दोस्तों, पानी उस ओर है! इस दिष्ठा में नहीं, इधर नहीं, यहां केवल बालू और पत्थर है।"

गौडी उस दल के आगे चलने वाले विष्ठाल कछुए के पास गया और उसे अपने सामने के पैरों और खोल की मदद से जोर लगाकर सही दिष्ठा में घुमा दिया।

"ओह, मैं कहता हूँ, तुम कौन हो? देखो, हम सब अंधे हैं। करीब एक महीना पहले मैंने एक अंधा करने वाली चौंध देखी और उसके बाद से कुछ नहीं देखा। यह आदमियों का एक और बे-सिरपैर का बम-परीक्षण था-मेरे लिये यह सातवां था। किस ओर मुड़ें, हम तो सागर तक अपना रास्ता तक नहीं खोज पा रहे हैं। मैं केवल पानी की एक घूंट के लिये तड़प रहा हूं, यहां जमीन पर, या सागर में, उसके बाद मैंख़."

गौडी स्तब्ध खड़ा रहा, अपना सिर धीरे-धीरे हिलाता हुआ। फिर उसने घास और लताएं एकत्र कीं, और उन्हें आपस में बांधकर एक लम्बी रस्सी तैयार की। वह चलकर उस दल के पास पहुंचा और हरेक के मुंह में रस्सी पकड़ा दी। फिर, उस रस्सी का सिरा अपने मुंह में कसकर पकड़े, वह उन कछुवों के आगे गया और उन्हें तालाब की ओर ले चला। जैसे जैसे वह इस दष्टज़्टिहीन दल को ले जाता गया, उसकी आंखों के सामने, चारों ओर, रेत पर पड़े हुए मरे कछुओं का हृदय विदारक दष्ठष्ठय खुलता गया।

"दोस्त, तुम अवष्ठय ही एक दयावान कछुए हो", गौडी के एकदम पीछे वाले विष्ठाल कछुए ने कहा। "पुराने दिनों में, सागर में, हम सब ऐसे ही थे, एक दूसरे की मदद करने वाले, पर आजकल कोई सिवाय अपने आप को केवल जिंदा रखने के, कुछ नहीं कर सकता। हम ऐसे समय में दूसरों के लिये सोचने का वक्त भी कैसे निकालें?" बाकी सभी कछुओं ने सहमति में सिर हिलाया।

उस रेगिस्तान में धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए, सिर पर धधकते सूरज के साथ, गौडी और कुछओं की श्रष्टंखला आखिरकार तालाब तक पहुंच गई। तेरह प्यासे कछुओं ने अपने सर पानी में डुबाए, और फिर अपार आनन्द के साथ, सिरों को इधर उधर घुमाते हुए, गहरे पानी में कूद गए।

'ओह, पर बात क्या है?' गौडी ने सोचा, क्योंकि उन बेचारे कछुओं ने पानी में इधर उधर फिरना बंद कर दिया था। ऐसा लग रहा था कि उनके ष्टारीर इतनी देर तक, इतने ज्यादा सूख गए थे कि जब उन्होंने पीना ष्टुरू किया, तो उसके बाद अचानक उनके पैर चलने बंद हो गए। वे वापस भूमि पर नहीं लौट सके और तालाब में धीरे-धीरे डूब कर दिखने बंद हो गए। पानी की सतह पर बुलबुले फूटे -बुकु! बुकु! फुट्- और फिर गौडी के चारों ओर तालाब और रेगिस्तान को घोर सन्नाटे ने घेर लिया।

'हे मेरे प्रभु, यह सब क्या हुआ है? क्या यही मेरी नियति थी कि मैं इन बेचारे अभागे जीवों को सदा-सदा के लिए ष्टांति से सुला दूँ।'

तभी, तट के पास एक कछुए का सिर पानी के ऊपर उभरा और एक मध्यम आकार के कछुए ने तैरते रहने के लिये हाथ पैर मारने ष्टुरू किये। गौडी ने खड़ा होकर उसकी आँखों में ताका और ऐसा लगा जैसे वे दृज्टिहीन नेत्र सीध ` गौडी की आंखों के जरिये उसके दिल में उतर गए हों। गौडी जल्दी से तट की ओर दौड़ा और पानी में कूद कर जल्दी जल्दी पैर मारते हुए उस कछुए की ओर बढ़ा। अपनी पूरी ष्टाक्ति के साथ उसने उस डूबते प्राणी को उठाया, ठेला, उठाया, फिर ठेला, जब तक कि वह उसे बचाने में सफल न हो गया। वे दोनों तट पर हांफते हुए पड़कर फैल गए।

वह कृतज्ञ कछुवी गौडी की ओर मुड़ी और फिर उसने बहुत कमजोर आवाज़ में, हांफते हुए कहा, "धन्यवाद, ओह, बहुत बहुत धन्यवाद! मैंने तो सोचा था, आज मैं गई। मुझे केवल पानी का एक घूंट चाहिये थे और फिर मुझे परवाह न थी कि मैं बचूं या मरूं। ओह, लेकिन जब मैंने तुम्हारे मजबूत पैरों को सहारा देकर तट पर पहुंचाते महसूस किया, अचानक मुझे जिन्दगी फिर से सच्ची लगने लगी। मेरा नाम लोट्टी है। तुम्हारा क्या है?"

गौडी का सिर ऊपर नीचे हिला और उसने खुष्ठी-खुष्ठी जवाब दिया।

"मैं गौडी हूं। मैं आदमियों के मछलीघर से बच कर यहाँ आया हूँ।"

"आदमियों का मछलीघर? क्याख़ क्योंख़"

"क्या तुम मछलीघर के बारे में नहीं जानतीं?" लोट्टी ने अपना सिर धीरे से हिलाया।

"ओह, मुझे नहीं पता क्यों, पर जैसे ही तुमने कहा, आदमियों का मछलीघर, मुझे रोना आ गया। ये मनुज़्य किस प्रकार के जीव होते हैं गौडी? कृपया मुझे समझाओ।"

"क्या तुम सचमुच मानवों के बारे में कुछ नहीं जानती? खैर, मैं तो चालीस साल तक मनुज़्यों के बनाए एक काँच के बक्से में रहा हूँ। संभवत: मैं तुम्हें आदम जात के बारे में बहुत कुछ बता सकता हूँ।"

"ऐसा क्यों है कि मनुज़्य इतने चतुर होते हैं? हवा में, जमीन में और सागर में - वे हर कहीं नज़र आते हैं, और वे किसी भी प्रकार के प्राणी के ऊपर विजयी होते हैं, है न?"

"इन्सान", गौडी ने कहा, "सोचते हैं कि वे सबसे ज्यादा और केवल वही, इस ग्रह के महत्वपूर्ण प्राणी हैं। इस ध ारणा के कारण वे हम पष्ठुओं और हमारे जीवन के बारे में बहुत ही कम सोचते हैं। मनुज़्य वास्तव में बहुत विचित्र प्राणी होते हैं। वे बिरले ही हम विष्ठाल कछुओं की तरह सौ साल तक जी पाते हैं, लेकिन फिर भी वे इस महासागर का विनाष्ठा करने में आखिर सफल हो गए हैं जो करोड़ों सालों से सजीव था। कौन सोच सकता थाख़ मैंने वहाँ मछलीघर में बहुत से किस्से सुने, कि कैसे बहुत से वयस्क खाते रहते हैं, खाते रहते हैं, जब तक उनके पेट फटने को होते हैं, जबकि दूसरी ओर ढेरों बच्चे रेगिस्तानों और नगरों में भूख से बिलखते फिरते रहते हैं।"

"तो तुम मछलीघर के बारे में जानना चाहती हो? यह ऐसी जगह है जहां सागर से बहुत प्रकार के जीव इकट्ठे करके रखे जाते हैं। ओह, ऐसा प्रतीत होता है कि इससे छोटे बच्चों से लेकर बड़े बूढ़ों तक, सभी मनुज़्य बड़े खुष्ठा होते हैं।"

"मुझे लगता है कि तुमने ष्टायद कभी एक चिड़ियाघर भी नहीं देखा होगा। अभी एक चिड़ियाघर एक गगनचुम्बी इमारत के ष्टीर्ज़ पर बनाया जा रहा है, जो जमीन से सौ मीटर से भी ऊपर स्थित होगा। जरा कल्पना करो – जिराफ, हाथी, दूसरे जानवर – सभी जंगलों, मैदानों, रेगिस्तानों या दलदलों में बसे अपने आवासों से बाहर खींचकर, एक लिफ्ट में डालकर, इतनी ऊंचाई तक पहुंचाए जाएंगे – कितनी बेतुकी बात है!"

लोट्टी इस सब से काफी हैरान हो गई थी, "आदमी ऐसी चीजें क्यों करते हैं? केवल इसलिए कि वे जो मर्जी आए कर सकते हैं, इसका अर्थ है कि उन्हें सब कुछ ही आजमा लेना चाहिए?" उसने अपना सिर घुमाया जैसे कि सागर को देख रही हो।

"गौडी, हम सब अंधे हो गए। हमारी नासिकाएं भी बेकार हो गई हैं। क्योंकि अब हम सूंघ नहीं सकते, और हमारे खोल अंदर से सूजकर लाल हो गए हैं।"

"तुमने अपनी दष्टज़्टि कैसे खोई?" गौडी ने कोमलता से पूछा।

"जितना मुझे याद है, करीब दस बड़े विस्फोट हुए थे। दादा ने हमें बताया था कि पहले हवा में विस्फोट हुआ करते थे, पर ये वाले तो समुद्र में से हुए थे। जानते हो? आदमियों ने समुद्र के तल में गड्ढे खोद कर उनमें बम रख दिये थे और फिर वो डरावने धमाके किये थे, जो किसी प्रकार के बेहूदे प्रयोग थे। ओह, वह आवाज, वह भयावह धड़ाका! मैं तो उसके बारे में सोच कर भी कांप जाती हूँ। एक भारी कड़ाके के साथ कोई भीज़ण किस्म की बिजली निकली, जो हमारे खोलों तक को छेदती चली गई, और ष्टारीर के हर कोने को जैसे जख्मी कर दिया। फिर, गरजते तूफान और पागलों सी नाचती लहरों के साथ, एक विराट् मष्ठारूम सा बादल उभर कर नीले आकाष्ठा की ओर उठता चला गया।"

"मनुज़्य ऐसी चीज़े क्योंकर करते होंगे?" अब हैरान होने की बारी गौडी की थी।

"मुझे नहीं मालूम, लेकिन मैंने यह सब होते हुए देखा। और यही काफी नहीं है। सभी तरह के मनुज़्य यहां थे – राजनेता, वैज्ञानिक, अर्थष्ठास्त्री – जिनके नाम उनकी जैकिटों पर लिखे थे। ये लोग सेना के आदमियों के साथ हाथ मिला रहे थे, मुस्करा रहे थे और पी रहे थे। यह सब ठीक यहां, इसी द्वीप पर, आखिरी विस्फोट से एक दिन पहले हुआ था।"

"मेरे दादा, मां–बाप, मेरा सारा परिवार–सभी, उन विस्फोटों में मारे गए। मैं कई दिन तक यहाँ–वहाँ उनको पुकारती फिरती रही। पर मुझे उनमें से कोई भी नहीं मिला। प्रकृति को इन इन्सानी जीवों से बदला लेने का तरीका ढूंढना ही चाहिये। यहाँ तक कि मैं अपने छोटे से कमजोर मुंह से भी, किसी भी आदमी को काटने को तैयार हूँ। ओह, पर मैं अब देख नहीं सकतीख़." लोट्टी उदासी से हंसी।

गौडी ने उनके आसपास के सारे इलाके में ढूंढा तो उसे कुछ खाने के लिये मिला। लोट्टी के पास वापस आकर, उसने भोजन को लोट्टी के मुंह में डालने की कोष्ठाष्ठा की।

"नहीं गौडी, हमें इस द्वीप पर कुछ नहीं खाना चाहिये, क्योंकि उससे हमारे स्वास्थ्य को केवल नुकसान ही होगा।"

गौडी, लोट्टी का हौसला बढ़ाने के लिये, उत्साह से बोलने लगा। "खैर, मैं सचमुच बहुत खुष्ठा हूं। बहुत समय हो गया था जब से मुझे कोई दोस्त नहीं मिला। हां, मछलीघर में इतने सारे सालों तक मैं अकेला था, पूरे तालाब में इकलौता कछुआ। बेष्ठाक, वहाँ कई मछलियां थीं जो अपने नष्टत्य या कलाबाजियों से मुझे खुष्ठा रखती थीं। ओह, और येलोटेल पुलु, इतना अच्छा दोस्तख़."

विष्ठाल कछुआ अचानक चुप हो गया, और महासागर के विष्ठाल विस्तार को ताकने लगा। "गौडी, क्या मछलीघर में खाने के लिये खूब सारा भोजन था?"

"ओह, बिल्कुल था! हाँ, वे लोग हमें इतना देते थे जितना हम खा भी नहीं सकते थे। साथ ही, अगर मेरा सिर कांच से टकरा जाता था तो एक डाक्टर–वे उसे पष्ठु डाक्टर कहते थे–मेरी हालत की जाँच करने आता था। असल में मेरे मछलीघर से सफलता से निकल भागने में उसने बहुत बड़ी भूमिका भी अदा की।" "यह पष्ठु–अह, डाक्टर–क्या तुम्हें ठीक कर देता है जब तुम बीमार होते हो?"

"हां, कर देता है, पर इन दिनों तो मुझे लगता है कि किसी को मेरा दिमाग ठीक करना पड़ेगा, वरना मेरा ष्टारीर

जल्दी ही चलना बंद कर देगा-हा!हा!हा!" गौडी खूब खुल कर हंसा।

"यह तो अच्छा लगता होगा कि मछलीघर में कोई डाक्टर तुम्हारा ख्याल रखने के लिए था?"

"वह मछलीघर रहने के लिये कोई बहुत अच्छी जगह न थी। मुझे उससे नफरत थी, तो मैं वहां से छुटकारा पा कर सागर में वापस आ गया।"

"ओह गौडी, इन विस्फोटों के बाद से, मेरे ष्टारीर में कुछ अजीब-सा होने लगा है, क्योंकि ऐसा लगता है कि मैं हमेष्ठा चट्टान-सा भारी बोझ अपनी पीठ पर लादे चल रही हूँ। लेकिन केवल मेरे साथ ही नहीं, बल्कि सबके साथ ही ऐसा है। यहाँ तट पर रहने वाले केकड़े, पानी में रहने वाले समुद्री ऐनीमोन, आकाष्ठा में उड़ने वाली सीगल-हम सभी जो यहाँ पास रहते हैं, सबको यही बीमारी है।"

लोट्टी को सुनते हुए, गौडी को उन चीज़ों की याद आई जिनको उसने सागर में तैरते-तैरते देखा था। "सागर के जीवित प्राणी अविष्ठवसनीय रूप से विकृत हो चुके हैं।" गौडी के मानस पटल पर उस डरावनी भीमकाय मोरे ईल का चेहरा घूम गया। उसकी गर्दन की मांसपेष्ठियां, जिनपर ईल ने दांत मारे थे, अभी तक सूजी हुई, बैंगनी रंग की थीं, और कभी कभी दर्द से कसकने लगती थीं।

"अब मैं बिल्कुल अकेली हो गई हूँ।" लोट्टी ने ठंडी सांस भरी। "मेरे सारे दोस्त जिन्होंने मेरे साथ इतने दिन बिताए थे, अब तालाब के तल पर हैं। बदनसीब मैं, अब मैं क्या करूंगी?"

"ऐ, भूलो मत, मैं तुम्हारे साथ हूँ।" गौडी ने जोर से उसे हिम्मत बंधाई।

"लेकिन मैं अन्धी हूँ और मुझे यह अजीब बीमारी भी है, जिसके कारण मुझे महसूस होता है जैसे मेरा ष्टारीर क्षय होता जाएगाख्र।"

"अब तुम्हें किसी चीज की चिन्ता करने की जरूरत नहीं, क्योंकि हम साथ हैं।"

लोट्टी चुपचाप, बिना हिले डुले, खड़ी रही। "लोट्टी, मैं बहुत समय तक, बहुत अकेला रहा हूँ। मनुज़्यों द्वारा बनाई गई उस कृत्रिम दुनिया में कोई खुष्ठी नहीं थी। मैं अब कुछ बिल्कुल नया महसूस कर रहा हूं। कह नहीं सकता कि वह क्या है, पर तुब अब मेरी चेतना पर छाई हुई हो।"

"ओह, गौडी, चलो इस द्वीप से बाहर चलें।" लोट्टी ने अपनी गर्दन लम्बी की और अपना सिर उन ढेरों कछुए के खोलों की ओर घुमाया जो उनके पीछे रेत पर पड़े थे।

"इस द्वीप पर सब मर चुके हैं, लेकिन मैं जिन्दा रहना चाहती हूं, अब, जब मैं तुमसे मिल ली हूँ, ष्टुक्रिया गौडी।"

एक बार जब उन्होंने जाने का निर्णय ले लिया, उन्हें रेतीली खाड़ी से बाहर निकलने में कुछ भी समय न लगा, क्योंकि उनके कोई भी रिष्ठतेदार या मित्र नहीं थे जिनसे विदा लेनी थी। न ही कोई सामान था, जो बांधना था। वे तैरने लगे, दक्षिण प्रष्ठान्त की ओर, और उन्होंने उस मौत के द्वीप को पीछे छोड़ दिया, जहाँ अनगिनत सूखे और चिटके हुए कछुवों के कवच जहाँ तहाँ बिखरे पड़े थे।

दोनों विष्ठाल कछुए फिरोज़ी लहरों पर पैर मारते रहे, जबकि सूर्य उनके ऊपर किरणें फैलाता रहा और उनके सिरों के ऊपर सुहानी समुद्री बयार बहती रही। समय समय पर नीचे झपट कर, लहरों की चोटियों को छूने वाली सीगलों से दुआ सलाम करते हुए गौडी ने, एक बार फिर हृदय की गहराइयों से खुष्ठी महसूस की कि वह विराट समुद्र में वापस आ गया है।

गौडी ने एक सीगल को आवाज दी जो नीचे डुबकी लगाकर कछुओं के नजदीक ही पानी पर तिर रही थी।

"ओए, पंखों वाले दोस्त। तुम्हारे संग आज क्या कुछ घट रहा है?"

सीगल ने बिल्कुल ष्टुज़्क किड़किड़ाती आवाज में कहा, "अहह, अहह, पिलि-मेरे सारे दोस्तों के गले सूजे हुए हैं, और वे अब आकाष्ठा में उड़ नहीं सकते हैं। आह, वह कैसा आनन्द था जो हम सब महसूस करते थे, जब हम हवा की धाराओं पर ऊँचे सवार होकर सागर के ऊपर दूर दूर तक यात्रा करते जाते थे! ओह, लेकिन अबख्र."

सफेद चिड़िया ने उदासी से अपने डैने फड़फड़ाए, "खतरनाक राख, जो धूल या पाउडर जैसी है, ने हमारी सांस

की नलियों को अवरुद्ध कर रखा है। जब से हमने वह राख अंदर ली है, हमारे गलों में घाव हो गए हैं और वे सूज गए हैं। हममें से कुछ के तो खांसी के साथ खून निकल रहा है। तुम किस्मत वाले हो, दोस्त समुद्री कछुवे - ओह, काष्ठा मैं भी पानी में जीने के लिये पैदा हुआ होता!"

"तुम कितना गलत सोच रहे हो, नभचर! जिस सागर पर सवार तुम ऊपर नीचे उछलते हो, बहुत तेजी से न रहने योग्य बंजर भूमि - माफ करना, बंजर समुद्र - में बदलता जा रहा है। हम भी तो रहने के लिये कोई जगह ढूंढ रहे हैं। तभी तुम्हें हम सागर में यूं घूमते हुए दिख रहे हैं।"

"मैं बिल्कुल नहीं समझ पा रही हूं। यह कितनी बड़ी पहेली है।" लोट्टी ने अपना सिर बार-बार घुमाते हुए कहा। "अगर पानी मष्टत हो जाता है, तो मछलियां भी मष्टत हो जाती हैं। पानी ही जीवन है।"

"हां और यदि वायु मष्टत है, तो सीगल उड़ नहीं सकती," गौडी ने कहा, "वायु जीवन है। यदि प्रकृति मर जाती हैख्र मनुज्य भी, हां, वे भी मर जाएंगे। प्रकृति स्वयं ही जीवन है।"

"खैर, बड़े कछुओं, जरा सावधान रहना। दक्षिण की ओर जिस विस्तष्टत रेगिस्तान भूमि की ओर तुम बढ़ रहे हो, लगता है वहां और भी वो विकट धमाके होने वाले हैं, इस बार जमीन के भीतर। मैं कभी भी समझ नहीं पाऊँगी कि मानव इन विस्फोटों को क्यों इतना पसंद करते हैं।"

"केवल हवा में, जमीन पर और जमीन के नीचे ही नहीं," अपने कड़वे अनुभवों से कुपित लोट्टी बीच में ही बोली, "वे यही चीज़ें पानी में और समुद्र तल में भी कर रहे हैं!"

सीगल खांसी, और आगे बोली, "हां, और बादलों के ऊपर तक भी। मैं जब दक्षिण की ओर आकाष्ठा में बहुत ऊँचे उड़ रही थी, मुझे अपने पंख दहकते हुए गर्म महसूस हुए-उनसे धुंआ निकलने लगा और उनका रंग भूरा हो गया। जरा कल्पना करो- भूरे पंखों वाली सीगल- कितना ष्टार्मनाक है! क्यों? वहाँ ठीक मेरे ऊपर, खूबसूरत नीली ओज़ोन पर्त में एक विष्ठाल छेद था, और वह इकलौता नहीं था जो मैंने देखा। खैर, उसके बाद मैं नीचे की ओर उड़कर विश्राम के लिये कोई बड़ा पेड़ खोजने लगी, पर कहीं एक अकेला पेड़ भी दृज्टिगोचर न होता था। नीचे जमीन तप कर लाल हो रही थी, और मेरी तरह ही पीड़ा से सिक्त लग रही थी। या अल्लाह!"

फिर उसने जल्दी से विदा ली, और ऊँचे उड़ कर पूर्व की ओर ओझल हो गई।

ख्र.

गौडी और लोट्टी आगे, और आगे, तैरते गए, जब तक कि एक दिन गौडी को एक छोटा सा द्वीप नजर आया जो चारों ओर मूंगे की चट्टानों से घिरा था, और बहुत से नारियल के पेड़ हवा में झूमते हुए जिसकी ष्टोभा बढ़ा रहे थे।

"हां, लोट्टी, चलो इस द्वीप को आजमाएं। अगर हम अपनी जिन्दगी यहां नहीं बसा पाएंगे, तो मुझे लगता है कि दुनिया में कोई भी जगह हमारे लिये उपयुक्त नहीं होगी।"

"गौडी, मैं यहाँ पर ठीक हो जाऊँगी। पता नहीं क्यों, मुझे ऐसा महसूस हो रहा है।"

दूर महासागर के ऊपर, विस्तष्टत बल-खाते बादल एकत्र होकर ष्टान से तैर रहे थे। बादलों के बीच से बिजली कुछ बार कौंधी, जिससे महासागर की सतह एक मनोहारी बल-खाते दर्पण के समान चमकने और जगमगाने लगी। दोनों कछुए तट पर चढ़कर द्वीप के अंदर की ओर बढ़ चले।

पहाड़ी के ऊपर बैठ, जब समुद्री बयार उनके कानों में मधुर संगीत गा रही थी, ऐसा महसूस होता था जैसे वे समुद्र पर तैरती एक विष्ठाल चट्टान पर सवारी कर रहे हों। उस अद्भुत दष्टष्ठय के आनन्द से अभिभूत, गौडी और लोट्टी ने तय किया कि वे अपना घर नज़दीक की एक बड़ी चट्टान के नीचे ही बनाएंगे।

"ओह, मैं कितना आनन्द महसूस कर रहा हूँ-मेरी सारी यात्राएं अब एक सपने जैसी प्रतीत होती हैं। आने वाले दिनों में ऐसा सुख दिखाई देता है कि पीड़ा और कठिनाई भरी वे सभी दर्द भरी यादें सब धुल गई हैं, और केवल एक मिठास बाकी रही है।"

पूर्ण चाँद के उजास से धुली हुई रात थी। गौडी दष्टज्टिहीन लोट्टी की ओर मुड़ा, इस कोमल अभिलाज़ा के साथ

कि वह अपनी आंखें उसे दे सकता, ताकि उस धवल चाँदनी में नहाए द्वीप का सौन्दर्य लोट्टी भी देख सके।

"लोट्टी मेरा ष्टारीर बहुत भारी है, कहीं तुम दब तो न जाओगी?"

"ओह, तुम चाहे कितने भी भारी क्यों न हो, तुम मेरी खुष्ठी हो।"

"ठीक है, यदि तुम मेरा वजन सहन कर सको तो, हम एक हो जाते हैंख़ आह, प्रिय लोट्टी, अब मैं तुम्हें अपना एक अंष्ठा दे रहा हूँ, एक बीज, जो कि मेरे जीवन का, और तुम्हारे लिये मेरे प्रेम का, सबूत है।"

लोट्टी ने अपनी गर्दन आगे खींची और खुष्ठी से सिर हिलाते अपनी दष्टज़्टिहीन, पर प्रेमभरी आंखें गौडी की ओर घुमाईं। द्वीप और रेतीली खाड़ी चांदनी में जगमगा रहे थे। लहरें तट पर नरमी से आ-जा रहीं थी, और रात्रि की नीरवता में दक्षिणी प्रष्ठान्त उस द्वीप के चारों ओर हर दिष्ठा में दूर दूर तक फैला था।

"आहह, गौडी, मैं कितनी खुष्ठा हूँ। मैं सोचती हूं, अब आगे क्या आने वाला हैख़ मेरे बच्चे और फिर उनके अपने बच्चे, और फिर आगे उसी तरहख़ख़"

गौडी ने अपने सामने के पैर लोट्टी के खोल पर ताल देने के लिये बजाने ष्टुरू किये और वह उल्लास से गाने लगा।

"पापा कछुवे की पीठ पर सवारी करे बेटा
बेटा कछुवे की पीठ पर सवारी करे पोता
हे-हे-ही-हो-
माँ कछुवी की पीठ पर सवारी करे बेटी
बेटी कछुवी की पीठ पर सवारी करे पोती।
हे-हे-ही-हो-
पापा कछुवे की पीठ पर सवारी करे बेटा
बेटा कछुए की पीठ परख़."

"ओह, गौडी, पर मैं चिन्तित हूं। क्या होगा अगर हमारे बच्चे मेरी तरह अंधे पैदा हुए? एक के पीछे एक नन्हें अंध ` कछुए समुद्र की ओर लड़खड़ाते हुए, उस दारुण सागर में जिंदा रहने की कोष्ठिाष्ठा करते हुएख़."

"चिन्ता न करो, मेरी प्रिय, जब तक मैं तुम्हारे साथ हूं," गौडी ने अपने सिर को आत्मविष्ठवास से हिलाते हुए कहा।

"गौडी, तुम एक बहुत भारी कछुए हो।"

"तभी तो मैंने तुमसे पूछा था कि क्या तुम मेरे वजन को अपनी पीठ पर झेल सकोगी या नहीं। बेष्ठाक यह तो कुदरती बात है कि हम विष्ठाल समुद्री कछुए भारी होते हैं।"

लोट्टी ने एक प्रेमभरी सौम्य मुस्कान के साथ अपना सिर अपने साथी की ओर घुमाया।

दोनों कछुए सपने जैसा सुख जी रहे थे। लोट्टी का पेट धीरे-धीरे बड़ा होता जा रहा था और गौडी अपने आप को खुष्ठी से पागल होने से नहीं रोक पा रहा था।

"अगर मैं आज भी उस मानव निर्मित मछलीघर में होता.ख़" उससे ऊँची आवाज में कहा, किसी और से नहीं, बल्कि अपने आप से। "मुझे उस जगह के बारे में सोचकर भी सिहरन होती है। अब बताओ, कोई भी इज्जतदार कछुआ उस चौकोर बक्से में रहकर गोल अंडे कैसे दे सकता है? लोगों के अंडे जरूर चौकोर होते होंगे, है न?" लोट्टी इस पर खूब जोर से हंसी।

चाहे उनका संग-संग जीवन बहुत सुखी था, एक गम्भीर समस्या उन्हें परेष्ठान कर रही थी। लोट्टी का पेट बड़े से बड़ा होता जा रहा था, पर साथ ही साथ, उसका ष्टारीर ज्यादा से ज्यादा क्षीण होता जाता था। जैसे-जैसे उसकी बीमारी और बढ़ने लगी थी, उसका पूरा ष्टारीर भारी और कमजोर महसूस होता था, और उसे अक्सर ऐसा लगता था जैसे उसका पेट एक अष्ठांत सागर हो जिसमें भोजन बिल्कुल नहीं टिकता था। ओह, और उसका चेहरा व ष्टारीर कितने पतले होते जा

रहे थे!

"गौडी, मुझे भय लगता है कि मेरा क्या होगा। हो सकता है कि मेरी नियति भी यही हो कि मैं अपने बन्धु बान्धवों के रास्ते चली जाऊँ," लोट्टी उदासी से कहती और फिर एक उदास हंसी हंसती। गौडी की इकलौती इच्छा थी कि कैसे भी, कुछ भी करके, वह अपनी साथिन की मदद करे। दिन के समय वह अपनी आंखें नीले आकाष्ठा और सफेद बादलों की ओर उठाता, और रात के अंधेरे में टिमटिमाते तारों की ओर, और वह सच्चे दिल से, लगातार प्रार्थना करता।

ऐसे ही एक दिन जब गौडी बैठकर प्रार्थना कर रहा था, उसने सागर में बड़ी दूर एक सफेद फुहारा देखा, और फिर व्हेलों का एक झुण्ड उसे तैरता नज़र आया।

"अरे देखो, क्या यह यात्रा करने वाली उन व्हेलों का दल हो सकता है, जिनसे मैं तब मिला था? वे मरने के लिए कोई स्थान ढूंढ रहे थे। कहीं सारी जगहों में से उन्होंने इसी जगह को तो मरने के लिये नहीं चुन लिया? काष्ठा ऐसा न हो! खैर, मैं जाकर उनसे दुआ सलाम तो कर आऊँ।" और वह तैर कर उनसे मिलने गया।

"ओह, यह कौन है यहाँ? यह वही कछुआ है न, जिससे हम इतने पहले मिले थे? हो! हो! हो! मैं कहता हूँ, तुम्हें फिर से देखना बहुत अच्छा लग रहा है, दोस्त, बड़े कछुए!" व्हेलों के नेता ने गौडी की ओर स्नेह से देखा।

"जब हम तुमसे पहले मिले थे, हम सब मरने के लिये कोई उपयुक्त स्थान ढूंढ रहे थे। उन जहरीले पानियों में तैरते भटकते, यह केवल कुछ समय की ही बात थी जब हम मर ही जाते। ओह, वह पानी किस तरह हमारे ष्टारीर को काटता था, और हमारे दिलों को क्रूरता से घायल करता था!"

"लेकिन" गौडी बीच में ही बोला, "उस सब के बावजूद, तुम सब काफी प्रसन्न दिख रहे हो। ऐसा लगता है कि तुम पहले से बेहतर हाल में हो।"

"तुमने सुना नहीं? तुम्हें प्रष्ठान्त महासागर के दूसरी ओर सूरिया के सागर का अवष्ठय पता होना चाहिए। वहाँ पर एक पेड़ समुद्र तल से उठकर बाहर निकला हुआ है। वह अविष्ठवनीय रूप से विष्ठाल है, और वह जीवन वष्टक्ष है जो हम सबको सहारा देगा। पूरी पष्टथ्वी से, सभी प्रकार के जीव उस पेड़ की ओर बढ़ रहे हैं ताकि उसकी जड़ों का अमष्टत पी सकें। तभी तुम हमको आज इस स्थिति में देख रहे हो। यह उसी पेड़ के सत्व का कमाल है। यदि फिर कभी हमारे गले दोबारा घायल हुए, तो हमें सिर्फ यही करना पड़ेगा कि तैर कर वापस वहाँ जाएं और जल्दी से ठीक हो जाएं।"

"मुझे नहीं पता था," गौडी ने कहा, "मैंने तो कभी सोचा भी न था कि ऐसी किसी चीज़ का अस्तित्व हो सकता है।"

गौडी ने उस पेड़ की स्थिति के बारे में पता लगाया और फिर लोट्टी को बताने के लिये जल्दी-जल्दी वापस आया।

"लोट्टी, हो सकता है कि जिस अनजान बीमारी के कारण तुम पीड़ा भुगत रही हो, उसका इलाज भी सूरिया के सागर में स्थित इस जीवन वष्टक्ष में हो, जो प्रष्ठान्त में दूर उगा है।"

"जीवन वष्टक्ष? तुम किसकी बात कर रहे हो?"

"ओह, मैं खुद उसके बारे में बहुत कम जानता हूँ, पर ऐसा कुछ है कि केवल उस पेड़ के पास जाने से, उसे छूने से, और उसका रस पीने से, मन, ष्टारीर और आत्मा की सभी बीमारियां दूर हो सकती हैं। यही वो व्हेलें कह रहीं थीं।"

"खैर, मुझे विष्ठवास नहीं होता", लोट्टी ने कहा, "महासागर में हमेष्ठा ही ऐसी मनगढ़न्त बातें फैलती रहती हैं।"

"अब इतनी जल्दी भी निज़्कर्ज़ न निकालो, लोट्टी। इस दुनिया में, जब प्रकृति को असहायता की सीमा तक कुचल दिया जाता है, तब अविष्ठवसनीय चीजें तो होनी ही हैं। वास्तव में इस सागर में जितने रेत के कण हैं, संभवत: उतनी ही ऐसी चीजें हैं जिन्हें हम जानते या समझते नहीं। जो भी हो, मैं उसका पता लगाने जा रहा हूँ, चाहे वह कितना भी दूर हो। हम कछुओं में एक पुरानी कहावत है-"दुर्भाग्य भी दो सालों बाद खुष्ठी में बदल जाता है।" पर मुझे सन्देह है कि मानवीय हाथों द्वारा लाई यह विपत्ति कभी खुष्ठी में बदल सकती है। हाँ, लेकिन जीवित प्राणियों के लिये आष्ठा ही जीवन है। हमें आष्ठा नहीं छोड़नी चाहिये। हो सकता है कि इन दिनों ऐसे कछुए ष्ठिष्ठु अपने अंडों को तोड़कर बाहर निकल रहे हों जिनकी आंखें अन्धी हों, कान बहरे हों, यहां तक भी कि वे अपने सिर और पैर अपने खोल के भीतर न खींच सकते हों, लेकिन

तब भी क्या हुआ? चाहे हमारे रास्ते कुछ भी आए, मैं वह सब कुछ करूंगा जिससे आष्ठा जीवित रह सके।" लोट्टी गौडी को संष्ठाय के साथ सुन रही थी, पर उसके ह्रदय में गर्व और खुष्ठी का उबाल फूट रहा था।

लोट्टी के फूलते जाते पेट और उसकी बीमारी के और ज्यादा गम्भीर होने के साथ ही, गौडी सूरिया के सागर की ओर चलने को तैयार हो गया।

"ओह, प्रिय गौडी, मेरे पास जल्दी वापस आना। अगर तुम्हें जीवन वष्टक्ष न मिले तो भी, मेरे लिये यही काफी है कि तुम मेरे नज़दीक हो।"

"हाँ लोट्टी, मैं जल्दी आऊँगा, और हम तुम्हारे ष्टारीर को सारी समस्याओं से मुक्त कर देंगे। ओह, और उन जन्म लेने वाले नन्हें कछुओं के बारे में चिन्ता करना छोड़ दो।"

"ए कछुए, ए कछुए कछुए,
इस जहाँ में, इतने बड़े सारे जहाँ में
कोई भी, कहीं भी, तुम-सा धीमा नहीं
ओह, इतना धीमा, तुम जीते हो कैसे?"

गाते हुए और अपने आप से हंसते हुए, विष्ठाल कछुए गौडी ने एक बार फिर सूखी जमीन छोड़कर सागर अपनाया और वह सूरिया के समुद्र की ओर पैर मारने लगा।

जीवन वष्टक्ष कहाँ है?

गौडी को जल्दी ही दिख गया कि महासागर के पानी में, ऊपर आसमान में और नीचे समुद्र तल पर सभी प्रकार के जीव उसी दिष्ठा में बढ़ रहे थे जिसमें वह बढ़ रहा था।

"सूरिया के सागर तक बढ़ते चलो, सूरिया के सागर की ओर" - गौडी को यही जप करते हुए जीव मिले, जो पंख फड़फड़ाते, पूँछें व पैर हिलाते, चेहरों पर दष्टढ़ता का भाव लिये आगे की ओर बढ़ते जा रहे थे।

'हो-कितनी लम्बी परेड है। मैंने तो बिल्कुल सोचा भी न था कि मैं इतनी भीड़ के बीच में आगे बढूंगा। हूं, पर कुछ लोग उस दिष्ठा से लौट भी रहे हैं, और वे सचमुच खुष्ठा दिखते हैं। उनमें से कई मुंह में पत्तियां पकड़े हुए हैं। यह अवष्ठय ही जीवन वष्टक्ष की पत्तियां होंगीं।'

सागर की सतह पर लगातार पैर मारते गौडी को एक नौका पर सवार खरगोष्ठों का बड़ा सा झुंड मिला।

"क्या हो रहा है, दोस्तों? क्या तुम जीवों को भी यहां सागर में कोई काम करना है?"

"जरा हमारी आंखें तो देखो। विष्ठवास मानो कि ये कुदरती रूप से ऐसी नहीं हैं। लोगों ने इन्हें ऐसा बना दिया है। इन लाल आंखों में हर रोज किसी प्रकार की दवा डालकर प्रयोग किया जाता था, यह देखने के लिये कि हमारी बेचारी आंखें कितना झेल सकती हैं।" वह खरगोष्ठा लगभग क्रोध से गुर्रा रहा था, जब वह मनुज़्यों के साथ अपने अनुभव सुना रहा था।

"लेकिन, क्यों?"

"हम नहीं जानते।" इस पर एक और खरगोष्ठा बोला "वह सौन्दर्य प्रसाधनों का एक परीक्षण था।"

"सौन्दर्य प्रसाधन?"

"हां, जिससे लोगों के चेहरे ज्यादा आकर्ज़क नजर आएं। उनको इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि ऐसे प्रयोग से वे दूसरे जीवों के चेहरे नज़्ट कर दें, ये नीच इंसानी जीव!"

"मैं एक मछलीघर में रहता था, तो मैं भी लोगों के बारे में कुछ जानता हूँ। यह कैसा गलत जीव है जिसने हम सभी जानवरों के ऊपर ष्टाक्ति और समृद्धि का दर्जा पा लिया है, है न?"

यह कहकर, गौडी पानी के अंदर गोता लगा गया जिससे अंदर की दुनिया देख सके। तभी उसे पानी में पलटी देते

हुए करीब दस डाल्फिनें उसके बगल से तेजी से गुजरीं।

"होआ डाल्फिनों! क्या यह खतरनाक नहीं? सागर में सभी जीव तो तुम्हारे जैसी गति पर नहीं चल सकते। जरा हम बाकी सबों के बारे में भी कुछ सोचो।"

"माफ करना, बड़े कछुए। उफ यह बहुत ही बुरा है। जरा देखो तो, हमारी चमड़ी के नीचे बम तथा वायरलैस रिमोट कंट्रोल उपकरण डाले गए हैं। अब इन इन्सानों को केवल अपने आरामदेह निर्देष्ठा केन्द्र में बैठकर केवल एक बटन दबाना है और हम सीधे दुष्ठमनों के बीच पहुंच जाएंगे और फिर भड़ाम! जहां पर हम होंगे वहीं बम पहुंच जाएंगे। बेष्ठाक, हम इस समय पागलों जैसी तेज गति से तैर रहे हैं लेकिन जो आतंक ठीक हमारे ष्टारीर में डाला गया है, उससे हम कैसे दूर भाग सकते हैं?"

"ओह, कितना दर्दनाक है!" गौडी ने कहा, "मैं वापस सतह के ऊपर जाकर तैरता हूँ।" जब उसका ष्टारीर पानी के ऊपर निकला तो उसने बहुत से उड़ने वाले प्राणी आकाष्ठा में देखे, जो सबके सब सूरिया सागर की ओर बढ़ रहे थे। वे इतनी बड़ी संख्या में थे कि उन्होंने सारी धूप तक नीच आने से रोक दी थी।

'पता नहीं इस समय मेरी प्रिय लोट्टी कैसी होगीख्र मुझे जीवन वष्टक्ष को ढूंढना ही है, और जल्दी से जल्दी!'

बड़े कछुए ने अपने पूरे ष्टारीर को गति में डाल दिया और प्राणों को बचाने के लिए पैर मारने लगा- उसकी प्रिय लोट्टी के प्राणों के लिये।

ख्र.

कुछ घंटे बाद, गौडी ने सागर की सतह पर अपने से आगे एक काला बिन्दु देखा। जैसे जैसे वह बड़ा होने लगा, वह हैरत से अपने आप से बोलने लगा। 'यह क्या हो सकता है, जो दूर लहरों पर तैर रहा है?'

और ज्यादा जोर मार कर तैरते हुए, बड़ा कछुआ और नज़दीक गया। जल्दी ही उसे एक विष्ठालकाय जहाज, एक पुराना टैंकर, नज़र आया।

'ओह, काष्ठा यहां नहीं। कहीं मनुज़्यों ने अपना बेकार तेल का टैंकर यहां तो नहीं छोड़ दिया? या फिर वह सूरिया के सागर में घिनौना तेल या तारकोल तो नहीं फेंकना चाहते हैं? मानव कितने हृदयहीन होते हैं, जिनको भांप पाना असम्भव है। देखता हूं कि मैं इस के ढांचे में छेद करके इस मुसीबत को डुबा सकता हूं या नहीं।'

गौडी गुस्से में तेजी से तैरता हुआ जहाज की ओर गया, पर उसके लिये एक और अचंभा सामने था। जहाज के डेक पर उसे तरह-तरह के जानवर नजर आए और फिर उसकी दष्टज़्टि ऊँचे मस्तूल पर लहराते झंडे पर पड़ी, जिसपर लिखा था-'प्रकृति माता का सफेद क्रॉस।' फिर उसने सफेद एप्रन और सफेद दस्ताने पहने बंदर देखे जो इधर से उधर जहाज के चौड़े डेक पर दौड़ रहे थे। इनमें से कुछ मस्तूल से लटकी हुई रस्सियों को झूलने के लिये इस्तेमाल कर रहे थे, और डेक के एक हिस्से से दूसरे तक झूल कर जा रहे थे। असल में यह एक बेहद व्यस्त जगह प्रतीत हो रही थी।

अचानक, डेक के सिरे पर रेलिंग के पास खड़े एक बंदर के हाथ से एक केला छूट कर गिर गया। गौडी ने पानी में गोता लगाया और मुंह में केला लेकर ऊपर आ गया।

"वाह दोस्त, विष्ठाल कछुए," बंदर ने चिल्ला कर कहा, "बहुत धन्यवाद, क्योंकि यहां आसानी से केले नहीं मिलते। कृपया मुझे पकड़ा दो।"

जब गौडी पैर चलाता हुआ टैंकर के किनारे पहुंचा, एक बड़े से बंदर ने एक घिरनी रेलिंग के ऊपर रख दी और उसकी सहायता से पानी में एक थैला लटका दिया। गौडी ने केले को थैले में डालने की कोष्ठिाष्ठा की, लेकिन इससे पहले उसे पता लगता कि क्या हो रहा है, उसे खुद खींच कर डेक पर ले आया गया था।

"ऐसा लगता है, बंदर दोस्त, कि तुम थोड़े जल्दी में थे," गौडी ने कहा, जब वह थैले से बाहर निकल कर डेक पर पानी टपकाता खड़ा हो गया। "तुम्हें केवल केला चाहिये था, पर तुम्हें बड़ा सारा मैं भी साथ मिल गया।" वह थोड़ी आष्ठांका के साथ हंसा, यह सोचते हुए कि आगे क्या होने वाला है।

गौडी ने जब सर घुमाया, तो सामने क्या दष्टष्ठय था! टैंकर का बड़ा सा डेक हर संभव माप के सफेद बिस्तरों से

भरा था। इन बिस्तरों पर तरह तरह के जानवर लेटे थे, और उनमें से कोई भी बहुत स्वस्थ नहीं लगता था। अपने सामने बहुत सी नस्लों के इतने जानवरों को कज़्ट में देखकर गौडी को अपने-आप पर ष्टार्म आई कि वह हमेष्ठा अपनी और अपने परिवार की ही चिंता करता आया था।

वहाँ पर नन्हें बिस्तरों पर झींगुर सो रहे थे और विष्ठाल बिस्तरों पर भारी-भरकम हाथी और अफ्रीका के घड़ियाल भी थे। पूरे डेक से पष्ठुओं की पीड़ा से कराहने की आवाजें आ रही थीं। 'यह तो अविष्ठवसनीय है। इस टैंकर पर तो लगभग हर नस्ल का कम से कम एक प्राणी तो मौजूद है ही।'

'क्या ये सब जीवन वष्टक्ष की तलाष्ठा में ही यात्रा कर रहे हैं?'

"विष्ठाल कछुए" बंदर ने गौडी की तंद्रा को भंग किया, "तुमने मेरी बड़ी मदद की है। एक केले से ही मैं अपने को स्वर्ग में महसूस करता हूँ। अगर ये वाला भी समुद्र में गिर जाता तो मैं बहुत दुखी होता।"

"क्या तुम खाने की तलाष्ठा कर रहे हो?" गौडी ने पूछा।

"हा, हा! हो हो! तुम तो मजाकिया किस्म के जीव हो, हैं? हमें तो खाना नहीं तलाष्ठाना है, बल्कि कोई तरीका जिससे हम उन प्राणियों की तकलीफों का हल ढूंढ सकें जैसे कई इस जहाज पर लेटे हैं।"

"क्योंकि हम बंदरों के पास भाज़ा का गुण नहीं है, वह गुण जो इंसानों को ष्टाब्दों की ताकत देता है, इसलिये इन्सान की नस्ल ऐसी थी जो अपनी मनमर्जी से दुनिया को बदलने में जुट गए। यद्यपि प्रकृति में कुछ चीजें ऐसी हैं जो कभी छेड़ी नहीं जानी चाहिये, इन्सान ने धरती में गहरे अंदर और समुद्र तल में सोई हुई चीज़ों को खोद डाला है। ओह, सभी तरह के पेड़-पौधे और जन्तु मानव की तानाष्ठाही से बहुत खफा हैं। हां, और मनुज़्यों को इस बात का भान भी नहीं है कि कुदरत लगातार देख रही है और उनके कर्मों का जायजा ले रही है।"

"हम यह भी जानते हैं कि उनमें से कुछ व्यक्ति बहुत काबिले तारीफ हैं। क्यों, यह जहाज जिसपर हम सवारी कर रहे हैं-यह बहुत साल तक मनुज़्यों की ऊर्जा, तेल, जो उन्होंने समुद्र तल को जगाकर निकाला था, उसे लाने, लमे-जाने के लिये इस्तेमाल होता था। लेकिन कुछ आदमी जिन्होंने अपने हृदयों में प्रकृति की पीड़ा को समझा, उन्होंने इस जहाज पर कब्जा कर इसे हमें एक तैरता अस्पताल बनाने के लिये दान कर दिया। अभी भी, इनमें से कुछ सच्चे इंसान इसी जहाज पर काम कर रहे हैं, ऐसी जगहों पर कि तुम्हें दिख नहीं रहे हैं। कहीं अगर ऐसे ही इन्सान दुनिया में आगे आ जाएं, तो हमें आष्ठा की नई किरण दिखने लगे। ओह, बहुत काम पड़ा हैख़."

बंदर जल्दी से अपने काम के लिए भागा, और पास ही लेटा एक हाथी कमजोरी से चिंघाड़ा। "एई, क्या हम वहाँ पहुंचे नहीं? क्या सचमुच जीवन वष्टक्ष जैसी कोई चीज़ है जिसके बारे में हमें बताया गया है? ओह, मुझे वहां जल्दी पहुंचना ही हैख़."

गौडी ने वहां डेक पर एकत्र हुए तरह-तरह के जीवों से कई तरह के किस्से सुने। वे सब के सब सुदूर सूरिया के सागर में स्थित उस करामाती पेड़ पर अपनी सारी उम्मीदें लगाए बैठे थे।

जब गौडी जानवरों से बातें कर रहा था, टैंकर के बहुत आगे आकाष्ठा में एक काला बादल जैसा बढ़ता जा रहा था। वह तेजी से उनकी ओर आता लगता था। आखिर में उन्हें नज़र आ गया कि वह हजारों की संख्या में पक्षी और अन्य पष्ठु थे, जो आकाष्ठा में, पानी की सतह पर, और पानी के अंदर, बिल्कुल बेतरतीब तरीके से, टैंकर की दिष्ठा में बढ़ते आ रहे थे।

इससे पष्ठुओं भरे जहाज में अफरा-तफरी मच गईं। जो बिस्तर बहुत तरतीब से लगाए हुए थे, वे यहाँ-वहाँ डेक के ऊपर धकेल दिये गए और पष्ठु दुविधा में चिल्लाते हुए भागने लगे।

"याऽऽऽख़ह!" जिस बंदर से गौडी सबसे पहले मिला था, वह चिल्लाता हुआ पास से गुजरा। ष्टोर से ऊपर चिल्लाते हुए गौडी ने पूछा, "ये हो क्या रहा है?"

"बड़े कछुए, तुम इतनी धीरे धीरे चलते हुए क्या कर रहे हो? भागो, बचकर भागने की तैयारी करो। लोग, लोग, मनुज़्य आ पहुंचे हैं! ये वहाँ सूरिया के सागर में एक दैत्याकार बम-परीक्षण की तैयारी कर रहे हैं।"

बंदर एक बार फिर व्यग्रता से चीखा और फिर मस्तूल पर दौड़ कर ऊँचा चढ़ गया। जल्दी ही उसकी आवाज टैंकर के लाउडस्पीकर पर गूंज उठी।

"सुनो, तुम सब सुनो। मनुज़्य फिर से एक और परीक्षण करने वाले हैं। मुझे यह बताते हुए बहुत तकलीफ हो रही है कि हम सूरिया के सागर की दिष्ठा में आगे नहीं जा सकेंगे। हम वापस मुड़ रहे हैं। कृपया ष्ठांत रहें, कृपया, लेकिनख़ ." उस साहसी बंदर की आवाज आखिर असहाय सुबकियों में डूब गई। उसका रुदन पूरे जहाज पर सुनाई दे रहा था। जब यह जहाजों में जहाज, यह तैरता हुआ प्राणी अस्पताल, जो कि इस पर सवार सब जीवों के लिये आष्ठा की स्वप्न नौका थी, धीरे धीरे अपना रास्ता बदलने को मुड़ा, विष्ठाल कछुए को अपना दिल डूबता हुआ महसूस हुआ और उसका पेट मचलने लगा।

'नहीं, फिर से नहीं। इन मनुज़्यों की करतूतें! जैसा लोट्टी ने कहा था, काष्ठा एक बार इन दुज़्टों के पैर में काटने भर को मिल जाए, जो हमारे कुदरती संसार का विनाष्ठा कर रहे हैं।'

'हां, यह सही है! मैं इन मानवों के सामने इतना असहाय नहीं हूं और इन्हें मेरे अस्तित्व का सबूत मिल जाएगा। मैं सूरिया के सागर की ओर जाऊँगा और मैं खुद जीवन वष्टक्ष से उस बम को हटाऊँगा।'

गौडी फिर से दूर नजर डालने को मुड़ा, जहाँ सागर के ऊपर आकाष्ठा में बड़े तूफानी बादल घिरते जा रहे थे, और उसने अपने आगे के काम के लिये अपने दिल व दिमाग को कड़ा कर लिया।

'लेकिन, अगर मैं जाता हूं, मैं ष्ठायद लोट्टी को फिर कभी न देख सकूंख़ हाँ, लेकिन अगर मैं उस पेड़ का रस लेने नहीं गया तो वह कितना कज़्ट भोगेगी।! ओह, मुझे सूरिया के सागर की ओर बढ़ना ही है और अपनी खुद की ताकत से इन्सानों को मजा चखाना ही हैख़ लेकिन, नहीं, मुझे अपने परिवार का ख्याल रखना चाहिएख़.'

'तुम क्या सोच रहे हो, ओ पागल कछुए? यदि वह जीवन वष्टक्ष टुकड़े-टुकड़े कर उड़ा दिया जाता है तो इस दुनिया के प्राणियों के पास अपनी आष्ठा जीवित रखने के लिये क्या बचेगा? मैंने हमेष्ठा, तब से ही जब मैं मछलीघर में था, केवल अपने बारे में ही सोचा है। मैंने अपने दोस्त पुलु के जीवन के बारे में भी कुछ नहीं सोचा। क्योंकि हम सभी इतने स्वार्थी हो गए हैं कि एक साथ खड़े नहीं हो सकते, इसीलिये मनुज़्य हमारे साथ अपनी मनमानी कर पाते हैं। हां, मैं सूरिया के सागर को जा रहा हूं। लोट्टी, खुदा करे कि तुम मेरे दिल की बात जान सको, खुदा करे कि तुम समझ पाओ।'

गौडी ने अपनी आंखें बंद की और डेक के किनारे से गोता लगाकर वापस सागर में चला गया।

ख़.

सूरिया का सागर दहकते सूर्य के नीचे चमचमा रहा था, उसका पानी जैसे जादुई नीले रंग से चमक रहा था। गौडी पानी के नीचे तैरता रहा, अपने सिर को सतह पर केवल सांस लेने के लिये और अपनी दिष्ठा आदि जानने के लिये, और इन्सानों को ढूंढने के लिये निकालता था। वह समुद्र के ठीक बीच तक तैर कर गया, क्योंकि उसने टैंकर वाले बन्दर से सुना था कि बम ष्ठायद वहां रखा था, पानी में करीब दो सौ मीटर की गहराई पर। यह भी सुना था कि जीवन वृक्ष कहीं आस-पास था, उस इलाके के ऊपर ऊँचा उठा हुआ, जहां बम भी तैरता हुआ मिलेगा।

जैसे जैसे गौडी अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता गया, उसे बार-बार विपरीत दिष्ठा में भागते हुए जानवरों के बीच से गुजरना पड़ा, फिर उसे अपने सामने दिखाई दिया-एक विष्ठालकाय पेड़, जिसकी ष्ठाखाएं पानी में हर दिष्ठा में फैलीं थीं।

'आहह, तो यह है जीवन वष्टक्ष? यह तो सचमुच ही बहुत बड़ा है। सुनते हैं कि इसकी जड़ें समुद्र तल को मजबूती से पकड़े हुए हैं, और यह सागर के जरिये ऊपर सतह से निकल कर वायु में फैला हुआ है परख़ सच्चाई है कि यह एक हैरतअंगेज पेड़ है। इसको एक बम से उड़ाने की इच्छा भी रखनाख़ख़।'

गौडी अब ठीक समुद्र के बीच था कि अचानक उसे एक स्टील के तार से बने जाल ने रोक दिया। यह जाल परीक्षण स्थल को बंद करने के लिये इस्तेमाल किया गया था। 'ये लोग क्या सोचते हैं? मैं इसे मुंह से काट कर अपने उद्देष्ठय की ओर बढ़ चलूंगा।' गौडी ने यही किया, और फिर अपने बनाए छेद से बम परीक्षण क्षेत्र में घुस गया।

ख़.

‘अब वह सत्यानाशी बम कहां हो सकता है?’ गौडी तैरते और खोजते हुए अपनी नजर चारों ओर दौड़ाता रहा। उसका ध्यान केवल एक ही लक्ष्य की ओर लगा था। जब भी वह तैरना बंद करता, उसे अपने आसपास का समुद्र एक कब्र की तरह सुनसान और जड़ नजर आता।

‘उस बंदर ने कहा था कि वहां एक काला बिजली का तार बम से जुड़ा हुआ मिलेगा। अब अगर मैं उसे काट डालूं तो वे हृदयहीन मानव इस महान वृक्ष को उड़ा नहीं सकेंगे, चाहे वह कितनी ही कोशिश क्यों न कर लें। खैर, मुझे जल्दी से जल्दी वह तार ढूंढना ही है।’

विशाल कछुआ अपने आप से बोलता रहा और खोजता हुआ तैरता रहा। इसके बाद उसकी आंखें एक और असली अचंभे पर पड़ीं।

‘क्या यहां पर भी कोई हो सकता है जिसने अभी तक बच निकलने की कोशिश नहीं की? क्या कारण हो सकता है? अवश्य ही सागर में पैदा हुआ और पला बढ़ा कोई भी जीव खतरे के संकेत पहचान सकता है।’ गौडी तैरकर और नज़दीक गया, और उसने देखा कि वहाँ पर सभी आकारों के निन्यानवे ऑक्टोपस, समुद्र तल पर पंक्तियां बनाए बैठे थे।

“ऐ तुम सब, बेहतर है कि तुम जल्दी से जल्दी यहां से भाग जाओ!” गौडी चिल्लाया, “जल्दी, सब के सब।”

“अमख्र ठीक है, हमें पता है। लेकिन क्यों भागें? हम कुछ नहीं कर सकते। देखो, अगर हम यहाँ से बच कर निकल भी जाएं, तो भी हमारे शरीर स्वस्थ नहीं हो पाएंगे।”

“हमसे से जो जीव भी सचमुच जीना चाहते हैं, वे हमेशा उम्मीद के सहारे रहते हैं और आशा की किरणें तलाशते रहते हैं।”

“जब हम उम्मीद की तलाश में नहीं होते तो भी अक्सर हम खुद उम्मीद का निर्माण करते हैं। आज की दुनिया में, उम्मीद बनाए रखना इतना आसान नहीं रह गया है। सचमुच, मानवों ने इस सागर में क्या फेंका है? हम तो उन्हें यहाँ रोज सागर में चीजें डालते हुए देखते हैं, हर कहीं। यहां तक कि वे अपने नाभिकीय ऊर्जा संयंत्रों का कचरा भी यहीं फेंकते हैं। और संभवत: उनका ख्याल है कि कोई उन्हें देख नहीं रहा, किसी को पता नहीं है। ‘ओह, पर महासागर तो इतना विस्तृत, इतना गहरा है।’ वे एक दूसरे से कहते हैं। इतने विराट अदृश्य संसार में अगर कुछ गलत घट रहा होता है, जब तक वह इतना बड़ा हो जाता है कि मनुष्य उसे देख सकें, तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।”

गौडी से बात करने वाले ऑक्टोपस ने उसे दिखाने के लिये अपनी आठ भुजाएं आगे बढ़ा दीं। वे भुजाएं सूज गई थीं, और उनपर बने चूज़क फिसलने से हो गए थे जैसे जैली के बने हों। ऑक्टोपस की आंख में एक बड़ा सा आंसू कांप रहा था।

“महासागर के सभी जीवों के शरीर इस तरह से क्षय हो चुके हैं। और वे बहुत तकलीफ में हैं। हम मशहूर जीवन वृक्ष की खोज में बहुत दूर से आए हैं। हमने सुना था कि वह इसी क्षेत्र में कहीं है, पर हम यहां दो दिन से खोज रहे हैं और पेड़ का कहीं नाम तक नहीं है।”

“तुम्हें गलती हुई होगी,” गौडी ने कहा, “मैंने स्वयं इस महान वृक्ष को दूर से देखा था, जब मैं इस सूरिया के सागर में तैर कर आया था। मैं तुम्हें बता सकता हूं कि मेरी ये आंखें कभी भी किसी दृष्टिभ्रम से धोखा नहीं खातीं।”

आक्टोपस ने धैर्य से सुना, फिर अपना सिर न में हिलाया। “नहीं, मैं किसी भी चीज के बारे में केवल देखकर निर्णय नहीं लेता। आंखों के सामने बहुत तरह की चीजें दिखाई देती रहती हैं। उदाहरण के लिये, कल्पना करो कि तुम बहुत ज्यादा भूखे हो, और एक रसीली मछली पाने के लिये अपने आठ पैरों–माफ करना, बड़े कछुए, चार पैरों में से कोई भी देने को तैयार हो। ऐसे समय में, समुद्री घास का एक पत्ता या एक पत्थर भी तुम्हारी भूखी आंखों को मछली जैसा नजर आएगा।”

“यह ख्याल तुम्हें कैसे आया?” गौडी ने पूछा। “केवल जो चीजें आंखों द्वारा देखी जा सकती हैं, वही हमें दिखती हैं।”

“मैं तुम्हें यही बता रहा हूं, बड़े कछुए, कि हम किस तरह सोचते हैं। अब देखो न, हम उस जीवन वृक्ष की खोज में आए पर उसे ढूंढ न सके। जीवन वृक्ष असल में यहीं, हमारे अंदर है, हमारे दिलों के अंदर। मैं समझता हूं वह और कहीं

नहीं है।"

गौडी की भष्टकुटी तन गई। "मुझसे पहेलियां क्यों बुझाते हो? व्हेलों का पूरा का पूरा झुंड फिर से स्वस्थ हो गया, है न? खैर, जो भी हो, जीवन को तो आगे बढ़ना है ही। मैं तो आया हूँ मनुज़्यों के उस घष्टणित बम का नाष्ठा करने। जरा मेरे इन दांतों को देखो, हाँ!"

गौडी ने चौड़ी मुस्कान के साथ अपने दांत - धब्बों, छेदों समेत - उस दल को दिखाए।

"ठीक है, तुम उत्तर की दिष्ठा में खोजने का प्रयास कर सकते हो, क्योंकि हम उस दिष्ठा में अभी ज्यादा आगे नहीं गए हैं। यहाँ से ठीक 229 मीटर उत्तर पहुंच कर हम मुड़ गए और दक्षिण की ओर बढ़ गए। यह सही है, क्योंकि जब हम एक स्थान से दूसरे की ओर जाते हैं तो हम हमेष्ठा चलते-चलते अपने पैरों से दूरी नापते जाते हैं। हाँ, 229 मीटर।"

जैसे ही गौडी ने यह सुना, वह बड़ा कछुआ पानी और रेत को हिलाता हुआ, उत्तर की दिष्ठा में पैर मारते, पूरी ष्टाक्ति से आगे बढ़ चला।

'आहा! यही होना चाहिये। हाँ, जैसा वह टैंकर वाला बंदर कह रहा था, एक लम्बा बिजली का तार बम तक जाता हुआ, और जैसे ही उस तार में करेंट दौड़ता है, बम फट जाता है। ठीक है, मैं इस तार को अपने इन्हीं दांतों से काट डालता हूँ।'

गौडी अपने आगे के पैरों को जोर-जोर से मारता हुआ, तेजी से बम की ओर झपटा।

'हूं, पर अगर जिस समय मैं इस तार में दांत गड़ाऊँ, मनुज़्य उसी समय करेंट छोड़ दें तो? ओह, लेकिन मुझे तो उसे काटने में क्षण भर लगेगा। या खुदा, मेरा क्या होगा अगर वह करेंट मुझे मार देता है? लोट्टी, मैं उसे फिर कभी नहीं देख पाऊँगा। मैं ऐसे झटके से बच नहीं सकता, मैं कभी नहीं लौटूंगा। हां, पर एक मूढ़ बिजली के तार से तो मैं कहीं ज्यादा तेज और बुद्धिमान हूँ।'

'लोट्टी, सुनती हो, जरा-सा और देर इन्तजार करो। मैं बस अपने कार्य को पूरा करके तुम्हारे पास जल्दी ही वापस आ जाऊंगा। पर अगर मैं नहीं लौटा, तो मैं अपने बच्चों को कैसे देख पाऊँगा? मेरी लोट्टी की देखभाल कौन करेगा?'

उस तार के साथ-साथ चलते और बेचैनी से अपने चारों ओर देखते गौडी तैरता रहा, जब तक कि अचानक उसके सामने एक बदसूरत धातु का गोला लटका नजर न आया, जो पानी की सतह से 250 मीटर नीचे लटका हुआ था। वह उस नष्ठाष्टंस गोले के चारों ओर तैरता रहा, और सोचता रहा।

'ठीक है, बिना ष्टाक यही है वह। यही वह बम है जो निर्मम मनुज़्यों द्वारा प्रकृति को नज़्ट करने के लिये बनाया गया है। इनके प्रभाव से ही वायुमंडल, महासागरों का पानी और रेगिस्तान की रेत, सभी विकिरण से घिर गए है। ऐ, जरा बोल, मुझे जवाब दे, तू भौंडी घिनौनी चीज़!'

गौडी एक क्षण को रुका और फिर उसने उस गोले पर अपने कड़े कवच से टक्कर मारी। बम ने जरा सी न आवाज की, न हिला। वह सिर्फ वहां तैरता रहा। एक स्याह राक्षसी धातु का गोला, रहस्यमय रूप से चमकता हुआ।

ठीक इसी समय, कई मील दूर, मानवों का एक समूह एक मीनार में ऊँचाई पर बैठा था, और एक उंगली एक बटन पर रखी थी। जिस पल भी यह दबती, बम में करेंट बहकर जाने लगता और एक टाइम उपकरण उन आखिरी क्षणों को गिनने लगता जब उसे विस्फोट करना था। वहाँ इकट्ठे मनुज़्य एक दूसरे से व्यस्तता से बातचीत कर रहे थे।

"कितना खूबसूरत मौसम है न? दक्षिणी प्रष्ठान्त में विस्फोट करने के लिये बिल्कुल बढ़िया दिन। जानते हो, मैं इन परीक्षणों से कभी नहीं थकता, चाहे हमें ये कितनी ही बार करने पड़ें। यह तो सबसे नवीनतम बम है। कोई भी और देष्ठा ऐसा बम बनाने में सक्षम नहीं है, इसलिये यह विष्ठव ष्टांति का अन्तिम हथियार है।"

उसके सहायक ने जवाब दिया, "पर आपने तो पिछले वाले के बारे में भी यही कहा था।"

"क्या बेमतलब की बात है! मानव को लगातार प्रगति करनी चाहिये। आविज़्कार, बन्धु! आविज़्कारों के सहारे ही हमने पूरी दुनिया को अपने नियन्त्रण में ला दिया है। हाँ, और आविज़्कार, और ज्यादा!"

"ओह, पर आपने यह तो देख लिया न कि नज़दीक के सभी द्वीपों पर रहने वाले लोग खतरे के क्षेत्र से बाहर निकाल

दिये गए हैं कि नहीं?"

"सारे के सारे नहीं । कुछ जिद्दी बेवकूफ वहीं रहने पर अड़े हैं।"

"द्वीपों के ये अड़ियल निवासी असल में काफी परेष्ठान करते हैं। क्यों, हमने ये टापू तीन सौ साल पहले खोजे थे और इनपर अपना पूरा कब्जा भी कर लिया था। ये द्वीप हमारे हैं। ओह, ठीक है, हम इससे ज्यादा क्या कर सकते हैं? महासागर इतना विस्तष्टत है, और कोई भी पक्की तरह से कह नहीं सकता कि हमारे काम का क्या परिणाम होगा, जब एक बार परीक्षण खत्म हो गए।"

"बिल्कुल। यही नहीं, इस बार हमारे प्रयोग के परिणाम हमारे अंतरिक्ष प्रोग्राम के विकास के लिये महत्वपूर्ण होंगे। हम अगली सदी तक अंतरिक्ष पर भी राज कर लेंगे, यह तो तय है। अरे, तुम, जो बटन के पास खड़े हो! अब देरी किस बात की है? हमारे पास पूरा दिन नहीं है-चलो परीक्षण चालू करो।"

उस अफसर का निर्देष्ठा उसके सहायक द्वारा दोहराया गया। "ठीक है। सब तैयारियां पूरी हैं। यह वास्तव में एक गौरवपूर्ण दिन है, क्योंकि हमारे देष्ठा ने आज तक 999 परीक्षण कर लिये हैं। यह हजारवां है। उल्टी गिनती चालू करो।"

100, 99, 98, 97, 96, 95, 94, 93, ख़.

दूर पानी के अंदर, गौडी को कोई अनुमान न था कि नियन्त्रण मीनार में क्या हो रहा है। उसने अभी अभी वह मजबूत तार अपने जबड़ों में लिया था।

'यह किस नासपीटी चीज़ का बना है? कितना सख्त है ये।'

बेचारे गौडी ने अपेक्षा की थी कि तार करीब उतना सख्त होगा जितनी समुद्री घास से बटी हुई एक रस्सी होती है।

'मैं हार नहीं मानूंगा! एक बार फिर - खच्च! हो, मेरे दांतों ने इस तार में एक निष्ठान बना दिया। हाँ, तार के कुछ डोरे कट गए हैं। मुझे वो पानी में दिख रहे हैं।'

ओह, पर जो गौडी को असल में दिखा, वह टूटे हुए दांतों के टुकड़े थे, उसके खुद के दांतों के।

'क्या मैं फिर से मनुज़्यों से हार जाऊँगा? मेरे दाँत, जिनपर मानव हंसते थे, देखो जरा उनका क्या हुआ है। मैं ऐसा बिल्कुल नहीं होने दूंगा। सुनो, तुम मनुज़्यों, महासागर को वापस दो, आकाष्ठा को वापस दो, धरती को वापस दो। हमें अपने प्रिय माँ प्रकृति वापस दो!' गौडी सागर में चिल्ला रहा था, उसके टूटे दाँत टेढ़े होकर उसके मुंह के बाहर निकले हुए थे। फिर, उसके खोल के अंदर की सारी ताकत उसके थके ष्टारीर में तेजी से बहती हुई आई। वह पूरा का पूरा एक बार कांपा, फिर उसने तार के चारों ओर अपने जबड़े बेतहाष्ठा ताकत के साथ जकड़ दिये, वह ताकत जो लम्बे संघर्ज़ और संकल्प से पैदा होती है।

उल्टी गिनती तेजी से ष्ठून्य की ओर बढ़ रही थी। बहुत दूर नियन्त्रण मीनार में, और एक बड़े से जहाज में, जो दूसरी दिष्ठा में कहीं दूर तैर रहा था, लोग विस्फोट के उस रोमांचक क्षण का इन्तजार कर रहे थे।

अब वे सब के सब एक साथ बोल रहे थे - 8, 7, 6, 5, 4, 3, 2, 1 - ज़ीरो!

बिजली का करेंट तार के जरिये छूटा, और-

"आआऽऽऽहहहऽऽ-!" विष्ठाल कछुए का ष्टारीर इतने ष्टाक्तिष्ठाली विद्युत आवेष्ठा से भर गया कि उसका कवच क्षण भर को चटख नारंगी रंग से चमक उठा। उसके आसपास के सागर का जल उबलने लगा, और उससे बुलबुले व भाप निकलकर समुद्र की सतह पर उठ गए। एक कौंध में गौडी का दिमाग अपने मछलीघर के जीवन के दृष्ठयों से और पुलु व लोट्टी की छवियों से भर गया। उसके जबड़ों में एक और ऊर्जा की लहर दौड़ी और क्लिक! उसके चिटके हुए दांतों ने तार को काट दिया, बिल्कुल उसी समय, जब उसका ष्टारीर एक काला राख का लोंदा बन गया।

गौडी की आंखें, पैर और पूंछ टुकड़े-टुकड़े होकर पानी में हर दिष्ठा में छूट गए थे, पर उसके जबड़े अभी भी तार के कटे हुए सिरे को जकड़े हुए थे, उसका काला, जला हुआ ष्टारीर वहीं अटका था, सागर की लहरों के साथ झूलता हुआ।

बम, जड़, वैसा का वैसा, धीरे धीरे डूबता हुआ महासागर के तल पर बहुत नीचे बैठ गया।

उसी दिन, गौडी के महान बलिदान के स्थल से बहुत दूर, एक अकेली कछुवी एक द्वीप पर बैठी थी। उसकी

दृष्टज़िहीन आंखें सूरिया के सागर की ओर मुड़ी थीं। 'आज होगा, या कल याख़' लोट्टी आष्ठांका व प्रत्याष्ठा के साथ इन्तजार कर रही थी। जैसे जैसे उसके अंडे देने का समय नज़दीक आ रहा था, उल्लास और भय से उसका हृदय भरता जा रहा था। पूर्ण चंद्रमा के नीचे ठंडी रात्रि बयार बह रही थी। 'गौडी का क्या हुआ है? मैंने सुना है कि सूरिया के सागर से सभी जीव भाग कर चले गए। मुझे बिल्कुल परवाह नहीं, अगर उस जादुई वष्टक्ष की पत्तियां न मिल पाएं। पर क्या होगा अगर गौडी घर लौटते वक्त रास्ता भटक जाएख़.'

लोट्टी एक पहाड़ी पर बैठी थी। उसका चेहरा सागर की ओर था। बड़ा सा गोल चंद्रमा धीरे-धीरे आकाष्ठा में चढ़ रहा था। सागर, नभ व धरती, और ऐसा लगता था अंतरिक्ष की सब चीजें भी, सब की सब, चुपचाप थीं, जैसे कि कुछ होने का इंतजार कर रही हों।

'ओह, दर्द होता है।' लोट्टी अचानक मुड़ी और पहाड़ी के नीचे बालू के चौड़े विस्तार की ओर उतरने लगी, जितनी तेजी से कोई कछुवी, अंडों से भरे पेट को लेकर उतर सकती थी। और जैसे सौम्य लहरें ष्टांति से तट की गोद को छू रही थीं और एक मीठी बयार लोट्टी के तन को छेड़ रही थी, वह नितांत दक्षता के साथ गड्ढा खोदने में जुट गई, यद्यपि उसे इस प्रकार खोदना किसी ने भी नहीं सिखाया था। किसी प्रकार की एक आवाज़ थी, जो उसके अंतर्मन से प्रकृति की भाज़ा बोल रही थी। जिससे उसका पूरा अस्तित्व एक छिपी हुई, पर पूर्णतः वास्तविक इच्छा ष्टाक्ति और भावना से ओतप्रोत हो गया था।

चेहरे से टपकते पसीने के साथ, लोट्टी ने सांस खींची और एक सफेद अंडा, बिलकुल पिंगपांग गेंद जैसा, बाहर निकल कर रेत के गड्ढे में चमकने लगा। लोट्टी ने अत्यन्त हर्ज़ और पीड़ा के साथ गहरी उसांस भरी और कोमलता से अपने सर्वप्रथम अंडे को छुआ।

जब सौ की संख्या वाला अंडा उस बालू के गड्ढे में दूसरे अंडों के साथ आ गया, लोट्टी ने अपनी आखिरी ष्टाक्ति को छीजते हुए महसूस किया। वह मुड़ी, और जैसे ही चांदनी की जगह ऊज़ा की पहली किरण ने ली, लोट्टी ने अपने आगे व पीछे के पैरों से उन अंडों के ऊपर रेत डाली, जब तक वे पूरी तरह ढक न गए।

आखिरी गहरी सांस लेते हुए, लोट्टी ने अपने आप को कहते सुना, ''गौडी, तुम कहां हो, गौडीख़ख़" फिर उसकी आत्मा, उसके थके हुए बीमार ष्टारीर को छोड़कर उस स्थान की यात्रा पर चल दी, जहाँ गौडी प्रतीक्षा कर रहा था।

ख़ख़

दो महीने बीत चुके थे, और चंद्रमा एक बार फिर अपने संपूर्ण, पूर्ण वष्टत्ताकार स्वरूप में आ गया था। आज की रात, समुद्र के किनारे की रेत एक बड़ी भीड़ का स्वागत करने वाली थी।

वे फूट गए। एक सौ ष्ठिाष्ठु कछुए अपने खोलों को तोड़कर बाहर आए, ऊपर ढकी रेत के जरिये रास्ता बनाकर निकले, और अनजाने, अपनी मष्टत माँ के खोल के ऊपर चढ़कर आगे बढ़ गए। चाँदनी में भीगे हुए ये नन्हें कछुए जीवन की लय में बंधे हुए, साथ-साथ रेत को पार करते हुए, उन लहरों की ओर बढ़े जा रहे थे, जो सदा तट से मिलने के लिये आतुर रहती थीं।

पानी में लड़खड़ाते हुए, जल्दी ही वे ऊपर-नीचे उतरा रहे थे, जैसे कि तूफानी धाराओं में पत्तियां यहां वहां फेंकी जाती हैं। तैरते रहने का संघर्ज़ करते हुए, उन्होंने अपने पैर बाहर की ओर फैलाए, और उन्हें पानी में चलाने लगे। पूरी खुली आंखों के साथ, आंखों को नचाते हुए, नन्हें कछुए साथ-साथ उतनी मजबूती से तैरने लगे जितनी संभव थी, बिल्कुल इस प्रकार जैसे उनकी पीठों पर दिग्सूचक लगे हों, और वे सूरिया के सागर की ओर सीधे चल पड़े।

क्या यह हवा थी, या फिर तरंगें थीं-किसी ने उस सन्नाटे को एक गीत से तोड़ा, एक गीत, जो सभी प्राणियों के लिये था।

'कर दो नभ वापस,
कर दो धरा वापस

कर दो सागर हमें वापस
जैसा यह रहा सर्वदा।
प्रकृति, हमारी मां,
और हम सब का आशियां
गाएं एक सुर में सब हम
दे दो वापस, कर दो मुक्त धरा!

ताज़िमा शिन्जी

3 अगस्त, 1947 को हिरोशिमा में जन्म। वासेदा यूनीवर्सिटी, टोक्यो में दर्शन और शिक्षाशास्त्र का अध्ययन, फिर जर्मनी और भारत में दो साल शिक्षा ग्रहण। 1977 में टोक्यो में एशिया पैसीफिक कल्चरल सेंटर फॉर यूनेस्को (ACCU) से जुड़ने के बाद इन्होंने विविध प्रकार के साक्षरता एवं पुस्तक निर्माण कार्यों में हिस्सा लिया। ये 20 साल तक यहाँ विभाग के निदेशक पद पर रहे और 200 से अधिक साक्षरता एवं पुस्तक निर्माण कार्यशालाएं एशिया व प्रशान्त क्षेत्र में आयोजित कीं। 2001 में, इन्होंने टोक्यो में एक अन्तर्राष्ट्रीय स्वयंसेवी संस्था स्थापित की जिसका नाम है– इन्टरनेशनल सेंटर फॉर लिटकेसी एंड कल्चर (ICLC)। यह विकासशील देशों में साक्षरता व संस्कृति के विकास के लिये कार्यरत है। यह विशेषकर ग्रामीण निधनों तथा वंचित बच्चों के लिये काम करती है। ताज़िमा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त रचनात्मक लेखक हैं और इन्होंने बच्चों व वयस्कों के लिये कई पुस्तकें लिखी हैं। इनमें कुछ नाम है : द ओरिजिनल फेबल कलेक्शन : द डाइनोसॉर ऑफ द डेजर्ट, क्लाउड टेल्स और व्हेयर डज़ स्प्रिंग कम फ्रॉम? इनके अंग्रेजी रूप ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रैस द्वारा 1999 में प्रकाशित किये गए थे।

इनकी कहानियां 27 भाषाओं में अनुवाद की जा चुकी हैं और 19 देशों में प्रकाशित हुई हैं। जिनमें बांग्लादेश, चीन, भारत, ईरान, इंडोनेशिया, लाओस, मलेशिया, मंगोलिया, पाकिस्तान, श्रीलंका, सिंगापुर, थाईलैंड, वियतनाम तथा अन्य देश शामिल हैं। कुछ कहानियां सीडी के रूप में तथा टी वी ऐनीमेशन के रूप में भी परिवर्तित की गई हैं। 2001 में, ये बर्लिन, जर्मनी द्वारा पहले अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य उत्सव में तथा 2003 में छठे अफ्रीकी साहित्य उत्सव में एशिया के लेखक के रूप में आमंत्रित किये गए थे।

ये अब जेलों में बच्चों के लिये पुस्तकालयों की स्थापना, पाकिस्तान व भारत के बच्चों के लिये संयुक्त प्रकाशन कार्यक्रम के लिये तथा बर्मा में बुनियादी शिक्षा कार्यक्रमों के लिये इंटरनेशनल सेंटर फॉर लिटरेसी एंड कल्चर (ICLC) के जरिये 2001 से कार्यरत हैं।

इन्हें कोदांश अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार (1988) सांस्कृतिक प्रकाशन के लिये, एशिया पैसिफिक पब्लिशर्स एसोसियेशन (1996) का गोल्ड पुरस्कार तथा कई अन्य पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है।